وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ (سورۃ القمر)

अल्लाह का फ़रमान

"और हम ने कुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया, तो कोई है कि सोचे समझे?"



मुख़्तसर ख़ुलास-ए-कुरआन मजीद

आज हम ने तरावीह में क्या पढ़ा?

फलाहे आम ट्रस्ट

186, गौरीपाड़ा, ठाणे रोड के पास, भिवंडी – 421302

कुरआन-ए-करीम

फ़ितनों से बचाने वाली किताब

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली (रज़ि) से रिवायत है कि
अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने इरशाद फ़रमायाः
"ख़बरदार रहो! जल्द ही फ़ितनों का दरवाज़ा खुल्ने वाला है।"
मैं ने पूछा : "इस से बचाव किस तरह हो सकेगा?"
फ़रमाया : "फ़ितनों से बचाने वाली सिर्फ़ अल्लाह की किताब कुरआन मजीद है।"
ये वोह किताब है जिस में तुम से पहले के ज़माने की बातें हैं।
तुम्हारे बाद आने वाले ज़माने की ख़बरें हैं।
तुम्हारे दरमियान होने वाले इख़्तिलाफ़ात का हल भी इस में मौजूद है।
ये हक़ और बातिल और सहीह और ग़लत के दरमियान
फ़ैसला करने वाली किताब है, कोई हंसी मज़ाक़ नहीं।
जो सरकश उसे छोड़ेगा, अल्लाह उसे टुकड़े टुकड़े कर देगा।
जो इसे छोड़ कर किसी और चीज़ को हिदायत का ज़रिया बनाएगा,
अल्लाह उसे गुमराह कर देगा।
ये अल्लाह की मज़बूत रस्सी है .... ये हिकमतों से भरपूर याददहानी है।
यही बिलकुल सीधी राह है।
ये वोह किताब है जिस में लोगों की ख़्वाहिशात टेढ़ नहीं पैदा कर सकतीं।
न लोगों की ज़बाने इसे गुडमुड कर सकती हैं।
ये वोह किताब है जिससे फ़ायदा उठाने वालों का कभी जी नहीं भरता।
बार बार पढ़ने से इसके मज़ामीन (विषय) पुराने नहीं होते हैं।
इसके अजायबात कभी ख़त्म होने का नाम नहीं लेते।
यही वोह किताब है जिसको सुन्ते ही जिन्न फ़ौरन बोल उठेः
"हम ने एक अजीब पढ़ी जाने वाली चीज़ सनी है जो सहीह रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करती है,
तो हम इस पर ईमान ले आए।" (सूरह जिन्नः1,2)
जिस ने इसकी बात कही, सच कही .... जिस ने इस पर अमल किया अज्र का हक़दार हुआ।
जिस ने इस की बुनयाद पर फ़ैसला किया, इंसाफ़ किया।
जिसने इसकी तरफ़ लोगों को दावत दी, उसने सीधे रास्ते की तरफ़ दावत दी।
(जामे तिरमीज़ी वद्दारमी) (मआरिफुल हदीस जिल्द नं. 5, सफ़ाह नं. 72)



अल्लाह के नाम से जो बहुत महरबान और निहायत रहम करने वाला है

खुलासा-ए-तरावीह

अल्लाह का कलाम कुरआन मजीद माहे रमज़ान की एक बा बरकत रात ''शबे-कद्र'' में अल्लाह के आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर नाज़िल होना शुरू हुआ। इसका नुजूल ही आप सल्ल0 को नुबूवत अता किये जाने का एलान था। और इसकी आयात ही आप की 23 साला नबवी ज़िन्दगी में हर लम्हा और हर मरहला रहनुमाई करती रहीं।

ग़ारे हिरा में 'इक्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़' (पढ़िये अपने रब के नाम से, जिस ने पैदा किया) से लेकर 13 साल मक्के की आज़माइशों से पुर दावती जद्दोजहद में और हिजरत के बाद 10 साला मदनी ज़िंदगी की मारका आराई में 'यदखुलून फ़ी दीनिल्लाहे अफ़वाजा' (जब लोग फ़ौज दर फ़ौज इस दीन में दाख़िल होने लगे) तक..... यही वह मज़बूत रस्सी किताब-ए-इलाही है जिसका एक सिरा अल्लाह के पास रहा और दूसरा सिरा अल्लाह के रसूल सल्ल0 मज़बूती से थामे रहे और इस तरह हर लम्हा और हर मरहले में अल्लाह की रहनुमाई, मदद और सहारा आप और आप के सहाबा रज़िअल्लाहो अन्हुम को हासिल रहा।

यही वह किताब है जो रहती दुनिया तक तमाम इन्सानों के लिये हिदायत नामा और नसीहत है। 'हाज़ा बयानुल्लिन्नासे व हुदवं व मौइदतुल्लि मुत्तक़ीन' (ये बयान है तमाम इन्सानों के लिये और हिदायत और नसीहत है तक़वा इख्तियार करने वालों के लिये)। यही वह हयात बख़्श पैग़ाम है जिसे बाद के अदवार में सहाबा और ताबिईन नीज़ अस्लाफ़ ने चार दांगे आलम में अपनी ज़ुबान-व-क़लम और अपने अमल व किरदार से पहुंचाया।

आँ हुज़ूर सल्ल0 की आख़िरी वसियतों में एक यह हैं कि तुम दो चीज़ों को थामे रहो कभी गुमराह न होगे। (1) अल्लाह की किताब (2) मेरी सुन्नत। उम्मुल मोमिनीनी हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ि0 से आप के विसाल के बाद किसी ने पूछा कि आप के अख़्लाक़ और मामूलात कैसे थे, उम्मुल मोमिनीन ने जवाबन फ़रमाया, क्या तुम ने कुरआन नहीं पढ़ा यानी आप सल्ल0 मुजस्सम कुरआन थे। आप के अख़्लाक, इबादात, अतवार और मामूलात कुरआन का नमूना और इसकी अमली ताबीर थे। कोई काम, कोई माआमला, कोई मुआहिदा, कोई गुफ़्तुगू औरक कोई मसअला ऐसा नहीं था जो आप ने कुरआनी हिदायत के मुताबिक न बरता हो।

यही वह हिदायतनामा और मज़बूत रस्सी है जिसे थामने की हिदायत अल्लाह ने फ़रमाई और जिसकी वसीयत आप ने की है। 'वंअतसिमू बिहब्लिल्लाहि जमीअंव वला तफ़र्रक्क़ू' (सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और तफ़िरक़े में न पड़ो) मज़बूत पकड़ने और थामने का मतलब यही है कि हम उसे पढ़ें, समझें, उस पर अमल करें और इसे बन्दगाने ख़ुदा तक पहुंचायें और यही वह वाहिद ज़रिया है जिसकी मदद से इस उम्मत को इंतिशार व इफ़तिराक़ से न सिर्फ़ बचाया जा सकता है बल्कि मौजूदा ज़िल्लत-व-ख़्वारी और परेशान हाली से निकाला भी जा सकता है।

वह मुअज़्ज़ थे ज़माने में मुसलमां होकर और तुम ख़्वार हुए तारिके क़ुरआं होकर

जब से इस उम्मत ने क़ुरआन को (समझ कर पढ़ना और उस पर अमल करना) छोड़ दिया तब से यह ज़लील व ख़्वार हुई और मज़ीत होती जा रही है। आइये : आज से हम इस बात का अहद करें कि अल्लाह की इस किताब को मज़बूती से थामेंगे, इसे समझ कर पढ़ने और इस पर अमल करने का माहौल बनायेंगे। ख़ुद भी इस पर अमल करेंगे और दूसरे बन्दगाने ख़ुदा (बिरादराने वतन) तक इस को पहुँचायेंगे और अपनी नई नस्ल को इसी के मुताबिक़ परवान चढ़ायेंगे, उन्हें इसका हाफ़िज़ व मुहाफ़िज़ बनायेंगे।

बिरादराने मोहतरम आप जानते हैं कि अल्लाह के रसूल के पास जिबरईले अमीन (अलै0) हर साल रमज़ान में ख़ुसूसियत से तशरीफ़ लाते। वह आप को क़ुरआन सुनाते और आप उन्हें क़ुरआन सुनाते। इसी तरह आप ने उम्मत को क़ुरआन के सुनने और सुनाने का नज़्म किया और हमारे लिये तरावीह की नमाज़ का एहतिमाम फ़रमाया। जिसके ज़रिये से हम रमज़ान में इस किताब 'क़ुरआने हकीम' को हुफ़्फ़ाज़े कराम से मुकम्मल सुनते हैं। इस का अस्ल मक़सद यही है कि वह हिदायत नामा जिस पर हमें ज़िन्दगी भर अमल करना है साल में एक मर्तबा कमअज़कम पूरे तौर से हम दोहरा लें और यह दोहराना उसी वक़्त मुफ़ीद हो सकता है जब हम इसको समझने का भी एहतिमाम करे। इसी अज़ीम मक़सद के हुसूल के लिये ये एक छोटी सी कोशिश है कि जितना कुछ क़ुरआन रोज़ाना तरावीह में हम सुनें उसका मुख़्तसर तरीन ख़ुलासरा चन्द मिन्टों में हमारे सामने आ जाये। लिहाज़ा अब ये हमारी ज़िम्मेदारी है बल्कि फ़रीज़ा है कि बाद नमाज़े तरावीह चन्द मिनट रूक कर इस ख़ुलासे को सुनें और देखें कि हमारे रब ने हमारे लिये क्या हयातबख़्श पैग़ाम दिया है और वह कौन सी शाह कलीद है जो हमें दुनिया में इज़्ज़त व सरबुलन्दी अता करेगी और आख़िरत में फ़लाह व कामियाबी से हमकिनार करेगी।

अल्लाह तआला सही मायनों में हमें क़ुरआन पढ़ने, समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात

بسم الله الرحمن الرحيم

पहली तरावीह

आज की तरावीह में पहला सवा पारह पढ़ा गया। जो दूसरे पारे की चौथाई पर ख़त्म हुआ। यानी बक़रा की 176 वीं आयत पर। पहली सूरह फ़ातिहा कहलाती है। जिसे अल्हम्दो शरीफ़ भी कहते हैं। और यह सूरत नमाज़ की हर रकअत में भी पढ़ी जाती है। दरअसल यह एक दुआ है जो अल्लाह तआला ने हर उस इन्सान को सिखाई है जो उसकी किताब का मुताला शुरू कर रहा है, उसमें सबसे पहले अल्लाह की सिफ़ात खुसूसन तमाम जहानों के रब होने, सबसे ज़्यादा रहमान और रहीम होने और साथ ही साथ इन्साफ़ करने वाले की हैसियत से तारीफ़ की गई है और उसके अहसानों और नेमतों का शुक्रिया भी अदा किया गया है फिर अपनी बन्दगी और आजिज़ी का एतराफ़ करते हुए उससे ज़िन्दगी के मामलात में सीधे रास्ते की हिदायत तलब की गई है जो हमेशा से उसके इनाम याफ़्ता और माकूल बन्दों को हासिल रही है और जिससे सिर्फ़ वही लोग महरूम होते हैं जिन्होंने उसके रास्ते को छोड़ दिया है या उसकी कोई परवाह नहीं की है।

दूसरी सूरत बक़र: अलिफ़ लाम मीम से शुरू होती है, जिसमें दुआ का जवाब दिया गया है कि अल्लाह ने सीधा रास्ता बताने के लिए यह किताब उतार दी है। इसमें कोई शक व शुबह नहीं। फिर बताया कि अल्लाह के नज़दीक इंसानों की तीन क़िस्में हैं - एक वो जो इस किताब पर ईमान लाएं। और उसके अहकाम की इताअत करें यानी नमाज़ क़ाइम करें, अल्लाह के रास्ते में अपना माल ख़र्च करें, क़ुरआन और उससे पहले की किताबों पर ईमान लाएं और जो कुछ अल्लाह और उसके रसूल मोहम्मद (स.) बताएं उस पर भी ईमान लाएं ख़्वाह वो ज़ाहिरी हवास से जाना जा सके या न जाना जा सके। यानी जन्नत व दोज़ख़ मलाइका, आख़िरत और दूसरे अनदेखे (ग़ैबी) हक़ाइक़ जो इस किताब में बयान किए गए हों ये लोग मोमिन हैं और यही इस किताब से सही फ़ायदा उठा सकेंगे।

दूसरे वे है जो इस किताब का हठ-धरमी से इंकार करें, यह काफ़िर हैं। तीसरी क़िस्म के वे लोग हैं जो मुआशरती दबाव या दुनयावी फ़ायदों की ख़ातिर अपने को मुसलमान कहलाते हैं। मगर दिल से इस्लाम की क़द्रों को नहीं मानते बल्कि इस्लाम के बाग़ियों और मुनकिरों की तरफ़ झुकाव रखते हैं। इस तरह इस्लाम की राह में रूकावटों और हराम व नाजायज़ बातों से परहेज़ की बिना पर पहुंचने वाले ज़ाहिरी नुक़सानात से डर कर शक और शुब्हे में मुब्तिला हैं। यह दोनों गिरोह अपने को दोहरे फ़ायदे में समझते है, हांलाकि सरासर नुक़्सान में हैं, फिर तमाम इन्सानों को मुख़ातिब करके उन्हें क़ुरआन पर ईमान लाने की दावत दी गई और कहा गया कि अपने पैदा करने वाले और परवरिश करने वाले मालिक और आका की बंदगी इख़्तियार करो।

गुमराही का सबसे बड़ा सबब यह बताया कि जो लोग अल्लाह से किये हुए अहद को तोड़ देते हैं और जिन रिश्तों को बांधने का हुक्म खुदा ने दिया है उन्हें काटते हैं। और वह काम करते हैं जिनसे इन्सान नेकी के बजाए बुराई की तरफ चल पड़ते हैं ऐसे ही लोग हकीकत में फसादी हैं और इनका ठिकाना जहन्नुम है।

फिर दुनिया में इन्सान की अस्ल हैसियत को वाज़ेह किया गया कि अल्लाह तआला ने उसे अपने ख़लीफ़ा की हैसियत से पैदा किया है और उसको दुनिया की हर चीज़ के बारें में ज़रूरी इल्म, समझ और सलाहियत अता करके तमाम मख़्लूक़ात पर फ़ज़ीलत बख़्शी है। इस फ़ज़ीलत को फ़रिश्तों और उनके ज़रिए दूसरी मख़्लूक़ात ने तसलीम किया मगर शैतान ने तकब्बुर और घमण्ड में आकर उसकी फ़ज़ीलत और इताअत से इनकार कर दिया, इसलिए वह ख़ुदा के यहां धुतकारा गया। फिर आदम और हव्वा को जन्नत में रखने का ज़िक्र है ताकि मालूम हो कि अस्ल जगह आदम की औलाद की वही है। मगर शैतान के फ़रेब से आगाह करने के लिए अल्लाह तआला ने आदम और हव्वा को आज़माइश के लिए एक काम से मना किया। मगर दोनों शैतान के बहकावे पर अल्लाह के हुक्म को भुला बैठे

और वह काम कर डाला जिसे मना किया गया था। अल्लाह ने शैतान और आदम व हव्वा तीनों को दुनिया में भेज दिया और फ़रमाया कि अल्लाह की तरफ़ से बार बार उसके रसूल हिदायत लेकर आते रहेंगे, जो उस हिदायत पर चलेगा वही कामियाब होकर इसी जगह वापस आएगा और जो इन्कार करेगा वह शैतान के साथ जहन्नुम का ईंधन बना दिया जाऐगा।

इसके बाद इस वक्त के दो बड़े मज़हबी गिरोहों की तरफ़ तवज्जह दिलाई गई कि यहूदी और ईसाई, जिन्हें कुरआन से पहले तौरात और इंजील दी गई थी, उन्होंने (**शैतान की पैरवी में**) दुनिया के आरज़ी फ़ायदों और अपनी ख़्वाहिशाते-नफ़स को पूरा करने के लिए अल्लाह की हिदायत में कमी बेशी कर दी, किताबों में तब्दीली कर दी और अब मुहम्मद (स.) की रिसालत और कुरआन को अल्लाह की किताब मानने से इनकार करते हैं और कहते हैं कि चूंक?कि मोहम्मद (स.) बनी इस्माईल में पैदा हुए हैं इसलिए हम नहीं मानते। बनी इस्हाक़ में पैदा होते तो हम ज़रूर मान लेते। इस तरह इन लोगों ने खुदा के दीन को भी नस्ल का पाबंद बना दिया। इसलिए यह अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ हुए। फिर इनके दूसरे गुमराह करने वाले अक़ीदों का ज़िक्र किया और **मुसलमानों को तंबीह की कि वे इनकी जैसी हरकतें न करें वरना वे भी गुमराह हो जाऐंगे और कुरआन से कोई हिदायत न पा सकेंगे।**

हज़रत मुसा (अ.) और उनकी कौम के कई अहम वाक्यात बयान किए गए हैं कि किस तरह अल्लाह ने उन्हें अपने इनामात से नवाज़ा मगर वे बार-बार नाशुक्री, कज-बहसी और मुनाफ़िक़त का सुबूत देते रहे और अल्लाह के अहकाम को हीलों बहानों से टालते रहे। आख़िर अल्लाह ने उन्हें अज़ाब में गिरफ़्तार कर दिया।

तमाम इन्सानों की हिदायत के लिए अहले किताब (**यहूदी और ईसाई दोनों**) की एक अहम बीमारी का ज़िक्र किया गया कि ये एक दूसरे की निजात के मुन्कर बन गए हैं। यहूदी कहते हैं कि ईसाइयों की कोई बुनियाद नहीं और ईसाई कहते हैं कि यहूदियों की कोई बुनियाद नहीं। इसी तरह मुशरिक भी बे-सोचे समझे यही कहते हैं कि हम ही हक़ पर हैं और हमारे सिवा सब बातिल हैं, हालांकि नजात याफ़्ता और जन्नत का मुस्तहिक़ होने के लिए इस्माईल (अ.) की नस्ल में होना या यहूदी या ईसाई होना शर्त नहीं, बल्कि शर्त यह है कि आदमी एक तो **''मुस्लिम'' यानी खुदा का इताअत गुजार बने और दूसरे ''मोहसिन'' बने यानी नियत और अमल दोनों में खुलूस और अहसान की सिफत उसमें पाई जाए।**

दीन को आबाई नस्ल से वाबस्ता समझने की तरदीद करते हुए पूरे ज़ोर से फ़रमाया गया कि हज़रत इब्राहीम (अ0) और इस्माईल (अ0) दोनों ही खुदा के पैग़म्बर थे। और हज़रत इब्राहीम (अ0) को जो आला मुक़ाम मिला था वह नस्ल या विरासत की बिना पर नहीं मिला था बल्कि अल्लाह ने मुख़्तलिफ़ इम्तिहानों में उनको डाला था और जब वे इनमें कामयाब उतरे तो तमाम इन्सानों की इमामत और पेशवाई का मनसब इनआम के तौर पर अता फ़रमाया और आइन्दा के लिए भी यही क़ायदा मुक़र्रर किया। **यह मन्सब विरासत में नहीं बल्कि उसके लायक होने की शर्त के साथ मिलेगा।**

इस मौके पर इनके हाथों ''काबतुल्लाह'' की तामीर का ज़िक्र किया और बताया कि नबी करीम (स.) इस मौके पर उनकी मांगी हुई दुआ का मज़हर हैं और अब क़यामत तक इन्सानों की हिदायत तालीम और तज़किया के लिये भेजे गये हैं और इसी लिए अब बैतुल मुकद्दस की क़िब्ले की हैसियत ख़त्म की जाती है और काबतुल्लाह को क़िब्ला करार दिया जाता है।

आयत 152 से 140 तक कहा गया है कि तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद रखूंगा। और मेरा शुक्र अदा करो, कुफ़राने न्यामत न करो। ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद लो। अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मुरदा न कहो ऐसे लोग तो हकीक़त में ज़िन्दा हैं मगर तुम्हें उनकी ज़िन्दगी का शऊर नहीं होता और हम ज़रूर तुम्हें ख़ौफ़ो ख़तर, फ़ाक़ा कशी, जानो माल के नुक़सानात और आमदनियों में घाटे में मुब्तिला करके तुम्हारी आज़माइश करेंगे। इन हालात में जो लोग सब्र करें उन्हें खुशख़बरी दे दो ये वह लोग हैं जब इन्हें कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वह कहते हैं कि हम अल्लाह ही के है और अल्लाह ही की तरफ़ पलट कर हमें जाना है इन पर उनके रब की तरफ़ से बड़ी इनायात होंगी। उसी की रहमत उन पर साया करेगी और ऐसे ही लोग सीधे रास्ते पर हैं।

सफ़ा और मरवह के दर्मियान सई (दौड़ना) करने में कोई हर्ज नहीं कि यह हज के असली मनासिक में से है। ज़मानये जाहिलियत में जो मुशरिकीन किया करते थे (यानी सफ़ा पर असाफ़ और मरवह पर नायला के स्थान का तवाफ़) वह मनासिक हज में तहरीफ़ का नतीजा था, जो बरज़ा व रग़बत कोई भलाई का काम करेगा, अल्लाह उसकी क़द्र करेगा। वह हर चीज़ से बाख़बर है।

जो लोग हमारी नाज़िल की हुयी रौशन तालीमात और हिदायात को छुपाते हैं दरआं- हालांकि हम उन्हें सब इन्सानों की रहनुमाई के लिये अपनी किताब में बयान कर चुके हैं। यकीन जानों कि अल्लाह उन पर लानत करता है और तमाम लानत करने वाले भी उन पर लानत भेजते हैं। अलबत्ता जो इस रविश से बाज़ आ जायें और अपने तर्ज़े अमल की इस्लाह कर लें और जो कुछ छिपाते हैं उसे बयान करने लगें तो अल्लाह उनको माफ कर देगा। वह बड़ा दरगुज़र करने वाला और रहम करने वाला है।

इसके बाद चौथाई पारे के ख़त्म तक तौहीद का मज़मून बयान किया गया हैं जो दीन की अस्ल बुनियाद है यानी सिवाय अल्लाह के कोई उलूहियत और ख़ुदाई सिफ़ात नहीं रखता। वह वाहिद सारी कुव्वतों का मालिक और सारे खैर का सर-चश्मा है। और फिर कायनात बना कर कहीं किसी कोने में बैठ नहीं गया बल्कि इसका इन्तिज़ाम ख़ुद चला रहा है और जिस तरह सारी कायनात एक मुनज़्ज़मऔर मरबूत निज़ाम की ताबेअ है, इसी तरह <u>इन्सानों तक भेजा है और वह एक ही है जो ख़ुदा हर ज़माने के लिए एक किताब, एक रसूल और आदम की औलाद व तमाम इन्सानों के लिए एक ही निज़ामे फ़िक्र व अमल भेजता रहा है।</u>

इस तौहीद के मुकम्मल निज़ाम को जिसमें खाने-पीने से लेकर सुलह व जंग, मक़तूलों के किसास और मरने के बाद लोगों के विरसे की तक़सीम तक के अहकामात दिये गये हैं तसीलम करो। अल्लाह ने यह किताब हक़ के साथ उतारी है और जिन लोगों ने इस किताब के मामले में इख़्तिलाफ़ किया वह मुख़ालिफ़त में बहुत दूर निकल गये।

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।
❖ अल्लाह तआला हम सबको कुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।
❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



दूसरी तरावीह

आज दूसरे पारे की चौथाई से तीसरे पारे के आधे तक तिलावत की गई। कल की तरावीह में पढ़ा जाने वाला हिस्सा तौहीद के मज़मून पर ख़त्म हुआ था। आज तौहीद के ज़रूरी तक़ाज़ों और इनसानी ज़िन्दगी में इनके तमाम नताइज को वाज़ेह करने के लिए बताया गया है कि ख़ुदा के साथ वफ़ादारी और नेकी का हक़ मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ रूख करके नमाज़ पढ़ लेने से अदा नहीं होगा जैसा कि अहले किताब ने समझ लिया है। बल्कि ईमानियात यानी अकाइद की दुरूस्तगी के साथ अल्लाह के रास्ते में रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, मुसाफिरों, मकरूजों और कैदियों की मदद करना नमाज कायम करना, और जकात देना, आपस के मुआहदों को पूरा करना और मुसीबत के वक्त तंगी तुरशी, दुख बीमारी में जब ख़ुदा के दुश्मन हमला आवर हों तो सब्र व इस्तकामत से काम लोना यह हैं अस्ल दीन सच्चाई और तकवा - जो ऐसा नमूना क़ाइम करें वे सही मायनों में दीनदार सच्चे और मुत्तक़ी हैं। फिर यह बताया कि एक दूसरे की जान व माल का एहतराम करना भी नेकी और तक़वा का हिस्सा है। चुनांचे कातिल मुआशरे का सबसे बड़ा दुश्मन है। और उसका क़िसास सब के ज़िम्मे है। इसी में मुआशरे की ज़िन्दगी है। इसी तरह कमजोरों का हक दबाना और ताकतपरों का ख्याल रखना ज़ुल्म है। बल्कि कमज़ोरों को हक़ देना चाहिए और दिलवाना चाहिए। विरसे के मामलात और वसीयत को पूरा करना चाहिए। इसके बाद रोज़ों की फ़ज़ीलत का बयान हुआ ओर उसके अहकाम बताये गये। यहां रोज़ों का ज़िक्र इबादत, नमाज और इनफाक के साथ नहीं बल्कि मामलात के साथ किया गया। इससे पता चलता है कि रोजे अस्ल में अहले ईमान को अपनी जिन्दगी के मामलात इन्साफ, अहसान और तकवा के साथ अन्जाम देने की तरबियत देते हैं और आदमी को लालच, बुख्ल और इसी तरह की दूसरी बुराईयों से बचना सिखाते हैं। इसी मौक़े पर रिश्वत की बुराई बयान की गयी है और बताया गया कि हुक्काम को रिश्वत की चाट सबसे पहले मुआशरे के लोग ही लगाते हैं। इस लिए इन्हें ख़ुद पर काबू पाना चाहिए फिर हज और जिहाद का ज़िक्र किया क्योंकि रोज़ा सब्र सिखाता है और हज और जिहाद भी सब्र की आला क़िस्मे हैं।

बाज़ लोग हज को सिर्फ़ अपनी दुनिया बनाने का ज़रिया बना लेते हैं और आख़िरत की तलब से उनके दिल ख़ाली होते हैं। इसलिए फिर मुनाफ़िक़त का ज़िक्र किया कि जो लोग दुनिया के इतने तालिब हों कि हज की दुआओं में भी अपनी दुनिया ही बनाने की कोशिश करें, वे मुनाफ़िक़ ही हो सकते हैं। यह मुनाफ़िक़ ईमान और इस्लाम के ख़ूब दावे करते हैं। ख़ुद को इस्लाम और मिल्लत का ख़ैर-ख़्वाह बताते हैं, मगर बदतरीन दुश्मने हक़ होते हैं। निशानी यह है कि जब यह ज़िन्दगी के मामलात अंजाम देते हैं या किसी ज़िम्मेदारी पर मुक़र्रर किये जाते हैं तो अपने आमाल से मुआशरे में फ़साद बरपा करते हैं। लोगों की हक़तल्फ़ियां करते हैं, और जब उन्हें टोका जाता है तो हठधरमी के साथ ज़्यादती पर जमे रहते हैं। इनके मुकाबले में सच्चे एहले-ईमान अपने नफस को ख़ुदा के हाथ बेच देते हैं, और उसी की ख़ुशनूदी हासिल करने वाले काम अन्जाम देते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम भी मुनाफ़िकों की तरह न हो जाओ बल्कि इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ और कोई हिस्सा भी अपनी जिन्दगी का इससे बाहर न रखो तुम्हारा अज़ली दुश्मन शैतान तुम्हारी ताक में है इससे चौकन्ने होकर ज़िन्दगी गुज़ारो, कहीं वह तुम्हें बहकाने में कामयाब न हो जाए। इस मौक़े पर शराब और जुए की मुमानिअत की गई और बताया गया कि अगरचे इनमे बाज़ फ़ायदे भी हैं, मगर इनके नुक़सानात जो मुआशरे को पहुंचते हैं, वह इनके फ़ायदों से ज़्यादा हैं। इस तरह शरीअत का मिज़ाज बताया गया कि अगर किसी काम मे नफ़ा से नुक़सान का पहलू (ख़ुसूसन इख़्लाक़ी लिहाज़) से ज़्यादा हो तो वह शरीअत में ममनूअ है।

लोगों ने रसूले करीम (स.) से पूछा कि अल्लाह के रास्ते में कितना ख़र्च करें? <u>जवाब दिया गया कि अपनी और बच्चों की जरूरत से ज्यादा जो भी बच जाए वह सब ख़ुदा का है और उसी की राह में ख़र्च कर देना चाहिए।</u> फिर शादी ब्याह की तरफ़ तवज्जह दिलाई कि <u>रिश्तेदारी कायम करने में दीन को अस्ल मुकाम मिलना चाहिए।</u> ख़्वाह दीनदार औरत या मर्द (ग़ैर दीनदार से) मरतबा यानी स्टेटस में कम हो। आयत 221 में साफ़ तौर पर कहा गया है कि बैनुल मज़ाहिब शादियों की गुन्जाइश नहीं। मुशरिक औरतों से निकाह हराम है। ख़्वाह वह तुम्हें कितनी ही पसन्द हों। मोमिनह बांदी मुशरिक आज़ाद से बेहतर है। इसी तरह मुशरिकों से निकाह करना मना है। ख़्वाह वह तुम्हें कितना ही पसन्द हो। मोमिन गुलाम मुशरिक आज़ाद से बेहतर है कि उनका तरज़े अमल जहन्नुम की तरफ़ ले जाता है और मुसलमान का अमल जन्नत और मग़फ़िरत की तरफ़ बुलाता है।

औरतों की नापाकी की हालत के बारे में लोग पूछते हैं आप उनसे कह दीजिये कि वह एक गन्दगी की हालत है इस में औरतों से अलग रहो और उनके क़रीब न जाओ जब तक कि वह पाक साफ़ न हो जायें। फिर जब वह पाक हो जायें तों उनके पास जाओ जैसा कि अल्लाह ने तुम को इजाज़त दी है।

ज़मानए-जाहिलियत में लोग औरतों से नाराज़ होते तो उनके पास न जाने की क़सम खा लेते ऐसे वक़्त में औरतें बड़ी उलझन महसूस करतीं कि यह कैफ़ियत न तलाक़ की है और न निकाह के तक़ाज़े पूरे होते हैं। अल्लाह तआला ने इसे महदूद कर दिया और फ़रमाया कि जो लोग अपनी औरतों से ताल्लुक़ न रखने की क़सम खा बैठें उनके लिये चार महीने की मोहलत है अगर उन्होंने रूजू कर लिया तो अल्लाह मआफ़ करने वाला और रहीम है कि वह रूजू करके औरतों के हुकूक़ बराबर अदा करें और अगर उन्होंने तलाक़ की ठान ली है तो साफ़ साफ़ बता दें कि औरत इद्दत गुज़ार कर आज़ाद हो जाये।

तलाक़ के ताल्लुक़ से अल्लाह ने इस सूरह में वाज़ेह एहकामात दिये हैं जिन का खुलासा यह है कि (1) दौराने तलाक औरत शौहर के घर क़याम करे। बाहर न लिकले न शौहर उसे निकाले इल्ला यह कि वह बेहयाई की मुरतकिब हुई हो। (2) शौहर को चाहिए कि पाकी की हालत में सिर्फ़ एक तलाक़ दे। दौरान इद्दत वह रूजू कर सकता है। इद्दत गुज़र जाने के बाद वह जुदा हो जायेगी अलबत्तह निकाह करके उसे दोबारा रखा जा सकता है। हलालह की ज़रूरत नहीं। (3) यही एहकामात उस वक़्त भी होंगे जब वह दूसरे माह दूसरी तलाक़ दे यानी दौराने इद्दत रूजू कर सकता है। इद्दत गुज़र जाने के बाद अगर रूजू करता है तो उसे उसी औरत के साथ दोबारा निकाह करना पड़ेगा। हलालह की ज़ुरूरत नहीं। इन दो तलाक़ों के बाद शौहर को चाहिये कि या तो औरत को भले तरीक़े से रखले, रूजू कर ले और अगर शौहर अपनी बीवी को नहीं रखना चाहता तो उसे दे दिला कर इज़्ज़त के साथ रूख़्सत करे। (4) तीसरी बार तलाक़ देने के बाद रूजू का हक़ ख़त्म हो जाता है। अब वह औरत उस शौहर के लिये हलाल नहीं जब तक कि वह किसी और मर्द से शादी न करे। उसके इजदिवाजी हुकूक अदा करे फिर वह अपनी मर्ज़ी से उसे तलाक़ दे। तब वह इद्दत गुज़ारने के बाद पहले शौहर से निकाह कर सकती है। इसे हलालह कहते हैं। मगर पहले से तय शुदा हलालह शरायी तौर पर जायज़ नहीं। उसे हदीस में किराये का सांड कहा गया है और हलालह करने और कराने वाले दोनों पर लानत की गयी है। (5) मियां-बीवी में निबाह न हो रहा हो और शौहर तलाक़ न दे रहा हो तो औरत को खुला का हक़ है कि वह शौहर को कुछ दे दिलाकर छुटकारा ले ले। अलबत्तह शौहर की ग़ैरत के मनाफ़ी है कि वह औरत से महर की रक़म से ज़्यादा का मुतालबा करे। (6) औरत के लिये यह जायज़ नहीं कि वह अपने हमल को छुपाये। तलाक़ के बाद अगर वह हामिला है तो उसे बच्चा पैदा होने तक इद्दत गुज़ारनी होगी। (7) औलाद शौहर की होगी। उसके जुमलह इख़राजात शौहर को अदा करने होंगे। बच्चा अगर दूध पीता है तो मुद्दत रिज़ाअत दो साल है। हक़ परवरिश मां का है। बच्चे के समझदार होने तक मां पालेगी और शौहर ख़र्च उठायेगा। शौहर के लिये जायज़ नहीं कि बच्चे को मां से अलग कर दे। ख़ास तौर पर जब कि वह शीर ख़्वार हो। (8) इद्दत की मुद्दत तीन बार हैज़ का आना और पाक होना है। (9) जिन औरतों के शौहर का इन्तिक़ाल हो जाये उनकी इद्दत चार माह दस दिन है। उस दौरान उन्हें बनाव सिंघार नहीं करना चाहिये। (10) मुतल्लक़ह औरत दौराने इद्दत शौहर के घर में रहेगी और ज़ेबो ज़ीनत करेगी ताकि शौहर रूजू पर आमादह हो (11) मुतल्लक़ह

औरत की इद्दत पूरी होने लगे तो शौहर संजीदगी से फ़ैसला कर ले कि वह भले तरीक़े से रूख़्सत कर देगा या फिर वह रूजू करना चाहता है तो खुलूसे दिल से रूजू करके औरत के साथ बाइज़्ज़त ज़िंदगी गुज़ारेगा। औरत को सताने के लिये रूज करना ज़ुल्म है। (12) इद्दत के बाद जब जुदा हो जाये और कहीं और निकाह करना चाहे तो शौहर के लिए जायज़ नहीं कि वह रूकावट बने उसे सताये या बदनाम करे। (13) इन तमाम एहकामात में अल्लाह की हुदूद यही हैं जो अल्लाह की इन हुदूद की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करेगा ज़ालिम शुमार किया जायेगा। एक मुसलमान के लिए जायज़ नहीं कि इन एहकामात की ख़िलाफ़वर्ज़ी करके अल्लाह की आयात का मज़ाक़ उड़ाये।

फिर औरतों की पाकी-नापाकी और इनसे सुलूक के मसले बताए। इसी तरह निकाह और तलाक़ के अहकाम बताते हुए कहा कि यह सब अल्लाह की मुक़र्रर करदह हदें हैं, इनकी हिफ़ाज़त ईमान का तक़ाज़ा है। इसी तरह बच्चों को दूध पिलाने और पिलवाने के अहकाम, शौहर के मरने की इद्दत और निकाह करते वक़्त महर के मसाइल का ज़िक्र किया गया और इन तमाम मुआशरती अहकाम का इख़्तिमाम इस पर किया गया कि नमाज़ की **हिफाजत करो यहां तक कि सफर और ख़तरे की हालत में भी कसर नमाज को न छोडो। दर अस्ल नमाज ही आदमी में ख़ुदा की कामिल इताअत और ख़ुलूस व वफादारी के जज़्बे की परवरिश करती है।**

यहूदियों की तारीख़ के एक वाक़्ये का ज़िक्र करते हुए बताया कि ख़ुदा की याद से ग़फ़लत ने इन्हें बुज़दिल बना दिया था और वे एक मौक़े पर बहुत बड़ी तादाद में शरीक होने के बावजूद अपने दुश्मनो से डर कर भाग खड़े हुए और इस तरह उन्होंने अपनी अख़लाक़ी व सियासी मौत ख़रीद ली। गोया मुसलमानों को बताया कि मक्का से मदीना **हिजरत दुश्मनों के ख़ौफ से नहीं बल्कि इस्लाम को बचाने और फिर फैलाने के लिए है,** चुनांचे यही काम सहाबा-ए-किराम ने अंजाम दिया। इस तरह क़यामत तक के मुसलमानों को रास्ता दिखाया कि उन्हें भी कभी हिजरत करनी पड़े तो **इस्लाम को कायम करने का नसबुलऐन आंखों से ओझल नहीं होना चाहिये।** साथ ही तफ़्सील से बनी इसराईल की एक जंग का किस्सा भी बयान किया जो तालूत और जालूत में हुई थी। इस तरह मुसलमानों को बताया कि उन्हें भी इन्हीं मरहलों से गुज़रना पड़ेगा। **ख़ुदा के यहां काम आने वाली अस्ल चीज उस की राह में जान और माल की कुरबानी है। अल्लाह ने अपनी किताब** और अपने रसूल (स.) के ज़रिये ख़ुदा परस्ती की राह बता दी है अब जिस का जी चाहे वह **गैर अल्लाह से कट कर अल्लाह की रस्सी को मजबूती से थाम ले** और जिसका जी चाहे वह अपने गढ़े हुए ग़लत सहारों को पकड़े रहे और अपनी आक़िबत तबाह कर ले। **फिर सूद को हराम करने का एलान किया** क्योंकि सूदी निज़ाम लोगों में दुनिया परस्ती और माल की पूजा का जज़्बा पैदा करता है। पस अगर **मुआशरे में नेकियां फैलाना ख़ुदा-तरसी और बंदों की इमदाद का निजाम लाना है तो सूदी निजाम ख़त्म करना होगा।**

सूरह बकरह के आख़ीर में यह हिदायत दी गयी है कि जब मुसलमान आपस में लेन देन करें और कोई मुद्दत मुतअय्यन की जाये तो यह लेन देन तहरीरी होना चाहिये और इस तहरीर पर दो गवाहों के दस्तख़त भी होना चाहिये ताकि मामलात साफ़ रहें। सूरत को इस मशहूर दुआ पर ख़त्म किया जो नबी-ए-करीम (स.) को मैराज शरीफ़ में सिखाई गई थी। इसमें मग़फिरत के साथ काफ़िरों के मुक़ाबले में मदद फ़रमाने की दुआ भी की गई है।

इसके बाद तीसरी सूरत आले-इमरान के दो रूकूअ हैं। इनमें बताया गया है कि यहूद व नसारा ने अल्लाह की तरफ़ से आई हुई किताबों में इख़्तिलाफ़ात पैदा कर के अस्ल हक़ीक़त को गुम कर दिया। अब अल्लाह ने **इसी गुमशुदा हकीकत को वाजेह करने के लिए कुरआन उतारा है** ताकि लोग इख़्तिलाफ़ात की भूल भुलैयों से निकल कर हिदायत की शाहराह पर आ जाएं। **अब जो लोग इस किताब का इन्कार कर देंगे उनके लिए अल्लाह के यहां सख़्त अज़ाब है।**

फिर अल्लाह ने उन रूकावटों का ज़िक्र किया कि जो कुरआन और इसके मानने वालों के दरम्यान शैतान पैदा करता है यानी दुनिया की मरग़ूबात, औरतें, बेटे, सोने चांदी के ढेर, निशान ज़दा घोड़े, हथियार, चौपाए और खेती। मगर ये सब दुनिया की आरज़ी चीज़ें हैं और, **अल्लाह के पास उनके लिए इससे भी कहीं बेहतर सामान और ठिकाना है। जो लोग तकवा इख़्तियार करेंगे इनके लिए जन्नत और ख़ुदा की ख़ुशनूदी है। ये वो हैं जो सब्र करने वाले सच्चे, फरमाबरदार राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले और सुबह के तडके में अपने रब से मगफिरत की दुआए**

करने वाले हैं। रह गए काफ़िर तो यह दुनिया का माल व मताअ औलाद और शान-ओ-शौकत, ये सब उन्हें ख़ुदा की पकड़ से नहीं बांध सकेंगे। उनका वही हाल होगा जो उनसे पहले फ़िरऔन और उसकी क़ौम का हुआ। इस हक़ीक़त का सुबूत तुम्हें बदर के मैदान में मिल चुका है कि हक़ का परचम उठाने वाले 313 थे और उनके मुकाबले में काफ़िर हज़ार से ज़्यादा थे **मगर अल्लाह ने फ़रिश्तों से एहले ईमान की मदद फ़रमाई थी।** इस वाक्ये में समझदारों के लिए बड़ी निशानियां हैं।

❖ **आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।**
❖ **अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।**
❖ **अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।**

''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



दूसरी तरावीह

आज दूसरे पारे की चौथाई से तीसरे पारे के आधे तक तिलावत की गई। कल की तरावीह में पढ़ा जाने वाला हिस्सा तौहीद के मज़मून पर ख़त्म हुआ था। आज तौहीद के ज़रूरी तक़ाज़ों और इनसानी ज़िन्दगी में इनके तमाम नताइज को वाज़ेह करने के लिए बताया गया है कि ख़ुदा के साथ वफ़ादारी और नेकी का हक़ मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ रूख़ करके नमाज़ पढ़ लेने से अदा नहीं होगा जैसा कि अहले किताब ने समझ लिया है। बल्कि ईमानियात यानी अकाइद की दुरूस्तगी के साथ अल्लाह के रास्ते में रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, मुसाफिरों, मकरूजों और कैदियों की मदद करना नमाज कायम करना, और जकात देना, आपस के मुआहदों को पूरा करना और मुसीबत के वक्त तंगी तुरशी, दुख बीमारी में जब ख़ुदा के दुश्मन हमला आवर हों तो सब्र व इस्तकामत से काम लोना यह है अस्ल दीन सच्चाई और तकवा - जो ऐसा नमूना क़ाइम करें वे सही मायनों में दीनदार सच्चे और मुत्तक़ी हैं। फिर यह बताया कि एक दूसरे की जान व माल का एहतराम करना भी नेकी और तक़वा का हिस्सा है। चुनांचे कातिल मुआशरे का सबसे बड़ा दुश्मन है। और उसका क़िसास सब के ज़िम्मे है। इसी में मुआशरे की ज़िन्दगी है। इसी तरह कमजोरों का हक दबाना और ताकतपरों का ख्याल रखना ज़ुल्म है। बल्कि कमज़ोरों को हक़ देना चाहिए और दिलवाना चाहिए। विरसे के मामलात और वसीयत को पूरा करना चाहिए। इसके बाद रोज़ों की फ़ज़ीलत का बयान हुआ ओर उसके अहकाम बताये गये। यहां रोज़ों का ज़िक्र इबादत, नमाज और इनफाक के साथ नहीं बल्कि मामलात के साथ किया गया। इससे पता चलता है कि रोजे अस्ल में अहले ईमान को अपनी जिन्दगी के मामलात इन्साफ, अहसान और तकवा के साथ अन्जाम देने की तरबियत देते हैं और आदमी को लालच, बुख्ल और इसी तरह की दूसरी बुराईयों से बचना सिखाते हैं। इसी मौक़े पर रिश्वत की बुराई बयान की गयी है और बताया गया कि हुक्काम को रिश्वत की चाट सबसे पहले मुआशरे के लोग ही लगाते हैं। इस लिए इन्हें ख़ुद पर काबू पाना चाहिए फिर हज और जिहाद का ज़िक्र किया क्योंकि रोज़ा सब्र सिखवाता है और हज और जिहाद भी सब्र की आला क़िस्मे हैं।

बाज़ लोग हज़ को सिर्फ़ अपनी दुनिया बनाने का ज़रिया बना लेते हैं और आख़िरत की तलब से उनके दिल ख़ाली होते हैं। इसलिए फिर मुनाफ़िक़त का ज़िक्र किया कि जो लोग दुनिया के इतने तालिब हों कि हज की दुआओं में भी अपनी दुनिया ही बनाने की कोशिश करें, वे मुनाफ़िक़ ही हो सकते हैं। यह मुनाफ़िक़ ईमान और इस्लाम के ख़ूब दावे करते हैं। ख़ुद को इस्लाम और मिल्लत का ख़ैर-ख़्वाह बताते हैं, मगर बदतरीन दुश्मने हक़ होते हैं। निशानी यह है कि जब यह ज़िन्दगी के मामलात अंजाम देते हैं या किसी ज़िम्मेदारी पर मुक़र्रर किये जाते हैं तो अपने आमाल से मुआशरे में फ़साद बरपा करते हैं। लोगों की हक़तल्फ़ियां करते हैं, और जब उन्हें टोका जाता है तो हठधरमी के साथ ज़्यादती पर जमे रहते हैं। इनके मुकाबले में सच्चे एहले-ईमान अपने नफस को ख़ुदा के हाथ बेच देते हैं, और उसी की ख़ुशनूदी हासिल करने वाले काम अन्जाम देते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम भी मुनाफ़िक़ों की तरह न हो जाओ बल्कि इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ और कोई हिस्सा भी अपनी जिन्दगी का इससे बाहर न रखो तुम्हारा अज़ली दुश्मन शैतान तुम्हारी ताक में है इससे चौकन्ने होकर ज़िन्दगी गुज़ारो, कहीं वह तुम्हें बहकाने में कामयाब न हो जाए। इस मौक़े पर शराब और जुए की मुमानिअत की गई और बताया गया कि अगरचे इनमे बाज़ फ़ायदे भी हैं, मगर इनके नुक़सानात जो मुआशरे को पहुंचते हैं, वह इनके फ़ायदों से ज़्यादा हैं। इस तरह शरीअत का मिज़ाज बताया गया कि अगर किसी काम मे नफ़ा से नुक़सान का पहलू (ख़ुसूसन इख़लाक़ी लिहाज़) से ज़्यादा हो तो वह शरीअत में ममनूअ है।

लोगों ने रसूले करीम (स.) से पूछा कि अल्लाह के रास्ते में कितना ख़र्च करें? जवाब दिया गया कि अपनी और बच्चों की ज़रूरत से ज़्यादा जो भी बच जाए वह सब ख़ुदा का है और उसी की राह में ख़र्च कर देना चाहिए। फिर शादी ब्याह की तरफ़ तवज्जह दिलाई कि रिश्तेदारी कायम करने में दीन को अस्ल मुकाम मिलना चाहिए। ख़्वाह दीनदार औरत या मर्द (ग़ैर दीनदार से) मरतबा यानी स्टेटस में कम हो। आयत 221 में साफ़ तौर पर कहा गया है कि बैनुल मज़ाहिब शादियों की गुन्जाइश नहीं। मुशरिक औरतों से निकाह हराम है। ख़्वाह वह तुम्हें कितनी ही पसन्द हों। मोमिनह बांदी मुशरिक आज़ाद से बेहतर है। इसी तरह मुशरिकों से निकाह करना मना है। ख़्वाह वह तुम्हें कितना ही पसन्द हो। मोमिन गुलाम मुशरिक आज़ाद से बेहतर है कि उनका तरज़े अमल जहन्नुम की तरफ़ ले जाता है और मुसलमान का अमल जन्नत और मग़फ़िरत की तरफ़ बुलाता है।

औरतों की नापाकी की हालत के बारे में लोग पूछते हैं आप उनसे कह दीजिये कि वह एक गन्दगी की हालत है इस में औरतों से अलग रहो और उनके क़रीब न जाओ जब तक कि वह पाक साफ़ न हो जायें। फिर जब वह पाक हो जायें तो उनके पास जाओ जैसा कि अल्लाह ने तुम को इजाज़त दी है।

ज़मानए-जाहिलियत में लोग औरतों से नाराज़ होते तो उनके पास न जाने की क़सम खा लेते ऐसे वक़्त में औरतें बड़ी उलझन महसूस करतीं कि यह कैफ़ियत न तलाक़ की है और न निकाह के तक़ाज़े पूरे होते हैं। अल्लाह तआला ने इसे महदूद कर दिया और फ़रमाया कि जो लोग अपनी औरतों से ताल्लुक़ न रखने की क़सम खा बैठें उनके लिये चार महीने की मोहलत है अगर उन्होंने रूजू कर लिया तो अल्लाह मआफ़ करने वाला और रहीम है कि वह रूजू करके औरतों के हुकूक़ बराबर अदा करें और अगर उन्होंने तलाक़ की ठान ली है तो साफ़ साफ़ बता दें कि औरत इद्दत गुज़ार कर आज़ाद हो जाये।

तलाक़ के ताल्लुक़ से अल्लाह ने इस सूरह में वाज़ेह एहकामात दिये हैं जिन का खुलासा यह है कि (1) दौराने तलाक़ औरत शौहर के घर क़याम करे। बाहर न निकले न शौहर उसे निकाले इल्ला यह कि वह बेहयाई की मुरतकिब हुई हो। (2) शौहर को चाहिए कि पाकी की हालत में सिर्फ़ एक तलाक़ दे। दौरान इद्दत वह रूजू कर सकता है। इद्दत गुज़र जाने के बाद वह जुदा हो जायेगी अलबत्तह निकाह करके उसे दोबारा रखा जा सकता है। हलालह की ज़रूरत नहीं। (3) यही एहकामात उस वक़्त भी होंगे जब वह दूसरे माह दूसरी तलाक़ दे यानी दौराने इद्दत रूजू कर सकता है। इद्दत गुज़र जाने के बाद अगर रूजू करता है तो उसे उसी औरत के साथ दोबारा निकाह करना पड़ेगा। हलालह की ज़ुरूरत नहीं। इन दो तलाक़ों के बाद शौहर को चाहिये कि या तो औरत को भले तरीक़े से रखले, रूजू कर ले और अगर शौहर अपनी बीवी को नहीं रखना चाहता तो उसे दे दिला कर इज्ज़त के साथ रूख़्सत करे। (4) तीसरी बार तलाक़ देने के बाद रूजू का हक़ ख़त्म हो जाता है। अब वह औरत उस शौहर के लिये हलाल नहीं जब तक कि वह किसी और मर्द से शादी न करे। उसके इजदिवाजी हुकूक़ अदा करे फिर वह अपनी मर्ज़ी से उसे तलाक़ दे। तब वह इद्दत गुज़ारने के बाद पहले शौहर से निकाह कर सकती है। इसे हलालह कहते हैं। मगर पहले से तय शुदा हलालह शरायी तौर पर जायज़ नहीं। उसे हदीस में किराये का सांड कहा गया है और हलालह करने और कराने वाले दोनों पर लानत की गयी है। (5) मियां-बीवी में निबाह न हो रहा हो और शौहर तलाक़ न दे रहा हो तो औरत को खुला का हक़ है कि वह शौहर को कुछ दे दिलाकर छुटकारा ले ले। अलबत्तह शौहर की ग़ैरत के मनाफ़ी है कि वह औरत से महर की रक़म से ज़्यादा का मुतालबा करे। (6) औरत के लिये यह जायज़ नहीं कि वह अपने हमल को छुपाये। तलाक़ के बाद अगर वह हामिला है तो उसे बच्चा पैदा होने तक इद्दत गुज़ारनी होगी। (7) औलाद शौहर की होगी। उसके जुमलह इख़राजात शौहर को अदा करने होंगे। बच्चा अगर दूध पीता है तो मुद्दत रिज़ाअत दो साल है। हक़ परवरिश मां का है। बच्चे के समझदार होने तक मां पालेगी और शौहर ख़र्च उठायेगा। शौहर के लिये जायज़ नहीं कि बच्चे को मां से अलग कर दे। ख़ास तौर पर जब कि वह शीर ख़्वार हो। (8) इद्दत की मुद्दत तीन बार हैज़ का आना और पाक होना है। (9) जिन औरतों के शौहर का इन्तिक़ाल हो जाये उनकी इद्दत चार माह दस दिन है। उस दौरान उन्हें बनाव सिंघार नहीं करना चाहिये। (10) मुतल्लक़ह औरत दौराने इद्दत शौहर के घर में रहेगी और ज़ेबो ज़ीनत करेगी ताकि शौहर रूजू पर आमादह हो (11) मुतल्लक़ह

औरत की इद्दत पूरी होने लगे तो शौहर संजीदगी से फ़ैसला कर ले कि वह भले तरीक़े से रूख्सत कर देगा या फिर वह रूजू करना चाहता है तो खुलूसे दिल से रूजू करके औरत के साथ बाइज़्ज़त ज़िंदगी गुज़ारेगा। औरत को सताने के लिये रूज करना ज़ुल्म है। (12) इद्दत के बाद जब जुदा हो जाये और कहीं और निकाह करना चाहे तो शौहर के लिए जायज़ नहीं कि वह रूकावट बने उसे सताये या बदनाम करे। (13) इन तमाम एहकामात में अल्लाह की हुदूद यही हैं जो अल्लाह की इन हुदूद की ख़िलाफ़ वर्जी करेगा ज़ालिम शुमार किया जायेगा। एक मुसलमान के लिए जायज़ नहीं कि इन एहकामात की ख़िलाफ़वर्जी करके अल्लाह की आयात का मज़ाक़ उड़ाये।

फिर औरतों की पाकी-नापाकी और इनसे सुलूक के मसले बताए। इसी तरह निकाह और तलाक़ के अहकाम बताते हुए कहा कि यह सब अल्लाह की मुक़र्रर करदह हदें हैं, इनकी हिफ़ाज़त ईमान का तक़ाज़ा है। इसी तरह बच्चों को दूध पिलाने और पिलवाने के अहकाम, शौहर के मरने की इद्दत और निकाह करते वक्त महर के मसाइल का ज़िक्र किया गया और इन तमाम मुआशरती अहकाम का इख़्तिमाम इस पर किया गया कि नमाज़ की **हिफाजत करो यहां तक कि सफर और ख़तरे की हालत में भी कसर नमाज को न छोडो। दर अस्ल नमाज ही आदमी में ख़ुदा की कामिल इताअत और ख़ुलूस व वफादारी के जज़्बे की परवरिश करती है।**

यहूदियों की तारीख़ के एक वाक़्ये का ज़िक्र करते हुए बताया कि ख़ुदा की याद से ग़फ़लत ने इन्हें बुज़दिल बना दिया था और वे एक मौक़े पर बहुत बड़ी तादाद में शरीक होने के बावजूद अपने दुश्मनो से डर कर भाग खड़े हुए और इस तरह उन्होंने अपनी अख़लाक़ी व सियासी मौत ख़रीद ली। गोया मुसलमानों को बताया कि मक्का से मदीना **हिजरत दुश्मनों के ख़ौफ से नहीं बल्कि इस्लाम को बचाने और फिर फैलाने के लिए है,** चुनांचे यही काम सहाबा-ए-किराम ने अंजाम दिया। इस तरह क़यामत तक के मुसलमानों को रास्ता दिखाया कि उन्हें भी कभी हिजरत करनी पड़े तो **इस्लाम को कायम करने का नसबुलऐन आंखों से ओझल नहीं होना चाहिये।** साथ ही तफ़्सील से बनी इसराईल की एक जंग का किस्सा भी बयान किया जो तालूत और जालूत में हुई थी। इस तरह मुसलमानों को बताया कि उन्हें भी इन्हीं मरहलों से गुज़रना पड़ेगा। **ख़ुदा के यहां काम आने वाली अस्ल चीज उस की राह में जान और माल की कुरबानी है। अल्लाह ने अपनी किताब** और अपने रसूल (स.) के ज़रिये ख़ुदा परस्ती की राह बता दी है अब जिस का जी चाहे वह **गैर अल्लाह से कट कर अल्लाह की रस्सी को मजबूती से थाम ले** और जिसका जी चाहे वह अपने गढ़े हुए ग़लत सहारों को पकड़े रहे और अपनी आक़िबत तबाह कर ले। **फिर सूद को हराम करने का एलान किया** क्योंकि सूदी निज़ाम लोगों में दुनिया परस्ती और माल की पूजा का जज़्बा पैदा करता है। पस अगर **मुआशरे में नेकियां फैलाना ख़ुदा-तरसी और बंदों की इमदाद का निजाम लाना है तो सूदी निजाम ख़त्म करना होगा।**

सूरह बकरह के आख़ीर में यह हिदायत दी गयी है कि जब मुसलमान आपस में लेन देन करें और कोई मुद्दत मुतअय्यन की जाये तो यह लेन देन तहरीरी होना चाहिये और इस तहरीर पर दो गवाहों के दस्तख़त भी होना चाहिये ताकि मामलात साफ़ रहें। सूरत को इस मशहूर दुआ पर ख़त्म किया जो नबी-ए-करीम (स.) को मैराज शरीफ़ में सिखाई गई थी। इसमें मग़फिरत के साथ काफ़िरों के मुक़ाबले में मदद फ़रमाने की दुआ भी की गई है।

इसके बाद तीसरी सूरत आले-इमरान के दो रूकूअ हैं। इनमें बताया गया है कि यहूद व नसारा ने अल्लाह की तरफ़ से आई हुई किताबों में इख़्तिलाफ़ात पैदा कर के अस्ल हक़ीक़त को गुम कर दिया। अब अल्लाह ने **इसी गुमशुदा हकीकत को वाजेह करने के लिए क़ुरआन उतारा है** ताकि लोग इख़्तिलाफ़ात की भूल भुलैयों से निकल कर हिदायत की शाहराह पर आ जाएं। **अब जो लोग इस किताब का इन्कार कर देंगे उनके लिए अल्लाह के यहां सख़्त अज़ाब है।**

फिर अल्लाह ने उन रूकावटों का ज़िक्र किया कि जो क़ुरआन और इसके मानने वालों के दरम्यान शैतान पैदा करता है यानी दुनिया की मरग़ूबात, औरतें, बेटे, सोने चांदी के ढेर, निशान ज़दा घोड़े, हथियार, चौपाए और खेती। मगर ये सब दुनिया की आरज़ी चीज़ें हैं और, **अल्लाह के पास उनके लिए इससे भी कहीं बेहतर सामान और ठिकाना है। जो लोग तकवा इख़्तियार करेंगे इनके लिए जन्नत और ख़ुदा की ख़ुशनूदी है। ये वो हैं जो सब्र करने वाले सच्चे, फरमाबरदार राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले और सुबह के तडके में अपने रब से मग़फिरत की दुआए**

करने वाले हैं। रह गए काफ़िर तो यह दुनिया का माल व मताअ औलाद और शान-ओ-शौकत, ये सब उन्हें ख़ुदा की पकड़ से नहीं बांध सकेंगे। उनका वही हाल होगा जो उनसे पहले फ़िरऔन और उसकी क़ौम का हुआ। इस हक़ीक़त का सुबूत तुम्हें बदर के मैदान में मिल चुका है कि हक़ का परचम उठाने वाले 313 थे और उनके मुक़ाबले में काफ़िर हज़ार से ज़्यादा थे मगर अल्लाह ने फ़रिश्तों से एहले ईमान की मदद फ़रमाई थी। इस वाक्ये में समझदारों के लिए बड़ी निशानियां हैं।

❖ **आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।**
❖ **अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।**
❖ **अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।**

''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



तीसरी तरावीह

आज तीसरे पारे ''तिलकर-रूसुल'' से निस्फ़ चौथे पारे के तीन चौथाई रूकूअ तक तिलावत की गई। सूरह आले-इमरान, इस जगह ख़त्म हो जाती है। कल की तरावीह की आख़िरी आयात में नबी सल्ललाहो अलैहे वसल्लम से कहलवाया गया था कि **''ऐ एहले किताब और दूसरे मजहब वालों! मैं और मेरे पैरो तो सही इस्लाम के कायल हो चुके जो खुदा का अस्ल दीन है।** अब तुम बताओ कि क्या तुम भी अपने और अपने पिछलों के बढ़ाए हुए इज़ाफ़ों को छोड़ कर इसी अस्ल और हक़ीक़ी दीन की तरफ़ आते हो?'' ज़ाहिर है कि हठ धर्म लोग किसी तरह भी अपना तरीक़ा नही छोड़ा करते। **इसी लिए फरमाया जो लोग अल्लाह की आयात का इन्कार करते रहे, उसके नबियों को कत्ल करते रहे और उन लोगों की जान के भी दुश्मन बन गए जो लोगों में इन्साफ की दावत लेकर उठे तो ऐसे लोगों को दर्दनाक अजाब की खुशख़बरी दे दो।** ये अपने करतूतों पर दुनिया में कितने खुश होते रहे मगर हक़ीक़त में उनके आमाल और कोशिशें सब दुनिया और आख़िरत में बर्बाद हो गयीं और खुदा की पकड़ से उन्हें बचाने वाला कोई नहीं होगा।

अहले किताब की मुसलसल मुजरिमाना हरकतों का सबब यह बताया गया कि मनघड़ंत अक़ीदों ने उनको ग़लत फ़हमी में डालकर खुदा से बेख़ौफ़ बना दिया है। फिर मुसलमानों को तम्बीह की कि राज़दारी के मामलात में मौमिनों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त न बनाओ। सब के लिए ऐलान कर दिया गया कि **ऐ नबी सल्ललाहो अलैहि वसल्लम! फरमा दीजिए कि अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो। अल्लाह भी तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा। बस अल्लाह की इताअत करो और रसूल (स.) की। अगर लोग इससे फिरें तो मालूम हो कि अल्लाह काफिरों को दोस्त नहीं रखता।**

फिर अल्लाह ने ईसाइयों की गुमराही को वाज़ेह करते हुए हज़रत मरियम (अ.) और हज़रत ईसा (अ.) के मोजिज़ात को बयान करके बताया कि हज़रत ईसा (अ.) की पैदाइश बग़ैर बाप के ऐसा ही मोजिज़ा है जैसा कि अल्लाह ने हज़रत आदम (अ.) को बग़ैर मां-बाप के पैदा किया। इस दलील से मालूम हुआ कि जब हज़रत आदम (अ.) खुदाई में शरीक नहीं तो मरियम (अ.) और हज़रत ईसा (अ.) को कैसे खुदाई में शरीक करते हो।

एहले किताब पर हुज्जत तमाम करने के बाद फिर उन्हें इस तरह इस्लाम की दावत दी कि ''आओ उस कल्मे पर जमा हो जाएं जो हम और तुम दोनों मानते हो और वो है खुदा की तौहीद .... अगर तौहीद का इन्कार करते हो तो गोया पिछली किताबों और नबियों का इन्कार करते हो फिर हज़रत इब्राहीम (अ.) का हवाला दिया कि उनको अपनी गुमराहियों में क्यों शरीक करते हो, वह न तो यहूदी थे न ईसाई थे बल्कि सच्चे और यकसू मुस्लिम थे। **तौरात और इन्जील तो उनके बाद आई हैं। हजरत इब्राहीम (अ.) से सही निस्बत के हकदार हजरत मोहम्मद (स.) और उनकी पैरवी करने वाले हैं क्योंकि वही उनके दीन को लेकर उठे हैं।**

यहूदियों की बाज चालों का भी जिक्र किया ताकि मुसलमान उनकी साजिशों से होशियार रहें। उनमें से एक तो यह है कि कुछ लोग पहले तो इस्लाम कुबूल कर लेते हैं। फिर कुछ अरसे बाद इस्लाम और मुसलमानों पर इलज़ामात लगाकर इस्लाम से निकल जाते हैं। उनकी पूरी तारीख़ इसी तरह की चालों से भरी हुई है। यहूद के उलेमा और लीडरों को मुख़ातिब करके कहा गया कि तुम अपनी क़ौम के अन्दर तास्सुब भड़काते हो कि किसी इसराईली के लिए जाइज़ नहीं कि ग़ैर इसराईली को नबी माने हालाकि **अस्ल हिदायत तो अल्लाह की हिदायत है, जिसका तुम्हें तालिब होना चाहिए। ख़्वाह बनी इस्हाक पर आए या बनी इस्माईल पर। तुम अगर समझते हो कि किसी को इज्जत तुम्हारे देने से मिलेगी तो यह गलत है। इज्जत व फजीलत अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहे दे।**

इसी तरह ईसाइयों पर उनके अक़ीदे की ग़लती वाज़ेह करते हुए बताया कि अल्लाह ने तमाम नबियों से यह अहद लिया है कि जब तुम्हारे पास एक रसूल इन पेशीन-गोईयों का मिसदाक़ बन कर आए जो तुम्हारे पास हैं : तो तुम उस पर ईमान लाना और उसकी मदद करना। बक़र : की तरह आले-इमरान में भी वाज़ेह किया गया है कि **खुदा की वफादारी का मुकाम महज झूठी रस्मदारी और दिखावे की दीन दारी से हासिल नहीं हो सकता। इसलिए अस्ल चीज यह है कि खुदा की राह में उन चीजों में से खर्च करो जो तुम्हें महबूब हैं।**

एहले-किताब की मलामत की गई कि सीधा रास्ता बताने के लिए तुम खुदा की तरफ़ से मुक़र्रर किए गए थे। यह किस क़द्र अफ़सोस का मुक़ाम है कि तुम अब इससे लोगों को रोकने और गुमराह करने के लिए अपनी कोशिश सर्फ़ कर रहे हो। बस अब तुम्हें माज़ूल किया जाता है और यह अमानत उम्मते-मोहम्मदिया के सुपुर्द की जाती है। साथ ही **उम्मते मोहम्मदिया को बशारत दी गई कि एहले किताब तुम्हारी मुखालिफत में कितना भी जोर लगा लें, तुम्हारा कुछ न बिगाड सकेंगे बशर्ते कि तुम सब्र और तकवा पर कायम रहो।**

जंगे - उहुद में मुंसलमानों को अपनी ही ग़लती से जो तकलीफ़ पहुंची (हालांकि उनकी तादाद बदर के मुक़ाबले दुगनी से भी ज़्यादा थी) इस पर बेलाग तब्सिरा फ़रमाया और बताया गया कि मुनाफ़िक़ों के साथ छोड़ जाने से बाज़ लोग दिल-बरदाश्ता हो गये हालांकि **अस्ल भरोसा अल्लाह पर करना चाहिए।** जबकि वह पहले भी बदर से तुम्हारी मदद कर चुका है और अल्लाह ने तो तीन सौ मुनाफ़िक़ों के रास्ते में कट कर चले जाने पर तीन हज़ार फ़रिश्तों से मदद फ़रमाई। चुनांचे पहले मुस्लमान कामयाब हो गये। मगर उनके एक दस्ते ने माले-ग़नीमत के लालच में नबी (स.) के हुक्म की नाफ़रमानी की, जिसके सबब अल्लाह ने सबक़ सिखाने के लिए फ़तह को शिकस्त में बदल दिया।

सूद की मज़म्मत अल्लाह तआला ने इस तरह फ़रमायी कि ऐ ईमान वालों! बढ़ता चढ़ता सूद न खाओ और अल्लाह से डरते रहो। इससे पहले भी अल्लाह का फ़रमान है जो लोग सूद खाते हैं उनका हाल उस शख़्स का सा होता है जिसे शैतान ने छू कर बावला कर दिया हो और इस हालत में उनके मुबतला होने की वजह यह है कि वह कहते हैं ''तिजारत भी आख़िर सूद जैसी चीज़ है'' हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया और सूद को हराम। लिहाज़ा जिस शख़्स को उसके रब की तरफ़ से यह नसीहत पहुंचे और आइन्दा के लिये वह सूदख़ोरी से बाज़ आ जाये तो जो कुछ वह पहले खा चुका सो खा चुका। उसका मआमला अल्लाह के हवाले है और जो इस हुक्म के बाद फिर इसी हरकत का इआदह करे वह जहन्नुमी है। जहां वह हमेशा रहेगा। अल्लाह सूद का मुठ मार देता है और सदक़ात को नशूनुमां देता है। अल्लाह किसी नाशुकरे बदअमल इन्सान को पसन्द नहीं करता। हां जो लोग ईमान ले आयें और नेक अमल करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें उनका अज्र बेशक उनके रब के पास है और उनके लिये किसी ख़ौफ़ और रंज का मौक़ा नहीं। ऐ लोगों जो ईमान लाये हो अल्लाह से डरो और जो कुछ तुम्हारा सूद लोगों पर बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो अगर वाक़ई तुम मोमिन हो। अगर तुमने ऐसा न किया तो आगाह हो जाओ कि अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से तुम्हारे ख़िलाफ़ ऐलाने - जंग है अब भी तौबा कर लो और सूद छोड़ दो तो अपना असल सरमाया लेने के तुम हक़दार हो। न तुम ज़ुल्म करो न तुम पर ज़ुल्म किया जाये। तुम्हारा क़रज़दार तंग दस्त हो तो हाथ खुलने तक उसे मोहलत दो और अगर तुम माफ़ कर दो तो तुम्हारे लिये ज़्यादह बेहतर है अगर तुम समझो।

सूद के मुताबिक़ दर्ज-ज़ेल अहादीस का मुतआलह मुफ़ीद रहेगा।

हज़रत उबादह बिन सामत (रज़ी अ0) से मरवी है कि आपने (सं0) फ़रमाया गेहूं के बदले गेहूं, जौ के बदले जौ, सोने के बदले सोना, नमक के बदले नमक, चांदी के बदले चांदी, खजूर के बदले खजूर लेना देना बराबर बराबर जायज़ है और जो इज़ाफ़ा करके दिया जाये वह सूद है। (तिरमिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद (रज़ी अ0) से रवायत है कि आपने (स0) फरमाया अल्लाह की लानत है सूद खाने वाले पर उसके गवाह पर (मुस्लिम तिरमिज़ी)

हज़रत जाबिर (रज़ी अ0) से रवायत है कि मैं हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर आप (स0) के साथ था। आपने (स0) एक तवील ख़ुत्बा दिया। उसमें फ़रमाया ख़ूब समझलो दौरे जाहिलियत की सारी चीज़ें मेरे दोनों क़दमों के नीचे रौंद दी गयी हैं और ज़मानये जाहिलियत का ख़ून माफ़ है और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान का ख़ून रबीया - बिन

हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब के फ़रज़न्द का ख़ून माफ़ करने का ऐलान करता हूं और दौरे जाहिलियत के सारे सूदी मआमलात अब सोख़्त हो गये और इस सिलसिले में भी सबसे पहले में अपने चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के सूदी मतालिबात के ख़त्म करने का ऐलान करता हूं। आज उनके सारे सूदी ख़त्म हैं। (मुस्लिम)

इस मौके पर सूद की सख़्त बुराई की और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने पर उभारा और कहा कि अल्लाह की बख़्शिश और उसकी जन्नत के लिए एक दूसरे से बाजी ले जाने की कोशिश करो, जिसकी वुस्अतें आसमानों से भी ज्यादा हैं और जो उन लोगों के लिए तैयार की गई हैं जो हर हाल में अल्लाह की राह में ख़र्च करने, गुस्से को जब्त करने और लोगों से दरगुजर करने वाले हैं। किसी हाल में पस्त हिम्मत न बनों और न गम करो अगर तुम सच्चे मोमिन बन गए तो तुम ही गालिब रहोगे। नबी-ए-करीम (स.) की एक अहम सिफ़त यह बताई गई जिसका इत्तेबाअ उम्मत के तमाम रहबरों को करना चाहिए कि यह अल्लाह का फ़ज़्ल है कि नबी-ए-करीम (स.) लोगों के साथ नर्मी से पेश आने वाले हैं। अगर सख़्तगीर होते तो फिर ये लोग आपके गिर्द जमा नहीं हो सकते थे। फिर फ़रमाया आप इनसे मामलात में मशविरा लेते रहिए और इनकी मग़फ़िरत की दुआ कीजिए। फिर मोमिनों को बताया कि उनके अंदर मोहम्मद (स.) को भेजकर उन पर बहुत बड़ा अहसान किया है। इसलिए आजमाइशों और काफिरों से मुकाब्ला करने से मत घबराओ क्योंकि अल्लाह आजमाइशों के जरिए पाक लोगों को नापाक लोगों से अलग कर के रहेगा।

सूरह बकरः की तरह सूरह आले-इमरान को भी निहायत पुरअसर दुआ पर ख़त्म किया गया है। दुआ से पहले इस हकीकत की तरफ़ तवज्जह दिलाई गई है कि अल्लाह की कुदरत और हिकमत की निशानियां सारे जहां में हर जगह फैली हुई हैं। ज़रूरत इस बात की है कि आदमी आखें खोले। अल्लाह की बातें सुनने के लिए कान लगाए और उसकी हिक्मतों पर ग़ौर करने के लिए दिल और दिमाग़ का इस्तेमाल करे। आख़िर में मुसलमानों को हिदायत फ़रमाई कि चार चीजें हैं जो तुम्हें दुनिया और आख़िरत दोनों में काम्याब कराएंगी। उन्हें इख़्तियार करो। सब्र, मुसाबिरत यानी दीन की मुख़ालिफत करने वालों के मुकाबले में साबित कदमी, हर वक्त चौकन्ना रहना और दीन की हिफाजत करना और तकवा यानी ख़ुदा की मुकर्रर करदा हदों की पाबंदी।

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।
❖ **अल्लाह तआला हम सबको कुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।**
❖ **अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।**

"आमीन"

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



चौथी तरावीह

इस तरावीह में चौथे पारे ''लनतनालु'' के बारहवें रूकूअ से पांचवे पारे ''वल-मुहसनात'' के सत्रहवें रूकूह तक तिलावत की गई। सबसे पहले अल्लाह से डरते रहने की हिदायत, जिसने सबको एक ही जान से पैदा किया। **तमाम मर्द और औरतें एक ही आदम व हव्वा की औलाद हैं।** इसी वजह से ख़ुदा और रहम यानी ख़ून का रिश्ता सबके दरम्यान मुश्तरिक है। इन्हीं दो बुनियादों पर इस्लामी मुआशरे की इमारत काइम है। यतीमों के हुकूक अदा करने की ताकीद की। इस मामलें में किसी क़िस्म की हेर फेर और रद्दो बदल को सख़्ती से मना किया गया। इस मौके पर यतीमों के हुकूक़ के तहफ़्फ़ुज़ के नुक़्ता-ए-नज़र से उनकी माओं से निकाह की इजाज़त दी। अरबों में बीवियों की तादाद पर कोई पाबंदी नहीं थी। इस मौके पर चार तक तादाद को महदूद कर दिया गया। और यह शर्त लगाई गई कि उनके हुकूक की अदायगी और महर में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। विरासत तक़सीम के ज़ाब्ते की तफ़सील बताई ताकि सबके हुकूक़ मुतअय्यन हो जायें। (1) मीरास में सिफ़ मर्दो ही का हिस्सा नहीं बल्कि औरतें भी इसकी हक़दार हैं। अगरचा उनका हिस्सा मर्द के निस्फ़ है। (2) मीरास बहरहाल तक़सीम होनी चाहिए ख़्वाह वह कितनी ही कम हो हत्ता कि अगर मरने वाले ने एक गज़ कपड़ा छोड़ा है और दस वारिस हैं तो भी उसे दस हिस्सों में तक़सीम होना चाहिए। (3) विरासत का कानून हर किस्म के अमवाल व इमलाक पर जारी होगा। ख़्वाह वह मनकूलह हो या गैर मनकूलह। ज़रई हो या गैर ज़रई। आबाई हो या गैर आबाई। तमाम इमलाक को वरसा में शरायी (शरअयी) तौर पर तक़सीम करना ज़रूरी है। (4) क़रीबतर रिश्तेदारों की मौजूदगी में बईदतर रिश्तेदार मीरास न पायेगा।

विरासत में हर एक का हिस्सा मुताअय्यन करने के बाद बताया गया कि यह तक़सीम अल्लाह तआला के कामिल इल्म की बुनियाद पर है। तुम्हें नहीं मालूम कि कौन कितना क़रीब है और कौन कितना दूर है। नीज़ यह एहकामात अल्लाह की तरफ़ से फ़र्ज़ क़रार दिये गये हैं। यह अल्लाह की हुदूद है जो उन पर अमल करेगा और सबको हक़ शराई के मुताबिक़ देगा अल्लाह तआला उसे अपनी बेशबहा जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा वह उसमें हमेशा रहेगा और यह बड़ी कामयाबी है और जो अल्लाह के इन एहकामों की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करके विरासत से महरूम करेगा दूसरों का माल नाजायज़ तरीक़े से खायेगा गोया इन हुदूद को तोड़ेगा तो अल्लाह उसे आग में डालेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा। और उसके लिये रूसवाकुन सज़ा है। यह एहकामात इसलिये हैं कि कोई ताकतवर फ़रीक़ कमज़ोर को उसके हक़ से महरूम न कर सकें और आपस में ज़ुल्म हक़ तल्फ़ी के झगड़ों को रोका जा सके। इस बात का ऐलान कि औरत माल विरासत नहीं है। अरबों में दस्तूर था कि सौतेली मां बेटे को विरसे में मिल जाती थी। इससे मना किया और **ये भी बताया कि औरतों को दिया हुआ माल उनसे वापस लेने के लिए तंग न करें।** फिर उन औरतों की तफ़सील जिनके साथ निकाह नाजाइज़ है वह यह है : मायें, नानी, दादी, ख़्वाह सगी हो या सौतेली (2) बेटियां, पोती, नवासी, पड़पोती, सगी सौतेली (3) बहनें ख़्वाह सगी हो, मां शरीक बहन हो या बाप शरीक बहन तीनों इस हुक्म में यकसां हैं। (4) फूफियां (5) ख़ालायें (6) भतीजियां (7) भाजियां सगी हों या सौतेली (8) रिज़ाई मायें (जिन माओं का दूध पिया हो) (9) दूध शरीक बहन इस अम्र पर उम्मत में इत्तेफ़ाक़ है कि एक लड़के या लड़की ने जिस औरत का दूध पिया हो उस के लिये वह औरत मां के हुक्म में है और उसका शौहर बाप के हुक्म में है और वह तमाम रिश्ते जो हकीकी मां और बाप के तअल्लुक़ से हराम होते हैं रिज़ाई मां बाप के तअल्लुक़ से भी हराम हो जाते हैं। नबी करीम (स0) का इरशाद है ''दूध पीने से वह रिश्ते हराम हो जाते हैं जो हक़ीक़ी रिश्तों में हराम हैं'' (10) सास भी हराम है (11) सौतेली बेटी जिसकी मां के साथ खिलवत हुयी हो अगर खिलवत न हुई हो तो हराम नहीं। (12) सगी बहुवें, पोते और नवासों की बीवियां हराम हैं। अलबत्तह ले पालक बेटे की बीवी मुतल्लक़ा या बेवह हो तो हराम नहीं। (13) दो सगी

बहनों का एक वक़्त में एक शख़्स के निकाह में जमा करना भी हराम है। (14) बयक वक़्त बीवी और उसकी ख़ालह फूफी भतीजी, भांजी को एक साथ निकाह में जमा करना हराम है। इस बारे में उसूल यह है कि ऐसी दो औरतों को एक शख़्स के निकाह में जमा करना हराम है जिनमें से कोई अगर मर्द होती तो उसका निकाह दूसरे से हराम होता। (15) वह औरतें भी हराम हैं जो किसी दूसरे के निकाह में हों। अलबत्तह ऐसी औरतें इससे मुसतसना हैं जो जंग में बांदी बन कर आयें। इन औरतों के मासिवा तमाम औरतें तुम्हारे लिये हलाल हैं बशर्ते कि तुम उनके महर ठीक ठीक अदा करो। निकाह का मक़सद असमत व इज्ज़त की हिफ़ाज़त है न कि महज़ शहवत रानी हो। निकाह की शराइत का बयान इस लिये है ताकि मुआशरा बदकारी, बेहयायी और ज़ुल्म व ज़्यादती से पाक रहे। यह भी वाज़ेह किया गया कि इस्लाम व हिदायत और मुआशरे के इस्तेहकाम व पाकीज़गी के उन अहकामात में अल्लाह ने वह सहूलियत भी मल्हूज़ रखी है जो लोगों की तबई कमज़ोरी के पेशेनज़र ज़रूरी थी। इसलिये ख़बरदार नफ़स परस्तों के बहकावे में न आ जाना वे तुम्हें पाकीज़गी से हटाकर नफ़स परस्ती के अंधेरों में भटका देना चाहते हैं। <u>मुसलमानों को एक दूसरे का माल नाजायज तरीकों से खाने और एक दूसरे का खून बहाने की मुमानिअत की और बताया कि खुदा खुद रहीम है इसलिए चाहता है कि उसके बन्दे भी आपस में एक दूसरे के लिए रहीम हों। जो लोग मुआशरे में ज़ुल्म व ज्यादती का बीज बोयेंगे वो सब जहन्नुम में झोंक दिये जायेंगे। अलबत्तह जो लोग बडे गुनाहों से जिन्हे आम जबान में गुनाहे-कबीरा कहते हैं बचते रहेंगे, उनके छोटे गुनाहों से अल्लाह दरगुजर फरमायेगा।</u>

फ़रमाया शरीअत में औरत और मर्द दोनों के लिये जो हुदूद और हुकूक़ मुतअय्यन कर दिये गये हैं सबको उनके अन्दर रहना चाहिए। अपनी अपनी हद के अंदर की हुई हर मेहनत का अज्र ख़ुदा के यहां पायेगा। <u>ख़ानदान और मुआशरे में सरबराही और कव्वामियत का मुकाम मर्द को दिया गया।</u> क्योंकि अपनी पैदाइशी सिफ़ात और ख़ानदान की किफ़ालत का ज़िम्मेदार होने की वजह से वही इसके लिए मौज़ू है। नेक बीवियां इसका ऐहतिराम करें और जिन औरतों से सरकशी का अंदेशा हो तो उनके शौहर उन्हें नसीहत करें। अगर ज़रूरत महसूस हो तो मुनासिब तम्बीह भी की जा सकती है और इख़्तिलाफ़ात बहुत बढ़ जायें तो ऐसी सूरत में मियां और बीवी दोनों ख़ानदानों में से एक-एक पंच मुक़र्रर किया जाये जो हालात की इस्लाह की कोशिश करें।

ख़ुदा ने वालिदेन, अक़रबा, यतामा, मसाकीन, पड़ोसी **(रिश्ते दार हों या न हों या आरज़ी और वक़्ती)** मुसाफ़िर और मातहत सबके हुकूक़ पहचानने और अदा करने की ताकीद की। <u>ख़ुदा को वही बन्दे पसंद हैं जो मुतवाजे और नर्म मिजाज हों।</u> वह उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो अकड़ने वाले, कंजूस और कंजूसी का मश्वरा देने वाले हों। इस तरह वे भी पसंद नहीं जो ख़ुदा की ख़ुशनूदी के बजाये लोगों को दिखाने और नामावरी के लिये ख़र्च करें। याद रखो <u>लोगों के हुकूक अदा करने और ख़ुदा की राह में ख़र्च करने वाले कभी घांटे में रहने वाले नहीं हैं। इनके लिये ख़ुदा के यहां बड़ा अज्र है।</u>

उन लोगों के लिए बड़े अफ़सोस का इज्हार किया जो आख़िरत से बिल्कुल बेपरवाह होकर उसके रसूल (स0) की नाफ़रमानी पर अड़े हुए थे। ईमान और अमल सालेह की राह न ख़ुद इख़्तियार करते थे और न दूसरों को इख़्तियार करने देना चाहते थे। फिर तम्बीह की कि इस आख़िरी रसूल के ज़रिये तबलीग़ का हक़ अदा हो चुका है। जो अब भी नहीं सुनेंगे वो सोच लें कि एक दिन ऐसा आने वाला है जिस दिन अल्लाह सब रसूलों को उनकी सफ़ों पर गवाह ठहराकर पूछेगा कि तुमने अपनी उम्मतों को क्या दावत दी और उन्होंने क्या जवाब दिया। फिर यही सवाल इस आख़िरी उम्मत के मुताल्लिक़ आख़िरी रसूल (स0) से भी होगा। वह दिन ऐसा होगा कि न किसी के लिए कोई जायेपनाह होगी और न कोई शख़्स कोई बात छुपा सकेगा।

इस तम्बीह के बाद ख़ुदा के सबसे बड़े हक़ नमाज़ के बाज़ आदाब व शराइत बताए। यहूद्रियों की बाज़ शरारतों का ज़िक किया। ख़ास तौर पर नबी-ए-करीम (स.) के बारे में ऐसे अलफ़ाज़ बोलने की आदत जिनके दो दो मायने निकलते हों कि मुसलमान जो मतलब समझें वो उससे उलट मतलब मुराद लें। बताया कि यह हरकतें वे हसद के सबब करते हैं। <u>लेकिन अल्लाह ने फैसला कर लिया है कि वह रसूल और आपकी उम्मत को किताब और हिकमत</u>

और अज़ीमुश्शान सल्तनत अता फरमाएगा और यह हासिद इनका कुछ न बिगाड सकेंगे। चुनांचे दुनिया ने देखा कि अरब के बद्दू उठे, रसूल (स.) का दामन थामा और 800 साल दुनिया की इमामत की। यह तवील हुकूमत और सल्तनत इस्लामी मुआशरा क़ाइम करने का नतीजा था। मुसलमानों को नसीहत कि जब यह अमानत यहूद से लेकर तुम्हें दी जा रही है तो तुम उनकी तरह अमानत में ख़यानत न करना बल्कि इसका हक़ ठीक ठीक अदा करना और हर हाल में अद्ल पर क़ायम रहना।

अल्लाह और उसके रसूल (स0) और जो तुममें से हुक्मरां हों उनकी इताअत करते रहना और अगर तुम में और हुक्मरानों में इख़्तिलाफ़ हो जाये तो अल्लाह और रसूल (स0) की तरफ़ मामले को लौटाना ताकि झगड़े का सही फ़ैसला हो सके और तुम्हारा शीराज़ा न बिखरे।

मुनाफ़िक़ीन को मलामत की वह रसूल (स0) की इताअत पर जमा होने के बजाए इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों से मेल जोल रखते हैं और इसको अपनी अक़्लमन्दी समझते हैं। **हालांकि उस वक़्त तक ईमान मोतबर ही नहीं जब तक वो पूरे तौर पर अपने को पैगम्बर (स0) के हवाले न कर दें। और हर मामले में उनकी इताअत करने लगें।**

मुसलमानों को अपनी मुदाफिअत और दारूल कुफ्र में घिरे हुए मज़लूम मुसलमानों की आजादी के लिए जिहाद की ताकीद की और उनको मलामत की जो जिहाद से जी चुराते हैं। मुसलमानों की हिम्मते पस्त करते हैं और जिहाद के फायदों में तो हिस्सेदार बनते हैं मगर कोई ख़तरा मोल लेनें को तैयार नहीं हैं। मुनाफ़िकों की इस हालत पर भी मलामत की कि जब जिहाद का हुक्म नहीं था तो बढ़ चढ़ कर जिहाद का मुतालिबा करते थे मगर जब हुक्म आ गया तो इस्लाम के दुश्मनों से ऐसा ड्रते हैं, जैसा ख़ुदा से डरना चाहिए। हालांकि मौत से कोई भी नहीं बच सकता। इसी तरह इस बात को भी नापसन्द किया कि फ़ायदा पहुच जाए तो उसे अल्लाह का करम क़रार दिया जाए मगर नुक्सान पहुंच जाये तो उसे रसूल (स.) और मोमिनों की बे-तदबीरी क़रार दिया जाये। हालांकि ख़ैर और शर सब अल्लाह की तरफ़ से हैं। **हां शर का बडा हिस्सा अहले निफाक के आमाल का नतीजा होता है।** आख़िर में नबी-ए-करीम (स0) को तसल्ली दी कि जो तुम्हारी इताअत करने वाले हैं वही ख़ुदा की इताअत करने वाले क़रार पायेंगे और जो तुम्हारी इताअत से गुरेज़ करें उनका मामला ख़ुदा के हवाले कर दो। तुम पर उनकी ज़िम्मेदारी नहीं।

इस मौक़े पर मुनाफ़िक़ीन की इस शरारत का भी ज़िक्र किया कि अगर उनको ख़तरे की कोई ख़बर पहुचती है तो सनसनी पैदा करने के लिए उसको फ़ौरन फैला देते हैं। हालांकि सही तरीक़ा यह है कि इसको रसूल (स.) या ज़िम्मेदार लोगों तक पहुंचाया जाए ताकि वे गौर फिक्र करके इसके तदारूक का सामान कर सकें। मुनाफ़िक़ीन की इन सारी हरकतों के बावजूद मुसलमानों को हिदायद दी कि मुआशरे के अन्दर उनको नक्कू बनाने की कोशिश न की जाए बल्कि उनके साथ आम मुसलमानों का सा ही सुलूक किया जाए यानी सलाम व कलाम जारी रखा जाए ताकि उनके लिए अपनी गल्तियों की इस्लाह का मौक़ा बाक़ी रहे।

जिहाद के लिए हर वक्त तैयार रहने का हुक्म दिया गया और ख़तरे की हालत में नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा बताया गया। उन मुसलमानों को तम्बीह की गई जो खुले हुए मुनाफ़िक़ीन के मामले में भी मुदाहनत बरतते थे। यहां तक कि बाज़ औक़ात मुनाफ़िक़ीन की हिमायत करने लग जाते थे। फ़रमाया पैग़म्बर और इस्लाम के ख़िलाफ़ मुनाफ़िक़ीन की सरगोशियां और सरगरमियां और इस्लाम की राह छोड़कर दूसरी राह इख़्तियार करना कोई मामूली जुर्म नहीं है। यह चीज़ अपनी फितरत के लिहाज़ से **शिर्क है और शिर्क अल्लाह तआला कभी भी माफ नहीं करेगा। ख़ुदा के यहां झूठी आरज़ुएं काम आने वाली नहीं, बल्कि ईमान और अमले सालेह काम आने वाला है। आख़िर में सख़्ती से आगाह किया कि मुनाफिकत इतना बडा जुर्म है कि मुनाफिक़ीन और कुफ़्फार दोनों का ठिकाना जहन्नुम है।**

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

"आमीन"

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



पांचवी तरावीह

इसमें पांचवे पारे के आख़िरी रूकूअ से सातवें पारे के पांचवे रूकूअ तक तिलावत की गई है।

चौथी तरावीह में पढ़ी जाने वाली आयात में एक बात यह कही गयी थी कि **जब कोई सलाम करे यानी अस्सलामो अलैकुम कहे तो इससे बेहतर जवाब देना चाहिए वरना कमअजकम इतना ही लौटा देना चाहिए** यह इतना अहम मामला है कि अगर कोई सलाम का जवाब सलाम से न दे तो गोया उसने उसका सलाम भी कुबूल नहीं किया। इस बात की अगर इजाज़त दे दी जाये तो मुआशरे में एक दूसरे से नफ़रतें बढ़ेंगी। इनतिशार होगा और शीराज़ा बिखर जायेगा। इस तरावीह में इस गुनाह से मुआशरे को महफ़ूज़ रखने के लिए छठे पारे **"ला युहिब्बुल्लाह"** को इन अल्फ़ाज़ से शुरू किया गया है कि अल्लाह सब कुछ सुनने और जानने वाला है। मज़लूम होने की सूरत में अगरचे बुराई से उसका ज़िक्र करने की इजाज़त दी गई है लेकिन अगर तुम ज़ाहिर व बातिन में भलाई ही किये जाओ या कमअज़कम बुराई से दर गुज़र करो तो अल्लाह की सिफ़त भी यही है कि वह बड़ा माफ़ करने वाला है। हालाकि सज़ा देने की पूरी कुदरत रखता है। गोया बताया कि **अफ़्वु-व-दर गुजर की आदत डालो। जिस अल्लाह से तुम करीब होना चाहते हो उसकी शान यह है कि वह निहायत हलीम और बुर्दबार है**। सख़्त से सख़्त मुजरिमों को भी रिज़्क देता है और बड़े से बड़े कुसूर भी माफ़ करता चला जाता है। लिहाज़ा उससे क़रीब होने के लिए तुम भी आली हौसला और वसी-उन-नज़र बनो। फिर बताया कि जिस तरह खुल्लम खुल्ला इन्कार कुफ़्र है उसी तरह अपनी शराएत पर ईमान लाना भी कुफ़्र है। यानी हम ईमान लाते हैं, फ़लां रसूल को मानेंगे और फ़लां को नहीं मानेंगे और इस्लाम और कुफ़्र के बीच में रास्ता निकालने की कोशिश, ये सब भी कुफ़्र ही है।

यहूद की तारीख़ दोहराई कि वे किस तरह गुनाह पर गुनाह करते चले गये मगर हमने फिर भी उनके साथ माफ़ी का सुलूक किया। ऐसे लोगों से अब भलाई की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। फिर ख़ास तौर पर ईसाइयों को तम्बीह फ़रमाई कि **अल्लाह ने कुरआन की शक्ल में जो नूरे मुबीन ख़ल्क की रहनुमाई के लिए उतारा है उसकी कद्र करो और गुमराही छोड़ कर हिदायत पर आ जाओ।** ईसाइयों से कहा कि अपने दीन में गुलू (**गुलू यह है कि जो चीज़ पाव पर है उसे सेर भर कर दिया जाये**) न करो। दीन में जो चीज़ मुसतहिब है उसे फ़र्ज़ और वाजिब का दर्जा दे दिया जाये और जो शख़्स मुजतहिद है उसे इमाम मासूम बना दिया जाये और जिसे अल्लाह ने रसूल और नबी बनाया है उसे ख़ुदाई सिफ़ात में शरीक क़रार दे दिया जाये। .... और ताज़ीम से बढ़कर उसकी इबादत शुरू कर दी जाये। ये लोग इस गुलू को दीन की ख़िदमत और बुज़ुर्गों से अक़ीदत समझते हैं, हालांकि ख़ुदा के नज़्दीक यह जुर्म है। ईसाइयों की मिसाल अल्लाह ने दी कि उन्होंने मसीह इब्ने मरियम को ख़ुदा के रसूल से आगे बढ़ाकर ख़ुदा का बेटा बना दिया। मुसलमानों को भी गुलू से बचना चाहिए।

सूरः माइदा में अल्लाह तआला ने ज़िक किया है कि उसने आख़िरी उम्मत की हैसियत से मुसलमानों से अपनी आख़िरी और कामिल शरीअत पर पूरी पाबंदी के साथ क़ाइम रहने और उसको क़ाइम करने का अहद लिया है। यही अहद पहले अहले किताब से लिया गया था। मगर वो इसके अहल साबित नहीं हुए। अब मुसलमानों से अहद लिया जा रहा है कि **तुम पिछली उम्मतों की तरह ख़ुदा की शरीअत के मामले में ख्वाइन और गद्दार न बन जाना बल्कि पूरी वफादारी के साथ इस अहद को निभाना। इस पर ख़ुद भी काइम रहना और दूसरों को भी काइम रखने की कोशिश करना। इस राह में पूरी अजीमत और पामर्दी के साथ तमाम आजमाइशों और ख़तरात का मुकाबला करना।**

सबसे पहले अल्लाह से बांधे हुए अहद की पाबंदी की ताकीद की। फिर हराम महीनों और तमाम दीनी शआइर

के अहतराम का हुक्म दिया और फरमाया कि हर नेकी और तकवा के काम में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज्यादती के कामों में हरगिज किसी की मदद न करो। खाने की जो चीज़ हराम है, उन्हें गिनाया और बताया कि दूसरों के कहने की कोई परवाह न करना। अल्लाह के किये हुए हराम और हलाल की परवाह करो। हराम करदह अशया की तफ़सील यह है : (1) मुरदार जानवर जो तबअई मौत मर गया हो (2) ख़ून जा बहता हुआ हो उसे पीना, खाना जायज़ नहीं। (3) सुअर का गोश्त बल्कि उसकी हर चीज़ हराम है (4) वह जानवर जो खुदा के सिवा किसी और के नाम पर ज़िबह किया गया हो या जिसको ज़िबह करने से पहले यह नियत की गयी हो कि वह फ़लां बुज़ुर्ग या फ़लां देवी देवता की नज़र है। हक़ीक़त यह है कि जानवर हो या गल्ला या कोई और खाने की चीज़ दरअस्ल उसका मालिक सिर्फ़ अल्लाह तआला है और अल्लाह ही ने वह चीज़ हम को अता की है। लिहाज़ा ऐतिराफ़े न्यामत या सदक़ा या नज़रो न्याज़ के तौर पर अगर किसी का नाम लेना यह मआने रखता है कि हम खुदा के बजाय या खुदा के साथ इसकी बालातरी भी तसलीम कर रहे हैं और इसको भी मुनइम समझते हैं (5) वह जानवर भी हराम है जो मुख्तलिफ़ असबाब की बिना पर मर गया हो जैसे गला घोंट कर या चोट खाकर या बुलन्दी से गिर कर या टक्कर खाकर मर गया हो या किसी दरिन्दे ने उसे फाड़ा हो अल्बत्तह जिसे हमने ज़िन्दह पाकर अल्लाह के नाम पर ज़िबह कर दिया हो वह जानवर हलाल है। (6) वह जानवर भी हराम है जो किसी आस्ताने पर ज़िबह किया गया हो इससे मुराद वह सब मक़ामात हैं जिन को गैरूल्लाह की नज़रो न्याज़ चढ़ाने के लिये लोगों ने मख़सूस कर रखा हो ख़्वाह वहां कोई पत्थर या लकड़ी की मूरत हो या न हो। (7) पांसो या फ़ाल-गीरी के ज़रिये जो तक़सीम कर रखा हो वह भी हराम है। मुशरिकाना फ़ालगीरी जिसमें किसी देवी देवता से क़िस्मत का फैसला पूछा जाता है या ग़ैब की ख़बर दरयाफ़त की जाती है या बाहमी निज़ाआत का तसफ़ियह कराया जाता है मुशरिकीने मक्का ने इस ग़रज़ के लिये काबे के अन्दर हुबल देवता को मख़सूस किया था। उसके स्थान में सात तीर रखे हुए थे जिन पर मुख्तलिफ़ अल्फ़ाज़ लिखे हुए थे। किसी काम के करने या न करने का सवाल हो, गुमशुदह का पता लगाना हो, ख़ून का फ़ैसला मतलूब हो, हबल के पांसेदार के पास पहुंच कर नज़राना देते, दुआ मांगते फिर तीरों के ज़रिये फ़ाल निकाला जाता जो तीर भी निकलता उसे हुबल का फैसला समझा जाता। तौहम-परस्ताना फ़ालगीरी जैसे रमल, नुजूम, शुगून, नछर भी हराम है नीज़ जुए की क़िस्म के वह सारे खेल जिनमें इनआमात की तक़सीम हक़ूक़ और ख़िद्मात और अक़ली फैसलों पर रखने के बजाय महज़ इत्तेफ़ाक़ी अम्र (नम्बरात) पर रख दिया जाये जैसे लाटरी, मोअम्मे वग़ैरह। अल्बत्तह क़ुराअन्दाज़ी की सिर्फ़ सादा सूरत इस्लाम में जायज़ है जिस में दो बराबर के जाएज़ कामों या हुक़ूक़ के दरमियान फ़ैसला करना हो। इन तफ़सीलात के बाद फ़रमाया कि अब दीन तुम्हारे लिये मुकम्मल कर दिया गया और अल्लाह ने शरीअत की नेमत तुम पर तमाम कर दी। बस इसी की पैरवी करो।

तरबियत किये हुए शिकारी जानवरों के ज़रिये शिकार, अहले किताब के खाने और उनकी औरतों से निकाह के बारे में अहकाम बताये साथ ही यह क़ैद भी लगाई कि इस इजाज़त से फ़ायदा उठाने वाले अपने ईमान व अख़लाक़ की तरफ़ से होशियार रहना चाहिए कहीं ऐसा न हो कि किताबिया औरत ईमान और इसके किसी तक़ाज़े पर डाका डाल ले।

नमाज़ के लिये वुज़ू का हुक्म और मजबूरी की हालत में तयम्मुम की इजाज़त दी।

बनी इस्राईल से अहद का ज़िक्र किया जब उन्होंने शरीअत की पाबंदी से इनहिराफ़ किया तो अल्लाह ने उन पर लानत की। इसी तरह नसारा से अहद लिया था मगर उन्होंने भी एक हिस्सा भुला दिया। यानी इबादत के नाम से जो रूसूमात हैं उनके नजदीक वो तो दीन का हिस्सा हैं मगर बकिया मामलात जो दुनिया से मुताल्लिक हैं उनमें ख़ुदाई हिदायात के पाबंद नहीं रहे। इस वजह से अल्लाह ने उनके अंदर अना और इख़्तिलाफ की आग भड़का दी। वो आख़िरत तक इसकी सज़ा भुगतेंगे। गोया मुसलमानों को तम्बीह की जा रही है कि वो अहद की पाबंदी करें। अगर वो यहूद व नसारा के रास्ते पर चले तो फिर उनका भी वही अंजाम होगा। इन आयात की रौशनी में हम तारीख़ को देख सकते हैं और अपने ज़वाल के असबाब को भी जान सकते हैं, और इससे निकलने का रास्ता भी पा सकते हैं।

फिर अल्लाह ने बनी इसराईल का वो वाकिया दोहराया कि उसने अपने फ़ज़ल से उन्हे नवाज़ा और फ़तह व नुसरत के वादे के साथ बशारत दी कि फलस्तीन की मुक़द्दस ज़मीन तुम्हारी मुन्तज़िर है जाओ और उस पर क़ब्ज़ा कर लो। मगर क़ौम में बछड़े की पूजा यानी दुनिया परस्ती ने इतनी बुज़दिली पैदा कर दी थी कि वो कहने लगे ''ऐ मूसा तू और तेरा रब जाकर पहले लड़कर फ़तह हासिल कर लें तो हम आ जायेंगे''। इस पर अल्लाह ने 40 साल के लिए उन पर अर्ज़े मुक़द्दस को हराम कर दिया और उन्हें सहरा में भटकरने के लिए छोड़ दिया। यहां मालूम हुआ कि अल्लाह के मुकद्दरात भी कौमों के तरजे-अमल से वाबिस्ता है। मुसलमानों को ताकीद की कि हुद्दे-इलाही पर काइम रहें और शरीअत की पाबंदी को अल्लाह के कुर्ब का जरिया बनाएं। असल अल्फ़ाज़ ये हैं ''ऐ ईमान लाने वालों अल्लाह से डरते रहो और उसके कुर्ब का जरिया तलाश करो'' (ज़रिया यानी वसीला वही है जिसका ज़िक्र अल्लाह ने हब्लिल्लाह के नाम से किया है (अल्लाह की रस्सी) यानी इस्लाम को मजबूती से मिलकर पकड लो और पूरी मुस्तैदी से अल्लाह के अहकाम की पाबंदी करो और खुदा की राह में अपनी कुव्वतें लगा दो। खुदा के अजाब से यही चीज छुटकारा दिलाने वाली है। इसके सिवाय कोई चीज़ नफ़ा नहीं पहुंचायेगी।

चोरी की सज़ा बताई कि चोर का हाथ काट दो और इस सज़ा को बे-रिआयत नाफ़िज़ करो इसकी तफ़सील यह है कि चोरी दस दिरहम से ज़्यादह की हो मामूल चीज़ों के चुराने पर हाथ न काटा जायेगा। (2) अमानत में ख़ियानत किया तो उसके लिये यह सज़ा नहीं है। (3) खाने पीने की चीज़ों की चोरी (4) परिन्दों की चोरी (5) बैतुलमाल से चोरी (6) तरकारियां फल की चोरी में हाथ न काटा जायेगा। इसका मतलब यह नहीं कि बिलकुल सज़ा न दी जायेगी बल्कि क़ाज़ी अपनी सवाबदीद के मुताबिक मुजरिम को सज़ा दे सकता है। अल्बत्तह जो लोग डाकाज़नी करते हैं और खुल्लम खुल्ला खुदा और रसूल से लड़ते हैं (इस्लामी हुकूमत के सालेह निज़ाम से जंग करते हैं) उनकी सज़ा यह है कि उन्हे कत्ल कर दियां जाये। या सूली दे दी जाये या उनके हाथ पांव मुख़ालिफ़ सिमतों से काट दिये जायें या जिलावतन (तड़ीपार) कर दिये जायें। यह रूसवाकुन सज़ा दुनिया में है और आख़रत में उनके लिये उससे बड़ी सज़ा है। अल्बत्ताह पकड़े जाने से पहले वह तौबा करलें तो वह सज़ा से बच सकते हैं। कस्मों को पूरा करने की ताकीद की और अगर (किसी जाइज़ सबब से) क़स्म तोड़नी पड़ जाये तो उसका कफ़फ़ारा अदा करने का हुक्म दिया कि 10 मिस्कीनों को ओसत दर्जे का खाना खिलाओ या उन्हें कपड़े पहनाओ या एक गुलाम आज़ाद करो वर्ना तीन दिन के रोज़े रखो। फिर बताया कि शराब, जुआ, खुदा के सिवाय किसी चीज को इबादत के लिए गढना, ये सब शैतानी काम हैं। ताकि शैतान इन चीजों के जरिये मुसलमानों के दरमियान अदावत और बुग्ज डाल दे और तुम्हें खुदा की याद और नमाज से रोक दे।

नबी (स.) को हिदायत की कि आप बिल्कुल निडर होकर अहले किताब से कह दें कि अगर तुम तौरेत, इन्जील और इस कुरआन को कायम न करो तो फिर अल्लाह के यहां तुम्हारी कोई हैसियत नहीं। खुदा से सिर्फ़ उनको निस्बत हासिल होगी जो ईमान और अमले सालेह से निस्बत काइम करेंगे। ''नसारा के कुफ्र को बयान किया कि उन्होंने ईसा (अ.) की तालीमात के बिल्कुल ख़िलाफ़ हुलूल यानी खुदा के हज़रत ईसा (अ.) और मरियम (अ.) में उत्तर आने और इसी तरह तीन खुदाओं के अक़ीदे गढ़ लिये। इसके बाद हज़रत ईसा (अ.) और मरियम (अ.) का अस्ल मर्तबा ज़ाहिर किया।''

बनी इसराईल पर हज़रत दाउद (अ.) और ईसा (अ.) की लानत का हवाला दिया और बताया कि ये कैसे किताब और ईमान के दावेदार हैं कि मुसलमानों के मुकाबले में बुतपरस्ती करने वाले मुशरिकीने-मक्का को तर्जीह देते हैं और उन्हें बेहतर बताते हैं। यह सब इनकी इस्लाम दुश्मनी है।

क्योंकि आज पढ़ा जाने वाला आख़िरी रूकूअ इससे आगे के रूकूअ की तम्हीद है इसलिए इसका मफ़हूम इन्शाअल्लाह कल के रूकूअ के साथ बयान किया जायेगा।

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ अल्लाह तआला हम सबको कुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये। ''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात

بسم الله الرحمن الرحيم

छठी तरावीह

आज तरावीह में सातवें पारे के छटे रूकूअ से आठवें पारे के सातवें रूकूअ तक की तिलावत की गई।

सूर: माइदा के आखिरी दो रूकूओं में कयामत का नक्शा खींचा गया है। कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम अपनी-अपनी उम्मतों के बारे में शहादत देंगे कि उन्होंने अल्लाह की तरफ़ से लोगों को क्या बातें बताई थीं और अपने मानने वालों से किन बातों के न करने का अहद लिया था ताकि हर उम्मत पर हुज्जत काइम हो सके कि जिसने कोई बद-अहदी की तो उसकी तमाम ज़िम्मेदारी उस पर है, अल्लाह के रसूल (स.) उससे बरी हैं। इस शहादत की नोअयत वाजेह करने के लिए शहादते-हक की जो जिम्मेदारी डाली है वे उसके बारे में जवाबदेह होंगे और उनके वास्ते से उनकी उम्मतों ने अदलो-इंसाफ का निजाम मुआशरे में काइम करने का जो अहद ईमान लाकर किया है उनसे उसके बारे में मालूम किया जायेगा। आखिरत में वही फलाह और कामयाबी के हकदार होंगे जो दुनिया में इस अहद को निभायेंगे और उसकी जिम्मेदारियां पूरी करेंगे।

माइदा के बाद छठी सूरत अनआम शुरू होती है जो मक्की ज़िन्दगी के बिल्कुल आखिरी दौर में उस रात नाज़िल हुई है जब मदीने से अंसार की एक जमाअत हज के लिये आयी हुई थी और आप (स0) ने उनसे पहाड़ों में एक ग़ार में मुलाकात की थी। इस सूरत में शिर्क और मुशरिकीने-मक्का के तोहमात की तर्दीद की गई है, जिसका इज़हार वे खाने पीने की चीज़ों और जानवरों में करते थे। इस्लाम पर उनके एतेराज़ात का जवाब दिया गया है और उन बड़े बड़े अख़लाक़ी उसूलों की तल्क़ीन की गई है जिन पर इस्लाम एक नई सोसायटी बनाना चाहता है। इन उसूलों की पैरवी को सिराते मुस्तक़ीम क़रार दिया गया है जिसकी दुआ सूर: फ़ातिहा पढ़ते वक्त बंदे करते हैं। फ़रमाया तमाम तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने ज़मीन और आसमान बनाए : रोशनी और तारीकियां पैदा कीं, फिर भी लोग दूसरों को उसका हमसर ठहरा रहे हैं। वही तो है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया है फिर तुम्हारे लिये ज़िन्दगी की एक मुद्दत मुक़र्रर कर दी और एक दूसरी मुद्दत और भी है जो उसके यहां तय शुदा है यानी कयामत की घड़ी, जब इस दुनिया में इख्तियार किये हुए तरजे-अमल का हिसाब लिया जायेगा और फैसला कर दिया जायेगा।

क्या उन्होंने देखा नहीं कि उनसे पहले कितनी ऐसी कौमें हमने हलाक कर डालीं जिनका अपने अपने ज़मानों में दौर रहा है। उनको तो हमने ज़मीन में इक्तिदार बख़्शा था जो तुम्हें नहीं बख़्शा है। पहले हमने उन पर आसमान से ख़ूब निअमतें उतारीं मगर जब उन्होंने कुफ़राने निअमत किया तो आखिरकार हमने उनके गुनाहों की सज़ा में उन्हें तबाह कर दिया और उनकी जगह दूसरी क़ौमों को उठाया।

काश तुम उस वक़्त की हालत अभी देख सकते जब ये मुशरिकीन दोज़ख़ के किनारे खड़े किये जायेंगे, उस वक़्त वे कहेंगे काश कोई सूरत ऐसी हो जाती कि हम दुनिया में फिर वापस भेज दिये जाते और अपने रब की निशानियों को न झुठलाते और ईमान लाने वालों में शामिल हो जाते। दर हक़ीक़त यह बात इस वजह से कहेंगे कि जिस हक़ीक़त पर उन्होंने पर्दा डाल रखा था वह उस वक़्त बेनक़ाब होकर उनके सामने आ चुकी होगी वरना अगर उन्हें पिछली ज़िंदगी की तरफ़ यानी दुनिया में वापिस भेजा जाये तो वह फिर वही सब कुछ करें जिससे उन्हें मना किया गया है। नुक्सान में पड गये वे लोग जिन्होंने यह समझा कि जिंदगी जो कुछ भी है बस यही जिंदगी है और अल्लाह के सामने अपनी पेशी की इत्तिला को उन्होंने झूठ करार दिया। जब अचानक वह घडी आ जायेगी तो उनका यह हाल होगा कि अपनी पीठों पर हमने गुनाहों का बोझ लादे होंगे। देखो क्या बुरा बोझ है जो यह उठाये हुए हैं। दुनिया की जिंदगी तो एक खेल और तमाशा है हकीकत में आखिरत का मुकाम ही उन लोगों के लिए बेहतर है जो जियांकारी से बचना चाहते हैं। फिर क्या तुम लोग अक्ल से काम नहीं लोगे? लोग अल्लाह से निशानिया मांगते हैं ज़मीन पर चलने वाले किसी जानवर और हवा में उड़ने वाले किसी परिंदे को देख लो, यह सब तुम्हारी ही जिंस है। यह सब अपने रब की तरफ़ समेटे जाते हैं तुम भी उन्हीं की तरह अपने रब की तरफ़ समेटे जाओगे। यानी

जिस तरह दिन भर चरने, चुगने और उड़ते रहने के बावजूद शाम को यह सब अपने मुक़र्ररा घरों को लौट आते हैं उसी तरह तुम अपनी ज़िंदगी दुनिया में बसर करके अल्लाह ही की तरफ़ लौट जाते हो, जहां तुम्हारा हमेशा-हमेशा का ठिकाना है। मगर जो लोग हमारी निशानिया झुठलाते हैं वो बहरे और गूंगे और तारीकियों में पड़े हुए हैं। ए नबी (स.) उनसे पूछो कभी तुमने यह भी सोचा कि अगर अल्लाह तुम्हारी देखने और सुनने की ताक़त तुमसे छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तो अल्लाह के सिवा कौन सा ख़ुदा है जो ये कुव्वतें वापिस दिला सकता हो। **हमने जो रसूल भेजे हैं, इसीलिए तो भेजे हैं कि वह नेक किरदार लोगों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाले और बद-किरदारों के लिए डराने वाले हों। ऐ-नबी (स.) उनसे कहें मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं न मैं गैब का इल्म रखता हूं और न यह कहता हूं कि मैं फरिश्ता हूं। मैं तो सिर्फ उस वही की पैरवी करता हूं जो मुझ पर** नाज़िल की जाती है। फिर उनसे पूछो क्या अंधा और आंखो वाला दोनों बराबर हो सकते हैं? क्या तुम इतना भी ग़ौर नहीं करते?

ए-नबी (स.)! जब तुम्हारे पास वह लोग आएं जो हमारी आयात पर ईमान लाते हैं तो उनसे कहो- तुम पर सलामती है। "तुम्हारे रब ने रहमोकरम का शेवा अपने उपर लाजिम कर लिया है। यह उसका रहमोकरम ही है कि अगर तुम में से कोई नादानी के साथ कोई बुराई कर बैठा हो, फिर उसके बाद तौबा करे और इस्लाह कर ले तो वह उसे माफ फ़रमा देता है और नर्मी से काम लेता है।"

शिर्क की तरदीद में हज़रत इब्राहीम (अ.) का वाक़्या बयान किया गया है कि किस तरह उन्होंने सितारा परस्ती की तरदीद की। फ़रमाया कि जो छुप जाये और ज़वाल पज़ीर हो वह कभी ख़ुदा नहीं हो सकता। **मेरा ख़ुदा तो वही है जिसने ज़मीन व आसमान को पैदा किया है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं** अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तज़किरे के बाद फ़रमाया नबूवत का सिलसिला काफ़ी दराज़ है। हमने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इसहाक़ अलैहिस्सलाम और अययूब अलैहिस्सलाम जैसी औलाद दी और हर एक को राह-रास्त दिखायी। नूह अलैहिस्सलाम फिर उनकी नस्ल से दाउद, सुलेमान, अय्यूब, यूनुस, मूसा व हारून, ज़करिया, यहया, ईसा, इलयास, इस्माईल, यसा, यूनुस, लूत अलैहिमुस्सलाम अजमईन। इन सभी को अल्लाह ने हिदायत बख़्शी उन्हें नबूवत से सरफ़राज़ फ़रमाया। तमाम दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी नीज़ उनके आबाओ-अजदाद उनकी औलाद और भाई बन्दों में से बहुतों को नवाज़ा। उन्हें दीन के लिये चुन लिया। सीधे रास्ते की तरफ़ उनकी रहनुमाई की। अल्लाह यह हिदायत अपने जिस बन्दे को चाहता है इनायत फ़रमाता है मगर कुफ़्रो शिर्क इतना बड़ा गुनाह है कि अगर यह मुक़र्रब बन्दे भी अल्लाह के साथ शिर्क करते तो इनके सारे आमाल अकारत हो जाते। लिहाज़ा यह काफ़िर व मुशरिक लोग अल्लाह की इस हिदायत को कुबूल करने से इनकार करते हैं तो कर दें। हमने अहले ईमान में एक गिरोह ऐसा पैदा कर दिया है जो इस न्यामत की क़द्र करने वाला है। यह तमाम अम्बियां अल्लाह की तरफ़ से हिदायत याफ़ताह थे। ऐ नबी (स0) आप उन्हीं के रास्ते पर चलिये और कह दीजिये मैं तुम से किसी अज्र का तालिब नहीं हूं। यह कुरआन तो एक नसीहत और हिदायत है। तमाम दुनिया वालों के लिये। ऐ नबी (स0)! कह दीजिये "देखो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से बसीरत की रौशनियां आ गई हैं। अब जो बीनाई से काम लेगा, अपना भला करेगा और जो अंधा बनेगा खुद नुक़सान उठाएगा, में तुम पर कोई पासबान नहीं हूं" मुशरिकीन के अपने हलाल व हराम क़रार दिये हुए जानवरों और तोहमात का ज़िक्र करके उनकी बेअक़्ली को वाज़ेह किया और जो कुछ अल्लाह ने हराम और हलाल किया है उसे बताया और ऐलान किया कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये हज़िन्दगी का क्या तरीक़ा उतारा है जिस पर चलना ही सीधी राह पर चलना है। फ़रमाया

ऐ-नबी (स.)! उनसे कहो, आओ मैं तुम्हें सुनाउं तुम्हारे रब ने तुम्हें किन बातों का पाबंद किया है कि

(1) उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ। (2) वालिदेन के साथ नेक सुलूक करो। (3) अपनी औलाद को मुफलिसी के डर से कत्ल न करो, हम तुम्हें भी रोजी देते हैं और उनको भी देंगे। (4) बेशर्मी की बातों के करीब भी न जाओ ख़्वाह वे खुली हों या छुपी। (5) किसी जान को जिसे अल्लाह ने मोहतरम ठहराया है हलाक न करो, मगर हक के साथ यानी (कानून के मुताबिक) (6) यतीम के माल के करीब न जाओ मगर ऐसे तरीके से जो बेहतरीन है यहां तक कि वह उस उम्र को पहुंच जाये कि भले बुरे में तमीज करने लगे। (7) नाप-तौल में पूरा इंसाफ करो, हम हर शख़्स पर बोझ डालते हैं जो उसके इम्कान में हो (8) जब बात कहो तो इंसाफ की कहो, ख़्वाह मामला अपने रिश्तेदार ही का क्यों न हो

(९) अल्लाह के अहद को पूरा करो।

इन बातों की हिदायत अल्लाह ने तुम्हें की है शायद कि तुम नसीहत क़ुबूल करो और यह भी उसकी हिदायत है कि यही मेरा सीधा रास्ता है। लिहाज़ा तुम इस पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो। वह तुम्हें उसके रास्ते से हटाकर परागंदा कर देंगे। दाने और गुठली को फाड़ने वाला अल्लाह है वही ज़िन्दह को मुर्दह और मुर्दह को ज़िन्दह से निकालता है। सारे काम करने वाला जो अल्लाह है फिर तुम किधर बहके जा रहे हो। रात के परदे को चाक करके वही सुबह निकालता है उसी ने रात को सुकून का वक़्त बनाया। उसने चांद और सूरज के तुलूअ ओर गुरूब का हिसाब मुक़र्रर किया है और वही हे जिसने तुम्हारे लिए तारों को सहरा और समन्दर की तारीकियों में रास्ता मालूम करने का ज़रिया बनाया है और वही है जिसने एक मुतनफ़्फ़िस से तुम को पैदा किया फिर हर एक के लिये जाये करार है और एक सोंपे जाने (यानी मरने) की जगह है। फिर वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया फ़िर उसके ज़रिये हर किस्म की नबातात उगाई। उसने हरे भरे खेत और दरख़्त भी उगाये उनसे तह ब तह चढ़े हुए दाने निकाले और खजूर के शगूफ़ों से पलों के गुच्छे के गुच्छे पैदा किये जो बोझ से झुके पड़ते हैं। अंगूर, जैतून और अनार के बाग़ लगाये जिनके फल एक दूसरे से मिलते जुलते हैं और फिर भी हर एक की खुसूसियत जुदा जुदा है। इन चीज़ों में निशानियां हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं। इस पर भी लोगों में जिनों को अल्लाह का शरीक ठहरा दिया है हालाकि वह उनका ख़ालिक़ है और बेजाने बूझे अल्लाह के लिये बेटियां और बेटे गोद लिये हैं हालाकि पाक व बालातर है वह इन बातों से जो यह लोग कहते हैं। वह आसमान व ज़मीन का मूजिद है उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई शरीके ज़िंदगी ही नहीं। उसने हर चीज़ को पैदा किया और हर चीज़ का इल्म रखता है। यह है अल्लाह! तुम्हारा रब कोई ख़ुदा उसके सिवा नहीं। हर चीज़ का खालिक लिहाज़ा तुम उसकी बन्दगी करो। निगाहें उसको नहीं पा सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है। वह निहायत बारीक बीन और बाख़बर है।

आएत 108 में मुसलमानों से कहा गया है कि यह लोग (मुशरिकीन) अल्लाह के सिवा जिनको पुकारते हैं उन्हें गालिया न दो ऐसा न हो कि यह शिर्क से आगे बढ़कर जिहालत की बिना पर अल्लाह को गालियां देने लगें गोया मुसलमान तबलीग़ के जोश में ऐसे बेकाबू न हो जायें कि मुनाज़रे और तकरार से बढ़कर गैर मुस्लिमों के अकाएद पर हमले करने लगें और उनके पेशवाओं और माबूदों को गालियां देने लगें। इसका नतीजा यह होगा कि वह भी नादानी में अल्लाह को गालियां देंगे। यह चीज़ उनको हक़ से करीब लाने के बजाये और ज़्यादा दूसर फेंक देगी। माबूदाने बातिल को गालियां देना मुसलमानों को ज़ेब नहीं देता। हदीस मे रसूल (स.) ने फ़रमाया बदतरीन शख़्स वह है जो अपने मां बाप को गाली दे। सहाबह कराम रज़ी अल्लाहु अन्हुम ने पूछा कोई शख़्स भला अपने मां बाप को गाली कैसे देगा। फ़रमाया वह किसी ग़ैर के मां बाप को गाली देता है तो जवाब में उसके मां-बाप को गाली मिलती है। गोया वह खुद अपने मां बाप (वाल्देन) को गाली देने का सबब बना। यही मुआमला मुशरिकीन के खुदाओं को बुरा भला या गाली देने का है। जिससे हम मुसलमानों को मना किया गया है।

सूरत ख़त्म करते ही फ़रमाया, कह दीजिये मेरे रब ने बिलयक़ीन मुझे सीधा रास्ता दिखा दिया है बिलकुल ठीक दीन जिसमें कोई टेढ़ नहीं। इब्राहीम (अ.) का तरीक़ा जिसे यकसू हो कर उसने इख़्तियार किया था और वह मुशरिकों में से न था। कह दीजिये . **मेरी नमाज, मेरे मरासिमे-उबूदियत मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। जिसका कोई शरीक नहीं , इसी बात का मुझे हुक्म दिया गया है और सबसे पहले सरे-इताअत झुकाने वाला मैं हूं। कह दीजिए....** क्या अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करू। हालांकि हर चीज़ का रब वही है। हर शख़्स जो कुछ कमाता है उसका ज़िम्मेदार वह खुद है। कोई बोझ उठाने वाला दूसरों का बोझ नहीं उठाता। फिर तुम सबको अपने रब की तरफ़ पलटना है। उस वक़्त वो तुम्हारे इख़्तिलाफ़ात की हकीक़त तुम पर खोल देगा।

वही है जिसने **तुमको जमीन का खलीफा बनाया और तुममें से बाज को बाज के मुकाबले में ज्यादा बुलंद दर्जे दिये ताकि जो कुछ तुमको दिया है उसमें तुम्हारी आजमाइश करे। बेशक तुम्हारा रब सजा देने में भी तेज है और बहुत दरगुजर करने वाला और रहम फरमाने वाला भी है।**

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये। "आमीन"

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



सातवीं तरावीह

आज आठवें पारे के आठवें रूकूअ से नवें पारे के चौदहवें रूकूअ तक सूरे ''अल-आराफ़'' मुकम्मल तिलावत की गई।

सबसे पहले हुज़ूर (स.) को तसल्ली दी कि इस किताब से मुताल्लिक तमाम तुम्हारी ज़िम्मेदारी सिर्फ इतनी है कि इसके ज़रिए लोगों को खबरदार कर दो ताकि अल्लाह की हुज्जत उन पर तमाम हो जाए। तुम पर यह ज़िम्मेदारी नहीं है कि लोग उसको कुबूल भी कर लें। हकीकत में इस किताब से फ़ायदा तो एहले ईमान ही उठायेंगे। सबको तम्बीह की कि एक दिन ऐसा ज़रूर आने वाला है जब तुम से तुम्हारी ज़िम्मेदारियों की बाबत् पूछा जायेगा और रसूलों से उनकी ज़िम्मेदारियों के मुताल्लिक़। उस दिन जो इंसाफ़ की तराज़ू क़ाइम की जायेगी वह हर एक के आमाल को तौल कर बता देगी कि किसके पास कितना हक़ है और कितना बातिल। उस रोज़ फ़लाह सिर्फ़ वही पाऐंगे जिनके पलड़े भारी होंगे बाकी सब नामुराद होंगे। बल्कि बिलकुल दीवालिया!

क़ुरैश को और उनके ज़रिये सबको आगाह किया कि तुम्हे जो इक्तिदार हासिल हुआ है वह ख़ुदा का बख्शा हुआ है। उसी ने तुम्हारे लिये ज़िन्दगी और उसका सामान पैदा किया है। लेकिन शैतान ने तुम पर हावी होकर तुमको नाशुक्री की राह पर डाल दिया है। आदम (अ.) व इबलीस का वाक्या बयान कर के वाज़ेह किया कि जिस तरह उसने आदम ओर हव्वा को धोखा देकर जन्नत से निकलवा दिया था, उसी तरह उसने अपना फ़रेब चला कर तुम्हें भी फंसा लिया है तुम उसके चकमों में आकर उसकी उम्मीदें पूरे करने का सामान मत करो। ख़ुदा ने हर मामले में हक और इन्साफ का हुक्म दिया है अपनी इबादत का हुक्म दिया और तौहीद का हुक्म दिया। शैतान बेहयाई का रास्ता दिखाता है। और तुमने उस की पैरवी में अपने आप को फित्नों में मुब्तिला कर लिया है और दावा करते हो कि यही सीधी राह है। ख़ुदा ने बेहयाई को, लोगों के हुकूक़ मारने और सरकशी करने को, शिर्क और अल्लाह का नाम लेकर दिल से हराम हलाल बना लेने को हराम ठहराया है लेकिन आज तुम यह सब हरकतें कर रहे हो। अगर इसके बावजूद तुम्हें मोहलत मिल रही है तो इसकी वजह यह है कि ख़ुदा के यहां हर उम्मत की तबाही के लिए एक वक्त मुक़र्रर है।

ख़ुदा ने फ़रमाया ऐ औलादे आदम हम ने तुम पर लिबास नाज़िल किया है जो कि तुम्हारे जिस्म के काबिले शर्म हिस्सों को ढांके और तुम्हारे लिये जिस्म की हिफ़ाज़त और ज़ीनत का ज़रीआ भी है। और बहतरीन लिबास तक़वे का लिबास है यह अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है शायद लोग इससे सबक़ लें। ऐ बनी आदम ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें फिर उसी तरह फ़ितनें में मुबतला कर दे जिस तरह उसने तुम्हारे वालदेन को जन्नत से निकलवाया था और उनके लिबास उन पर से उतरवा दिये थे ताकि उनकी शर्मगाहें एक दूसरे के सामने खोलें। वह और उसके साथी तुम्हें ऐसी जगह से देखते हैं जहां से तुम उन्हें नहीं देख सकते।

ऐ औलादे आदम हर इबादत के मौक़े पर अपनी ज़ीनत से आरासतह रहो और खाओ पियो, हद से तजाउज़ न करो। अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता। ऐ नबी (स.) उनसे कह दो किस ने अल्लाह की इस ज़ीनत को हराम कर दिया है जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों के लिये निकाला (बनाया) था और किस ने ख़ुदा की बख्शी हुई पाक चीज़ें ममनूअ कर दीं। कहो ये सारी चीज़े दुनिया की ज़िन्दगी में भी ईमान लाने वालों के लिये हैं और क़यामत के रोज़ तो ख़ालिसह उनही के लिये होंगी (क्योंकि वही वफ़ादार हैं।) इस तरह हम अपनी बातें साफ़ साफ़ बयान

करते हैं। उन लोगों के लिये जो इल्म रखने वाले हैं। ऐ नबी (स.) उनसे कहो मेरे रब ने जो चीज़ें हराम की हैं वह यह हैं। बेशर्मी के काम ख़्वाह खुले हों या छिपे और गुनाह और हक़ के ख़िलाफ़ ज्यादती और यह कि अल्लाह के साथ तुम किसी को शरीक करो जिसके लिये उसने कोई सनद नाज़िल नहीं की और यह कि अल्लाह के नाम पर कोई ऐसी बात कहो जिसके मुताल्लिक़ तुम्हे इल्म न हो (कि वह हक़ीक़त में उसी ने फ़रमाई है या नहीं)

मुक़ाम-ए-आराफ़, जो जन्नत और दोज़ख़ दोनों के दरम्यान एक उंची जगह होगी, एक गिरोह को दोज़ख़ और जन्नत दोनों का मुशाहिदा कराया जायेगा ताकि वह देख लें कि ख़ुदा ने रसूलों के ज़रिये जिन बातों की ख़बर दी थी वह सब पूरी हुई। आराफ़ वाले जन्नत वालों को मुबारकबाद देंगे और अहले दोज़ख़ को मलामत करेंगे। एहले दोज़ख़ एहले जन्नत से दरख़्वास्त करेंगे कि वे उन पर कुछ करम करें और उन पर थोड़ा सा जन्नत का पानी डाल दें ओर जो रिज़्क़ उन्हें मिला है, उसमें से कुछ उन्हें भी दे दें। एहले जन्नत जवाब देंगे कि अल्लाह ने दोनों चीज़ें क़ुरआन का इन्कार करने वालों पर हराम कर दी हैं। अल्लाह की तरफ़ से ऐलान होगा "जिन्होंने दुनिया में ख़ुदा की बातों को नजरअन्दाज कर दिया था आज ख़ुदा ने उनको नजरअन्दाज कर दिया है। कुफ़्फ़ार अपनी बदबख़्ती और महरूमी पर अफ़सोस और हसरत के सिवा कुछ न कर सकेंगे।

इस बात से आगाह किया गया कि पैदा करना और लोगों को हुक्म देना कि क्या करें, क्या न करें, सब ख़ुदा का हक़ है। बस उम्मीद हो या ना-उम्मीदी, हर हालत में उसी को पुकारो, जमीन में वह काम न करो जिससे फ़साद फैले, कयामत जरूर आनी है, मौत के बाद ज़िन्दगी का मुशाहिदा तुम खुद इस दुनिया में बराबर कर रहे हो कि वह मुर्दा ज़मीन को बारिश से ज़िन्दा कर देता है। ख़ुदा ने तो हर पहलू से अपनी निशानियां वाज़ेह कर दी हैं।

नूह (अ.), हूद (अ.), सालेह (अ.), लूत (अ.) और शुएब (अ.) की कौमों के हालात सुनाए। यह इस बात का तारीख़ी सुबूत है कि जो क़ौमें ज़मीन पर फ़साद फैलाती हैं और अपने रसूल को झुठला देती हैं, अल्लाह तआला आख़िरकार उन्हें मिटा देता है। ज़ालिम कौमों को तबाह करने का ख़ुदा का क्या तरीक़ा है, उसे तफ़सील से बताया कि कभी ऐसा नहीं हुआ कि हमने किसी बस्ती में नबी भेजा और उसी बस्ती के लोगों को पहले तंगी और सख़्ती में मुब्तिला न किया हो। इस ख़्याल से कि शायद वे आजिज़ी इख़्तियार करें। फिर हमने उनकी बदहाली को ख़ुशहाली में बदल दिया। यहां तक कि वे ख़ूब फले फूले और कहने लगे कि हमारे पिछलों पर भी अच्छे बुरे दोनों वक़्त आते रहे हैं। आख़िर कार हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया। अगर बस्तियों के लोग ईमान लाते और ख़ुदा-ख़ौफी की रविश इख़्तियार करते तो हम उन पर आसमान से और जमीन से बरकतों के दरवाजे खोल देते। मगर उन्होंने झुठला दिया। क्या आज के लोग इससे बेख़ौफ़ हो गये हैं कि हमारी पकड़ अचानक उन पर रात के वक़्त जब वे सो रहे हों या दिन के वक़्त जब वह अपने खेल में मसरूफ़ हों, नही आ जाएगी? अल्लाह की पकड़ से वही क़ौम बेख़ौफ़ होती है जो तबाह होने वाली हो।

ह0 मूसा (अ.) और फ़िरऔन की सरगुज़श्त बयान की कि फ़िरऔन ने हज़रत मूसा (अ.) को शिकस्त देने के लिये तमाम हथकन्डे इस्तेमाल किये जो उसके इख़्तियार में थे। उसने जादूगरों को इकठ्ा कया बनी इसराईल के बेटों को क़त्ल किया। बेटियों को लौडिया बनाया और ज़बर्दस्त इक़्तिदार का मुज़ाहिरा किया। मगर अंजाम क्या हुआ? हमने ऐसा इन्तिक़ाम लिया कि लाओ-लश्कर के साथ समन्दर में ग़र्क़ कर दिया और जिन लोगों को कमज़ोर बना कर रखा गया था उनको मश्रिक़ और मग़रिब का बादशाह बना दिया। सूरत के ख़ात्मे पर लोगों को उनका एहदे-फ़ितरत याद दिलाया है।

और ऐ नबी (स.)! लोगों को याद दिलाओ वह दिन जबकि तुम्हारे रब ने बनी आदम की पुश्तों से उनकी नस्ल को निकाला था और पूछा था "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? उन्होंने कहा था जरूर तू ही हमारा रब है हम इस पर गवाही देते हैं'' अल्लाह तआला फरमाता है क्या इस ऐलान को भूल गए जो दूसरों को ख़ुदाई में शरीक ठहराने लगे हो। बताना यह मक़सद है कि हर इन्सान फ़ितरी तौर पर अल्लाह के रब होने

को जानता हे तो फिर उसके अहकाम के ख़िलाफ़ चलने की ग़लती क्यों करता है। अस्ल वजह नफ्स परस्ती है और नफ्स के पीछे चलने वालों को अल्लाह ने कुत्ते से तशबीह दी है जिसकी जबान हर वक्त लटकती रहती है। (यानी भूख और जिन्सी ख्वाहिश, इन्ही दो चीजों से उसे सब से ज्यादा दिलचस्पी है) मेरे भाइयों और बहनों! अल्लाह ने इस मिसाल में मगरिबी तहजीब की पोल खोल दी है। इसके शैदाइयों की भी यही मिसाल है। अल्लाह हमें और हमारी नस्लों को इससे महफूज रखे। (आमीन)

हक़ीक़त यह है कि बहुत से जिन और इन्सान जहन्नुम के लिये पैदा किये गये हैं क्योंकि उनके पास दिलो दिमाग़ है मगर वह सोचते नहीं है। उनके पास आंखे हैं मगर वह देखते नहीं या देखना नहीं चाहते। उनके पास कान हैं मगर वह उनसे सुनते नहीं ऐसे लोग जानवरों की तरह हैं। बल्कि जानवरों से भी बद्तर हैं, क्योंकि जानवर तो इन सलाहियतों से महरूम है जो इनसानों को दी गई इतना सब देने के बाद भी अगर इन्सान ख़ुदा की नाफ़रमानी करे तो वह जहन्नुम ही के लायक़ है कि वह दिलो दिमाग़, आंख और कान सब कुछ होते हुए उनका सही इस्तेमाल नहीं करता ऐसे लोग हद दर्जेह ग़ाफ़िल है।

हक़ीक़त यह है कि वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी की जिन्स से उसका जोड़ा बनाया ताकि वह उसके पास सुकून हासिल करे। फिर जब औरत बोझल हो गई तो मर्द व औरत दोनों ने मिलकर अल्लाह से दुआ की कि अगर तूने हमको एक अच्छा सा बच्चा दिया तो हम तेरे शुक्रगुज़ार होंगे। मगर जब अल्लाह ने उनको एक सहीह व सालिम बच्चा दे दिया तो उसकी बख़्शिश व इनायात में दूसरों को शरीक ठहराने लगे कि यह तो फ़लां ने दिया है। कैसे नादान हैं ये लोग कि उनको ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं जो किसी चीज को भी पैदा नहीं करते। बल्कि खुद पैदा किये जाते हैं। जो न उनकी मदद कर सकते हैं और न आप ही अपनी मदद पर क़ादिर हैं। जिन लोगों को तुम ख़ुदा का शरीक समझते हो अगर तुम उन्हें सीधी राह पर आने की दावत दो तो वह तुम्हारे पीछे न आयें तुम ख़्वाह उन्हें पुकारो या ख़ामोश रहो दोनों सूरतों में तुम्हारे लिये यकसां ही रहेंगे। तुम लोग ख़ुदा को छोड़कर जिन्हें पुकारते हो वह महज़ बन्दे हैं जैसे तुम बन्दे हो इनसे दुआएं मांग कर देखो यह तुम्हारी दुआओं का जवाब दें। अगर इनके बोर में तुम्हारे ख़यालात सही हैं। क्या यह पांव रखते हैं कि उनसे चलें? क्या यह हाथ रखते हैं कि उनसे पकड़ें? क्या यह आंखे रखते हैं कि उनसे देखें? क्या यह कान रखते हैं कि उनसे सुनें? फिर भी ऐ नबी (स.)! नर्मी और दरगुजर का तरीका इख्तियार कीजिए नेकियों की तलकीन किये जाइये और जाहिलों से न उलझिये। अगर शैतान इश्तिआल दिलाये तो अल्लाह की पनाह मांगिये। वह सब कुछ सुनने और जानने वाला है।

तबलीग़ की हिकमत बयान करने और मुख़ालिफ़ीन की ज़्यादतियों का मुकाबला सब्र और ज़ब्त से करने के बाद अल्लाह से ताल्लुक़ बढ़ाने के लिए नसीहत की कि "अपने रब को सुबह और शाम याद करो, दिल ही दिल में गिरिया व जारी और खौफ के साथ और जबान से हल्की आवाज के साथ तुम उन लोगों में से न हो जाओ जो गफलत में पडे हुए हैं। जो फरिश्ते तुम्हारे रब के हुजूर तकर्रुब का मुकाम रखते हैं, वह कभी अपनी बड़ाई के घमंड में आकर उसकी इबादत से मुंह नहीं मोडते और उसकी तस्बीह करते हुए उसके आगे झुके रहते हैं। बस उन्ही का तरीका इख्तियार करो"। इस आयत पर अमल करते हुए सजदाए-तिलावत किया जाता है।

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।
❖ अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।
❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

"आमीन"

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात

بسم الله الرحمن الرحيم

आठवीं तरावीह

आज की तरावीह में नवें पारे के पंद्रहवें रूकूअ से दसवें पारे के सत्रहवें रूकूह तक तिलावत की गई।

यह तरावीह सूरत-ए-अन्फ़ाल से शुरू होती है। इसमें अल्लाह तआला ने जंगे बदर पर तब्सिरा फ़रमाया है। यह पहली जंग है जो कुफ़्फ़ारे मक्का और मुसलमानों के दरम्यान सत्रह रमज़ान सन् 02 हिजरी में बद्र के मुकाम पर लड़ी गई। इसका पस मंज़र यह था कि मदीना तैयबा में हुजूर (स.) के आ जाने के बाद मुसलमानों को एक मरकज़ मिल गया था पूरे अरब से मुसलमान जो वहां के कबीलों में थे यहां आकर पनाह ले रहे थे और मक्का से भी बड़ी तादाद में हिजरत करके यहां आए थे। इस तरह मुसलमानों की मुन्तशिर कुव्वत एक जगह जमा हो गई थी और कुरैश के लिए यह बात सख्त नागवार थी कि मुसलमान इसी तरह एक बड़ी ताकत बन जाएं चुनांचे उन्होंने फ़ैसला किया कि अपने एक तिजारती काफ़िले की हिफ़ाज़त के बहाने मदीने पर हमला आवर हो जायें और मुसलमानों की मुठ्ठी भर जमाअत का ख़ात्मा कर दें।

इन संगीन हालात में सत्रह रमज़ान को बद्र के मुकाम पर मुकाबला हुआ हुजूर (स0) ने देखा कि तीन काफ़िरों के मुकाब्ले में एक मुसलमान है और वह भी पूरी तरह मुसल्लह नहीं तो खुदा के आगे दुआ के लिए हाथ फैलाए और इन्तिहाई खुशू व खुजू से अर्ज़ करना शुरू किया।

''ऐ अल्लाह! यह कुरैश हैं जो अपने सामने-गुरूर के साथ आए हैं ताकि तेरे रसूल (स0) को झूठा साबित करें। **खुदावन्द! बस आजाए तेरी वह मदद जिसका तूने मुझसे वादा किया था। ऐ खुदा! अगर आज यह मुठ्ठी भर जमाअत हलाक हो गई तो रू-ए-जमीन पर फिर तेरी इबादत न होगी''।**

आखिरकार खुदा की तरफ़ से मदद आ गई और कुरैश अपने सारे अस्लहा और ताकत के बावजूद उन बे-सरोसामान जांनिसारों के हाथों शिकस्त खा गए। काफ़िरों के सत्तर आदमी मारे गए और सत्तर कैदी बनाए गए। बड़े बड़े सरदारों और अबू जहल का ख़ात्मा हो गया और काफ़िरों का सारा सामान माले गनीमत के तौर पर मुसलमानों के हाथ आया।

अल्लाह तआला ने इस जंग और इसके हालात पर तब्सिरा फ़रमाते हुए फ़ख्र का इजहार करने के बजाए मुसलमानों की कमज़ोरियों की निशानदेही की और बताया कि इस फ़तह में अल्लाह की ताईद-ओ-नुसरत का कितना बड़ा हाथ था। फ़रमाया! जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे जवाब में उसने फ़रमाया कि मैं तुम्हारी मदद के लिए एक हज़ार फ़रिश्ते पे-दर-पे भेज रहा हूं। **बस हकीकत यह है कि तुमने उन्हें कत्ल नहीं किया। अल्लाह ने उन्हें कत्ल किया। और मोमिनों के हाथ जो इस काम में इस्तेमाल हुए तो यह इसलिए था कि अल्लाह मोमिनों को एक बेहतरीन आजमाइश से कामयाबी के साथ गुजार दे।** ऐ ईमान वालों अल्लाह और रसूल (स0) की फ़रमाबरदारी करो और हुक्म सुनने के बाद उससे सरताबी न करो उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कहा हमने सुना। हालांकि वह नही सुनते। यकीनन खुदा के नज़दीक बदतरीन किस्म के जानवर वह बहरे गूंगे इन्सान हैं जो अक़्ल से काम नहीं लेते अगर अल्लाह को मालूम होता कि इनमें कुछ भी भलाई है तो वह ज़रूर उन्हें सुनने की तौफ़ीक़ देता। (लेकिन भलाई के बग़ैर) अगर खुदा उनको सुनवाता तो वह बेरूखी के साथ मुंह फेर जाते।

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल (स0) की पुकार पर लब्बैक कहो, जबकि उसका रसूल (स0) तुम्हें उस चीज की तरफ बुलाए जो तुम्हे जिन्दगी बख्शने वाली है यानी जिहाद, और बचो उस फित्ने से जिसकी शामत खास तौर पर सिर्फ उन ही लोगों तक महदूद नहीं रहेगी जिन्होंने तुम में से गुनाह किया हो। और जान रखो कि अल्लाह सख्त सजा भी देने वाला है।

मक्के का वह वक्त भी याद करने के काबिल है जब कि मुनकिरीन हक़ तुम्हारे खिलाफ़ तदबीरें सोच रहे

थे कि तुम को कै़द कर दें, या क़त्ल कर डालें या ज़िला वतन कर दें। वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह अपनी तदबीर फ़रमा रहा था। और अल्लाह सबसे बेहतर तदबीर फरमाने वाला है। उस वक़्त वे यह बात भी कह रहे थे कि खुदाया! अगर वाक़ई हक़ यह है और तेरी तरफ़ से है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या कोई और अज़ाब ले आ!'' उस वक़्त तो अल्लाह उन पर अज़ाब लाने वाला नहीं था क्योंकि तुम उनमें मौजूद थे। यह अल्लाह का कायदा नहीं है कि उससे अस्तगफार करने वाले मौजूद हों और वह उनको अजाब दे दे। लेकिन अब क्यों न वह उन पर अज़ाब नाज़िल करे जबकि वह मस्जिदिल-हराम का रास्ता रोक रहे हैं। हालांकि वे इस मस्जिद के जायज़ मुतवल्ली नहीं। इसके जायज मुतवल्ली तो सिर्फ एहले तकवा ही हो सकते हैं। ऐ ईमान वालो! इन काफिरों से जंग करो यहां तक कि फितना बाकी न रहे और दीन पूरे का पूरा अल्लाह के लिए हो जाए फिर अगर वे फित्तने से रूक जाएं, तो अल्लाह उनके आमाल देखने वाला है और अगर न मानें तो जान रखो कि अल्लाह तुम्हारा सरपरस्त है और वह बेहतरीन मददगार है।

इस मौके़ पर यह भी वाज़ेह किया गया कि माले-ग़नीमत हक़ीक़त में लड़ने वालों का ज़ाती माल नहीं है बल्कि अल्लाह का इनाम है। इसलिए अपनी मर्ज़ी से इसके मालिक मत बनो चुनांचे उसका पांचवा हिस्सा अल्लाह, उसके रसूल (स) और उसके रिश्ते दारों, यतीमों, मिस्कीनों, कमज़ोरों व मुसाफ़िरों के लिए है। बाक़ी चार हिस्से जंग में हिस्सा लेने वालों के लिए हैं। ऐ ईमान वालों! जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुकाबला हो तो साबित कदम रहो और अल्लाह को कसरत से याद करते रहो। अल्लाह और उसके रसूल (स.) की इताअत करो और आपस में झगडो नहीं वरना तुम्हारे अंदर कमजोरी पैदा हो जाएगी और तुम्हारी हवा उखड जायेगी। सब्र से काम लो यकीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। अल्लाह की यह सुन्नत है कि वह किसी नेमत को जो उसने किसी कौम को अता की हो उस वक्त तक नहीं बदलता जब तक वह कौम खुद अपने तर्जे अमल को नहीं बदल देती। जिन काफ़िर से मुआहदा हो उनके मुताल्लिक़ फ़रमाया कि अगर किसी कौम से तुम्हें ख्यानत का अंदेशा हो तो उसका मुआहदा अलानिया उसके आगे फेंक दो। यक़ीनन अल्लाह ख़ाइनों को पसंद नहीं करता। और तुम लोग जहां तक तुम्हारा बस चले ज्यादा से ज्यादा ताकत और तैयार बंधे रहने वाले घोडे उनके मुकाबले के लिए मुहैया कर रखो ताकि इसके जरिये अल्लाह के और अपने दुश्मनों को और उन दूसरे दुश्मनों को खौफजदा कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते मगर अल्लाह जानता है अल्लाह की राह में जो कुछ तुम खर्च करोगे उसका पूरा पूरा बदल तुम्हारी तरफ पलटाया जायेगा और तुम्हारे साथ हरगिज जुल्म न होगा और अगर दुश्मन सुलह व सलामती की तरफ मायल हो तो तुम भी इसके लिए आमादह हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो वह सब कुछ सुनने और जानने वाला है और अगर वह धोखे की नियत रखते हों तो तुम्हारे लिये अल्लाह काफी है। वही तो है जिसने अपनी मदद से और मोमिनों से तुम्हारी ताईद की और मोमिनों के दिल एक दूसरे के साथ जोड दिये तुम रूए जमीन की सारी दौलत भी खर्च कर डालते तो इन लोगों के दिल न जोड सकते थे मगर वह अल्लाह है जिसने उनके दिल जोडे। यकीनन वह बडा जबरदस्त और दाना है। ऐ नबी (स0) तुम्हारे और तुम्हारे मानने वालों के लिये अल्लाह काफी है। ऐ नबी (स0)! मोमिनों को जंग पर उभारो अगर तुममें से बीस आदमी साबिर हों तो वह दो सौ पर गालिब आएंगे। और अगर सौ आदमी ऐसे हों तो हक के मुखालिफों में से हजार आदमियों पर भारी होंगे।

जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने अल्लाह की राह मे घर बार छोडे और जद्दोजहद की और जिन्होंने उन्हें पनाह दी और उनकी मदद की वही सच्चे मोमिन हैं। उनके लिए खताओं से दरगुजर हैं और बेहतरीन रिज्क है और जो लोग बाद में ईमान लाए और हिजरत करके आ गए और तुम्हारे साथ मिलकर दीन के कयाम की जद्दोजहद करने लगे वह भी तुम में शामिल हैं।

सूरत-ए-अन्फ़ाल के बाद सूरत-ए-तौबा है। इस सूरत में पहले उन तमाम मुश्रिकीन से बराअत का ऐलान किया जिन्होंने पहले तो अम्न व सुलह के मुआहदे किये थे मगर फिर उनकी ख़िलाफ़-वर्ज़ी कर के तोड़ दिये। जिन्होंने मुआहदे क़ायम रखे थे उनके मुताल्लिक़ यह एलान फ़रमाया कि मुद्दत पूरी हो जाने के बाद यह मुआहदे भी ख़त्म

कर दिये जाएं और इन सब से उस वक़्त तक जंग जारी रहेगी जब तक ये इस्लाम क़ुबूल न कर लें। एहले किताब के मुताल्लिक़ भी ऐलान फ़रमाया कि उनसे भी जंग करो यहां तक कि यह तुम्हारी मातेहती क़ुबूल कर लें और तुम्हें जज़िया अदा करने के पाबंद हो जाएं।

इसके बाद तफ़सील के साथ मुनाफ़िक़ीन की ख़बर ली और उनके बारे में हिदायत की कि उनका सख़्ती से मुहासिबा किया जाए और उनके साथ कोई नर्मी न बरती जाये यहां तक कि या तो वे सच्चे मुसलमान बन जाएं या फिर मुश्रिकीन और एहले किताब में से जिनके साथ भी उनका ताल्लुक़ है उनके अंजाम में शरीक हो जाएं। गोया इस मौक़े पर उन तीनों गिरोहों के बारे में जो उस वक़्त मुसलमानों के खुले या छुपे दुश्मन थे वाज़ेह पॉलिसी का ऐलान कर दिया गया। ऐ नबी (स.)! कह दो कि अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां अज़ीज़ो अक़ारिब तुम्हारी दौलत जो तुमने कमा रखी है तुम्हारे कारोबार जिसकी मन्दी का डर रहता है, तुम्हारे मन पसन्द घर तुमको अल्लाह और उसके रसूल से ज़्यादा प्यारे हैं। खुदा की राह में जिहाद करने से यह चीज़े ज़्यादह अज़ीज़ है तो इन्तिज़ार करो यहां तक कि अल्लाह अपना फैसला फरमा दे। अल्लाह फ़ासिक़ लोगों की रहनुमाई नहीं करता।

ऐ ईमान वालो! अहले किताब के अक्सर ओलमां और दरवेशों का हाल यह है कि लोगों का माल ग़लत तरीक़े से खाते हैं और उन्हें अल्लाह की राह से रोकते हैं। जो लोग सोने चांदी जमा करके रखते हैं उसे खुदा की राह में ख़र्च नहीं करते (ज़कात नहीं देते) उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दे दो। एक दिन आयेगा कि उसीं सोने चांदी पर जहन्नुम की आग दहकायी जायेगी और फिर उसी से उन लोगों की पेशानियों, पहलुओं और पीठों को दाग़ा जायेगा (और उनसे कहा जायेगा) यह है वह ख़ज़ाना जो तुमने अपने लिये जमा कर रखा था लो अब अपनी समेटी हुई दौलत का मज़ा चखो। पारे के आख़िर में फ़रमाया ''कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन से जिहाद करो और उन पर सख़्त बन जाओ। उनका ठिकाना जहन्नुम है। इनमें से वे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से वायदा किया था कि अगर अल्लाह ने हमें अपने फ़ज़्ल से नवाज़ा तो हम ख़ूब सदक़ा करेंगे और ख़ूब नेकियां करने वालों में से होंगे, मगर जब अल्लाह ने अपना फ़ज़्ल अता फ़रमाया तो वे इसमें बख़ील बन बैठे और बरगश्ता होकर मुंह मोड़ लिया। इसकी पादाश में अल्लाह ने उनके दिलों में क़यामत तक के लिए निफ़ाक़ जमा दिया''।

<u>इसी सुरत में जकात के मसारिफ मुकर्रर किये गये है जो आठ हैं :</u>

<u>(1) गरीबों की जरूरत के लिए। (2) मोहताजों के लिए। (3) निजाम-ए-जकात के कारकुनों के लिए। (4) तालीफ-ए-कल्ब के लिए। (5) गुलामों की आजादी के लिए। (6) कर्जदारों की मदद के लिए। (7) खुदा की राह में। (8) मुसाफिरों के लिए।</u>

जिहाद कि सिलसिले में कमज़ोरों, बीमारों और उन लोगों को रूख़्सत अता की गई जिन्हें ख़र्च करने की इस्तिताअत नहीं जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल (स.) के (दीन के) सच्चे ख़ैरख़्वाह हैं। अल्लाह ग़फ़ूर-उर-रहीम है। **<u>अल्लाह की नाराजगी तो उन पर है जो रूख़्सत मांगते हैं हालांकि वे मालदार हैं।</u>** ये लोग ख़ानानशीन औरतों के साथ बैठने पर राज़ी हुए तो अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर कर दी। अब यह इस हक़ीक़त को समझने से महरूम हो गए हैं कि उनकी इस रविश का अल्लाह के यहां क्या नतीजा निकलने वाला है।

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।
❖ अल्लाह तआला हम सबको पढ़ने पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।
❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



नवीं तरावीह

आज ग्यारहवे पारे से बारहवें पारे के एक चौथाई तक तिलावत की गई।

शुरू में सूर: तौबा के बाकी साढ़े पांच रूकूअ पढ़े गये जिनमें जंग-ए-तबूक के मौके पर मुनाफ़िक़ीन ने जो तर्ज़े अमल इख्तियार किया और बाज़ ऐसे मुसलमानों का जो थे तो मुख्लिस मगर सुस्ती और काहिली की बिना पर जंग में शिरकत से पीछे रह गये, उन सब का ज़िक्र किया है। पहले यह बयान किया गया कि जब तुम तबूत के सफ़र से वापस लौटोगे तो ये मुनाफ़िक़ीन अपने रवैये के बारे में तुम्हें मुत्मइन करने के लिए गढ़े हुए उज़रात पेश करेंगे। उनसे साफ़ कह देना कि हम तुम्हारे ये मनगढ़ंत बहाने मानने वाले नहीं। अब अल्लाह और उसका रसूल (स0) तुम्हारे अमल को देखेगें। तुम अपने अमल से यह साबित करने की कोशिश करो कि तुम वाकई अल्लाह और रसूल (स0) पर ईमान रखते हो। अभी तो इस्लाम से उनकी बदख्वाही का ये हाल है कि अव्वल तो ये उसके रास्ते में कुछ खर्च ही नहीं करते और अगर हालात से मजबूर होकर कुछ करना भी पड़े तो इसे अपने उपर जबरदस्ती का जुर्माना समझते हैं और चाहते हैं कि मुसलमानों पर ऐसी कोई गर्दिश आ जाए कि जिससे उनकी जान उनसे छूट जाए। हालाकि हकीक़त में गर्दिश खुद उन पर है और गर्दिश भी बहुत बुरी गर्दिश (यानी आख़िरत में निजात से मेहरूमी)।

कुछ दूसरे लोग थे जिन्होंने अपने गुनाह का ऐतराफ़ कर लिया था, फ़रमाया कि उनकी नेकियां और बुराइयां दोनों तरह की कमाई है। उन पर उम्मीद है कि अल्लाह अपनी रहमत फ़रमायेगा। ऐ नबी (स0)! आप उनसे सदका लेकर उन्हें पाक बना दीजिए उनके लिए दुआ कीजिए। आपकी दुआ उनके लिए तस्कीन का सामान बनेगी। और उनसे यह भी कहिए कि अब अल्लाह, उसका रसूल (स0) और मोमिनीन तुम्हारे तर्ज़े अमल को देखेंगे और बहरहाल तुम अनकरीब अल्लाह के हुज़ूर पेश किए जाने वाले हो।

मुनाफ़िकों में वह भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई है इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने, एहले ईमान में फूट डालने और उन लोगों के लिए एक खुफ़िया अड्डा फ़राहम करने के लिए जो अल्लाह और उसके रसूल (स0) से पहले जंग कर चुके हैं आप इसमें कभी खड़े न हों। आपके खड़े होने के लिए वह मस्जिद सबसे ज़्यादा हक़दार है जिसकी बुनियाद अव्वल दिन से तक़्वे पर रखी गई है।

निफ़ाक़ पर बनाई हुई इमारत की मिसाल ऐसी है जैसे किसी ने समन्दर में निकली हुई कगर पर इमारत बनाई हो, वह किसी भी वक़्त अपने रहने वालों समेत दोज़ख़ में गिर जाएगी।

बेशक अल्लाह ने एहले ईमान से उनके जानो माल जन्नत के बदले में खरीद लिए हैं वो अल्लाह की राह में जंग करते हैं वो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। जन्नत का वायदा अल्लाह के जिम्मे एक सच्चा वायदा है। तौरेत में भी, इन्जील में भी और अब कुरआन में भी। अल्लाह से जन्नत का यह सौदा करने वाले दरअसल हमेशा तौबा करते रहने वाले, इबादत गुजार, अपनी इस्लाह और दीन का इल्म हासिल करने के लिए घरों से निकलने वाले, अल्लाह के आगे झुकने वाले, नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की हदों की हिफाजत करने वाले लोग हैं। यही सच्चे मोमिन हैं। ऐसे मोमिनों को खुशखबरी सुना दीजिए।

सूरत खत्म करते वक्त मुसलमानों को बाज़ अहम हिदायत दी गई। पहली हिदायत यह फ़रमाई कि नबी (स) और एहले ईमान के लिए यह जाइज़ नहीं कि वो मुश्रिकीन के लिए अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ मांगे चाहे वह उनके रिश्तेदार ही क्यों न हो। इस हिदायत का मतलब यह है कि मुसलमानों को शिर्क के हर शाइबे से पाक कर के सिर्फ खुदा के लिए जीने और खुदा के लिए मरने के मकसद पर काइम कर दिया जाए। और हक़ के सिवा और किसी तबा की हिमायत का शायबा भी उनमें बाक़ी न रहने दिया जाए। क्योकि सिर्फ़ रिश्तेदारी और ताल्लुक़ की बिना पर जो हिमायत होती है उससे निफ़ाक़ और कुफ़्र की राहें खुलती हैं। जिन मुसलमानों का सुस्ती और काहिली के सबब जंग तबूक से पीछे रह जाने पर बायकॉट किया गया था, उनकी तौबा की कुबूलियत की बशारत

सुनाई गई और एहले मदीना और बद्दुओं में से जो ताइब हो गए उनको नसीहत की कि **हमेशा सच और हक के लिए जीने वालों से खुद को वाबिस्ता रखो ताकि उनकी सोहबत में रहकर तुम्हारी कमजोरियों की इस्लाह हो सके।**

सूरत-ए-यूनुस में कुरैश की इस हालत पर अफ़सोस का इज़हार किया कि अल्लाह ने उन्हीं में से एक शख्स पर यह किताबे-हिकमत उतारी, चाहिये तो यह था कि वे इसकी क़द्र करते और ईमान लाते। **अल्लाह सरकश लोगों को ढील देता है इसकी वजह यह है कि वह रहमत करने में तो जल्दी करता है लेकिन कहर करने में जल्दी नहीं करता।** वह ऐसे लोगों को मौक़ा देता है कि वह सरकशी में अच्छी तरह भटक लें, कोई हसरत बाक़ी न रह जाए। और अल्लाह की हुज्जत तमाम हो जाये, वरना वह जब चाहे उनका क़िस्सा पाक कर दे। यह पिंछली उम्मतों के अंजाम से सबक़ क्यों नहीं लेते। कुरैश का मुतालबा यह था कि इस क़ुरआन के अलावा कोई दूसरा कुरआन लाओ जिसमें कुछ हमारी बातें भी मानी गई हों या अब तरमीम कर लो और कुछ दो और कुछ लो के उसूल पर मामला कर लो। इसका जवाब दिया गया कि **आप बता दीजिये कि मुझे तरमीम या तब्दीली का कोई इख़्तियार नहीं है। यह तो खुदा के एहकाम हैं जिनकी तामील के लिए मैं आया हूं। अगर खुदा का हुक्म न होता तो मैं हरगिज इसे पेश न करता।**

हुज़ूर (स.) को तसल्ली दी कि जिनके अन्दर सलाहियत है वे इस किताब पर ईमान ला रहे हैं। रहे वे लोग जो अंधे और बहरे बन चुके हैं तो ये खुद अपने आमाल की बदौलत इस हाल को पहुंचे हैं। खुदा ने इनके साथ कोई नाइन्साफ़ी नहीं की। जिस अज़ाब और आख़िरत की उनको धमकी दी जा रही है उसके लिए मुतालबा करते हैं कि वो जल्दी आ क्यों नहीं जाती? हालांकि जब वह आ जाएगी तो महसूस करेंगे कि एक घड़ी से ज़्यादा हमने दुनिया में वक़्त नहीं गुज़ारा। हक़ीक़त यह है कि हर उम्मत् के लिए एक पैमाना मुक़र्रर है। जब वह पैमाना भर जाएगा तो उसको एक मिनट की भी मौहलत नहीं मिलेगी। यह अगर इतनी जल्दी मचाए हुए हैं तो **उनसे पूछो कि खुदा के अज़ाब का मुकाबला करने के लिए उन्होंने क्या सामान तैयार कर रखा है।** उस वक़्त तो उनका ईमान लाना भी बेकार होगा। **यह लोग आखिर अपनी शामत क्यों बुला रहे हैं अल्लाह की इस अज़ीम नेमत और रहमत को क्यों इख़्तियार नहीं करते जो क़ुरआन की शक्ल में नाज़िल हुई है और जिसके आगे दुनिया के तमाम खज़ाने हेच हैं।**

आयत 21 में है कि लोगों का हाल यह है कि मुसीबत के बाद जब हम उनको राहत का मज़ा चखवाते हैं तो फ़ौरन ही वह हमारी निशानियों के मआमले में चालबाज़ियां शुरू कर देते हैं उनसे कह दो अल्लाह अपनी तदबीर में तुम से ज़्यादह तेज़ है। उसके फ़रिश्ते तुम्हारी सब मक्कारियों को लिख रहे हैं और वह अल्लाह ही है जो खुश्की और तरी में तुमको चलाता है। चुनान्चि जब तुम कश्तियों में सवार होकर बादे मवाफ़िक़ पर खुशी खुशी सफ़र कर रहे होते हो और फिर यकायक बादे मुख़ालिफ़ का ज़ोर होता है और हर तरफ़ से मौजों के थपेड़े लगते हैं और मुसाफ़िर समझ लेते हैं कि तूफ़ान में घिर गये उस वक़्त सब जरूर अल्लाह को एख़लास के साथ पुकारते हैं और दुआ करते हैं कि अगर आपने हमें निजात देदी तो हम आपके शुक्र गुज़ार बन्दे बनेंगे मगर जब हम उनको बचा लेते हैं तो यह दोबारा हक़ के मुनहरिफ़ होकर ज़मीन में बग़ावत करने लगते हैं। लोगों! तुम्हारी यह बग़ावत तुम्हारे ख़िलाफ़ पड़ेगी। दुनिया की ज़िन्दगी चन्द रोज़ह है। यह मज़े लूट लो फिर तुम्हे हमारी ही तरफ़ पलट कर आना है, उस वक़्त हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कुछ करते रहे थे। दुनिया की इस ज़िन्दगी की मिसाल ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी उतारा तो ज़मीन की पैदावार जो इन्सान और जानवरों की ख़ूराक है ख़ूब घनी हो गयी फिर ऐन उस वक़्त जब ज़मीन अपने बहार पर थीं और खेतियां लहलहा रही थीं और उनके मालिक समझ रहे थे कि हम अब उनसे फ़ायदह उठाने पर क़ादिर हैं। यकायेक रात को या दिन को हमारा हुक्म आ गया और हमने उसे ऐसा ग़ारत करके रख दिया गोया कल वहां कुछ था ही नहीं। इस तरह हम अपनी निशानियां ख़ोल खोलकर पेश करते हैं उन लोगों के लिये जो गौर व फ़िक्र करते हैं। खुदा तुम्हें सलामती वाले घर की तरफ़ बुलाता है और जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।

हर वह शख्स जिसने ज़ुल्म (शिर्क) किया है अगर रोज़े क़यामत रूये ज़मीन की दौलत भी हो तो अज़ाब से बचने के लिये वह उसे फ़िदये में देने के लिये आमादह हो जायेगा जब यह लोग अज़ाब देखेंगे तो दिल ही दिल में पछतायेंगे। मगर उनके दर्मियान पूरे इन्साफ़ से फैसला किया जायेगा और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा। सुनों आसमानों और ज़मीनों में जो कुछ है सब अल्लाह का है। सुनो अल्लाह का वादह सच्चा है मगर अक्सर इन्सान जानते नहीं वही

जिन्दगी और मौत देता है और उसी की तरफ़ तुम्हें लौटकर जाना है। लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत (कुरआन) आ गयी। यह वह चीज़ है जो दिलों के अमराज़ की शिफ़ा है। जो इसे मानें उनके लिये हिदायत और रहमत है। ऐ नबी (स0) कहो कि यह अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी मेहरबानी है कि उसने यह चीज़ भेजी इस पर तो लोगों को खुशी मनानी चाहिए यह उन सब चीज़ों से बेहतर है जिन्हें लोग जमा कर रहे हैं।

ऐ नबी (स0) तुम जिस हाल में भी होते हो और कुरआन में से जो कुछ भी पढ़ते हो और लोगों तुम भी जो कुछ करते हो उन सब के दौरान हम तुमको देखते रहते हैं आसमान और जमीन में ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़ ऐसी नहीं है ख़्वाह वह छोटी हो या बड़ी। जो तेरे रब की नज़र से पोशीदा हो और एक साफ़ दफ़्तर में दर्ज न हो। सुनो जो अल्लाह के दोस्त (औलिया अल्लाह) हैं उन्हें किसी तरह का रंज और ख़ौफ़ न होगा यह वही हैं जो ईमान लाये और तक़वा का रवैया अख़्तियार किया। दुनिया और आख़िरत दोनों में उनके लिये खुशख़बरी है। अल्लाह की बाते बदल नहीं सकतीं। यही कामयाबी है। और हम बनी इस्राईल को समन्दर से गुज़ार ले गये फ़िर फ़िरऔन और उसके लश्कर ने जुल्म और ज्यादती की ग़रज़ से उनका पीछा किया। यहां तक कि फ़िरऔन जब डूबने लगा तो कहने लगा मैं ईमान लाता हूं बनी इस्राईल के खुदा पर जिसके सिवा कोई हक़ीक़ी खुदा नहीं और मैं मुसलमान होता हूं (जवाब दिया गया) अब ईमान लाता है हालांकि उससे पहले तक तू नाफ़रमानी करता रहा और फ़सादियों में से था तो हम तेरी लाश को बचाकर रखेंगे ताकि बाद की नस्लों के लिये तू इबरत हो हालांकि बहुत से इन्सान हैं जो हमारी निशानियों से ग़फ़लत करते हैं।

सूरत-ए-हूद के चार रूकूअ पढ़े गये उनमें पहले बतौर तमहीद कुरआन की यह खुसूसियत बयान की गई कि <u>लोगों की तालीम व तरबियत के लिए अल्लाह तआला ने इसको इस शक्ल में उतारा है कि पहले सिर्फ उसूल और बुनियादी बातें जंचे तुले अन्दाज में बयान की गईं।</u> यानि इब्तिदाई मुकम्मल सूरतें फिर बतदरीज तफ़सीलात बयान हुई।

तम्हीदी जुम्लों के बाद हुजूर (स0) की ज़बाने मुबारक से इस पैग़ाम की वज़ाहत की गई कि <u>यह अल्लाह वाहिद की बंदगी और तौबा व असतगफार कर के अल्लाह वाहिद की तरफ रूजूअ कर लें अल्लाह एक मुकर्रर मुद्दत तक उनको जिंदगी की नेमतों और अपने फज्ल से मालामाल करेगा और जो लोग उससे मुंह मोडेंगे उनके लिए एक बडे अजाब का दिन सामने हैं</u>। दुनिया में भी और आख़िरत में भी (दुनिया में अज़ाब से मुराद इस्लाम के मुक़ाबले में शिकस्त की पेशगोई है।) जज़ा और सज़ा के मुनकरीन को और अज़ाब का मज़ाक़ उड़ाने वालों को तम्बीह की कि यह <u>यह दुनिया बच्चों का खेल नहीं है अल्लाह ने इसे इसलिए बनाया है कि वह देखें कि लोग कैसा अमल करते हैं।</u> इन्सान का अजीब हाल है कि जब खुदा की पकड़ में आ जाता है तो बिल्कुल मायूस और दिल शकिस्ता हो जाता है लेकिन जब खुदा ढील देता है तो अकड़ने लगता है और शेखी बघारने लगता है। <u>थोडे लोग ही ऐसे निकलते हैं जो मुसीबत में सब्र की और नेमत में शुक्र की रविश इख़्तियार करते हैं ऐसे ही लोगों के लिए खुदा के यहां मगफिरत और अज्रे-अजीम है।</u>

बताया गया कि ईमान की तौफ़ीक़ सिर्फ़ उन लोगों को मिलेगी जिनकी फ़ितरत मस्ख़ नहीं हुई। वे कुरआन को अपने दिल की आवाज़ समझेंगे। रहे वे लोग जिनकी फ़ितरत का नूर बुझ गया है तो वह दोज़ख़ को देखकर क़ाइल होंगे। इन दोनों गिरोहों की मिसाल ऐसी है जैसे एक गिरोह अंधों और बहरों का हो और दूसरा गिरोह आंखें और कान रखने वालों का। क्या ये दोनों बराबर हो सकते हैं?

हज़रत-ए-नूह (अ0) और उनकी क़ौम की सरगुज़श्त सुनाई जिसमें मोहम्मद (स0) को दिखाया गया कि नूह (अ0) को भी आप ही की तरह उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा गया था और उनकी क़ौम ने भी वही किया था जो आपकी क़ौम आप (स0) के साथ कर रही है। बिल आख़िर उन पर खुदा का अज़ाब आया और वे सब तूफ़ान मे ग़र्क़ कर दिये गये। अगर ये लोग बाज़ न आये तो इनका अंजाम भी उन्हीं जैसा होगा। <u>आप न घबरायें, अल्लाह आपको और आपके साथियों को सुरख़रू करेगा। शर्त यही है कि सारी मुख़ालिफतों के बावजूद सीधे रास्ते पर जमें रहें।</u> हज़रत नूह (अ0) कितने ज़माने तक यानी 950 बरस तक सब्र करते रहे।

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ अल्लाह तआला हम सबको कुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये। "आमीन"

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



दसवीं तरावीह

आज बारहवें पारे की चौथाई से तेरहवें पारे के आधे तक की तिलावत की गई। नूह (अ0) की कौम का अंजाम बयान करने के बाद अब हूद (अ0) की कौम ''आद'' और सालेह (अ0) की क़ौम ''समूद'' के इबरत-अंगेज़ अंजाम को बताया ताकि कुरैश को इबरत और क़यामत तक आने वाले सरकश लोगों को नसीहत हो। फिर लूत (अ0) की क़ौम का जिक्र किया, इस मुनासिबत से कि कुरैश फ़रिश्तों के उतारे जाने का मुतालबा कर रहे थे। बताया कि फ़रिश्तों का आना कोई मामूली वाक्या नहीं होता। वे जब काफ़िर क़ौमों के मुतालबों पर आते हैं तो अपने साथ अज़ाब लाते हैं। फिर हज़रत शुएब (अ0) और हज़रत मूसा (अ0) के वाक्यात का ज़िक्र करते हुए और इन किस्सों को बयान करने का मौक़ा इन लफ़ज़ों में वाज़ेह किया।

<u>''ये बस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं उनमें से कुछ अभी कायम हैं और कुछ मिट चुकी हैं। हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि उन्होंने खुद अपने उपर ज़ुल्म किया तो उनके बनावटी खुदा जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारते थे, तेरे रब का अजाब आने पर उनके कुछ भी काम न आए। तेरे रब की पकड जब वह बस्तियों को उनके ज़ुल्म में पकडता है इसी तरह होती हैं। बेशक उसकी पकड बडी ही दर्दनाक और सख्त है।''</u>

''हम रसूलों की सरगुज़िश्तों में से एक तुम को सुना रहे हैं ताकि तुम्हारे दिल को तक़वियत हो और उन के हालात का सही इल्म हो सके और मोमिनों के लिए उनमें नसीहत और याद दहानी है। <u>तुम सब उसी की बंदगी करते रहो और उसी पर भरोसा रखो। जो कुछ तुम कर रहे हो तुम्हारा रब उससे बेखबर नहीं है''</u>

अब सूरत-ए-यूसुफ़ शुरू होती है। इसके नुज़ूल का सबब यह हुआ कि कुरैश हुज़ूर (स0) को क़त्ल करने या जिलावतन करने या कैद करने के मुताल्लिक़ बड़ी संजीदगी से सोच रहे थे कि मदीने के यहूदियों ने उन्हें पट्टी पढ़ाई कि उनसे यह पूछो कि बनी इस्राईल तो शाम में रहते थे वे मिस्र कैसे चले गये कि हज़रत मूसा (अ0) का सारा क़िस्सा मिस्र से ताल्लुक़ रखता है। उनके नज़दीक हुज़ूर (स0) किसी न किसी तरह यहूदियों से राब्ता करके यह बात उनसे मालूम करने की कोशिश करते तो गोया सारा पोल खुल जाता और कुरैश को सज़ा देने का मौक़ा मिल जाता। मगर अल्लाह तआला ने फ़ौरन ही नबी (स0) की ज़बान से यूसुफ़ (अ0) का किस्सा सुना दिया और साथ ही उसे कुरैश पर चस्पां भी कर दिया कि आप जो कुछ भी बयान करते हैं वह अल्लाह की बताई हुई बातें हैं। इस तरह गोया उन्हें मुतनब्बह भी कर दिया कि यही अंजाम तुम्हारा भी होने वाला है कि तुम एक दिन नबी करीम (स0) के रहमो करम पर होगे।

इसी वाक्ये में अल्लाह ने इस्लाम की दावत को पेश करते हुए वाज़ेह कर दिया कि हज़रत इब्राहीम (अ0), हज़रत इस्हाक़ (अ0), ह0 याकूब (अ0) और हज़रत यूसुफ़ (अ0) इनका दीन भी वही था जो मोहम्मद (स0) का है और वे सब भी इसी तरीके ज़िंदगी की दावत देते थे जिस की दावत मोहम्मद (स0) दे रहे हैं। अल्लाह ने इस क़िस्से में एक तरफ़ हज़रत याकूब (अ0) और हज़रत यूसुफ़ (अ0) का किरदार पेश किया है तो दूसरी तरफ़ अज़ीज़े मिस्र उसकी बीवी, मिस्र के दूसरे बड़े घरानों की बेगमात और हुक्कामे-मिस्र का किरदार पेश किया है और दोनों में मुक़ाबला कर के दिखवाया है कि <u>एक तरह का किरदार वह है जो इस्लाम कुबूल कर के बनता है और दूसरा किरदार वह है जो दुनिया परस्ती और आखिरत की बेखौफी से पैदा होता है। अब तुम खुद अपने जमीर से पूछ लो कि कौन सा किरदार बेहतर है?</u> फिर अल्लाह तआला ने यह बात भी सामने रख दी है कि दरअसल अल्लाह तआला जो कुछ करना चाहता है वह पूरा होकर रहता है। इन्सान अपनी तदबीरों से उसके मन्सूबों को रोकने में कभी कामयाब नहीं हो सकता <u>बल्कि इन्सान अपने मन्सूबे के लिए तदाबीर इख्तियार करता है।</u>

अल्लाह चाहता है तो उसकी तदबीर के ज़रिये अपना मन्सुबा पूरा करा लेता है। यूसुफ़ (अ0) के भाईयों ने हज़रत यूसुफ़ (अ0) को अपने रास्ते से हटाने के लिए कुएं में फेंक दिया, मगर यह कुआं ही हज़रत यूसुफ़ (अ0) के उरूज का ज़रिया बन गया।

इसी तरह अज़ीज़-ए-मिस्र की बीवी ज़ुलैखा ने हज़रत यूसुफ़ (अ0) को कैदखाने भिजवाकर इस बात का इतिक़ाम लिया कि उन्होंने उसका गुलाम होने के बावजूद उसकी ख़्वाहिश को पूरा करने से इनकार कर दिया था मगर यही कैद ख़ाना उनके तख़्ते सलतनत पर बैठने का ज़रिया बन गया और उसे अलल-ऐलान एक दिन अपनी बेहयाई और जुर्म का ऐतिराफ़ करना पड़ा। यह और इसी तरह के बेशुमार वाकेआत इस हकीक़त का ऐलान करते हैं कि अल्लाह जिसे उठाना चाहता है सारी दुनिया मिलकर भी उसे नहीं गिरा सकती, इसी तरह अल्लाह जिसे गिराना चाहता है उसे सारी दुनिया मिलकर भी नहीं उठा सकती।

सूरह ''यूसुफ़'' से पहला सबक़ इन्सान को यह मिलता है कि अपने मक़सद और तदबीर दोनों में अल्लाह की मुक़र्रर करदा हदों के आगे नहीं बढ़ना चाहिए, काम्याबी और नाकामी दरअसल अल्लाह के हाथ में है। जो शख़्स पाक मक़सद के लिए सीधी सीधी जाइज तदबीरें इख़्तियार करेगा अगर वह यहां कामयाब न भी हुआ तो किसी रूसवाई से दोचार नहीं होगा। लेकिन जो नापाक मकसद के लिए और टेढी तदबीर करेगा वह आख़िरत में यक़ीनन रूसवाई से दो-चार होगा।

दूसरा सबक़ इस क़िस्से से यह मिलता है कि अल्लाह पर पूरा भरोसा रखो और अपने आप को उसके सुपुर्द कर दो। जो लोग हक़ और सच्चाई के लिए कोशिश करते हैं चाहे दुनिया उन्हें मिटाने पर तुल जाए तब भी वे इस बात को सामने रखते हैं कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। इस यकीन से उन्हें ग़ैर मामुली तस्कीन मिलती है और वे तमाम मुश्किलात और रूकावटों के मुकाब्ले में अपना काम बराबर करते चले जाते हैं।

सबसे बड़ा सबक़ इस क़िस्से से यह मिलता है कि एक मोमिन अगर हक़ीक़ी इस्लामी सीरत और किरदार रखता है और हिकमत की सिफ़त भी उसमें हो तो वह तन्हा भी सारे मुल्क को फतह कर सकता है। यूसुफ़ (अ0) को देखिये। सत्रह बरस की उम्र, तने तन्हा, बे सरो सामान, अजनबी मुल्क और फिर कमज़ोरी की इन्तिहा कि गुलाम बना कर बेचे गये। इस पर मज़ीद ज़ुल्म कि एक इन्तिहाई घिनौने अख़्लाक़ी जुर्म का इल्ज़ाम लगा कर जेल में बन्द कर दिया गया जिसकी कोई मियाद भी नहीं थी। इस हालत तक गिरा दिये जाने के बावजूद वह महज़ अपने ईमान और अख़लाक़ के बल पर उठते हैं और सारे मुल्क पर काबिज़ हो जाते हैं।

जब हज़रत यूसुफ़ (अ0) के ख़्वाब की ताबीर पूरी होती है। मां बाप मिस्र पहुंच जाते हैं और वह मां बाप को उठाकर अपने साथ तख़्त पर बिठाते हैं। और तमाम लोग जिनमें उनके भाई भी शामिल हैं ताज़ीमन उनके सामने झुक जाते हैं तो हज़रत यूसुफ़ (अ0) को अपना ख़्वाब याद आ जाता है और वह अपने वालिद से कहते हैं ''अब्बा जान यह है मेरे उस ख़्वाब की ताबीर, जिसमें मैंने सूरज चांद और ग्यारह सितारों को सज्दा करते हुए देखा था''।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क़िस्सा यह है कि एक दिन उन्होंने अपने वालिद से कहा कि अब्बा जान मैंने ख़्वाब में ग्यारह सितारे और चांद सूरज को मुझे सिजदह करते देखा। बाप ने कहा बेटा यह ख़्वाब भाइयों को न बताना वरना वह तेरे ख़िलाफ़ साज़िश करेंगे। तुम ख़ुदा के मुनतख़िब बन्दे हो। ख़ुदा तुम्हें ख़्वाब की ताबीर बतायेगा और तुम्हें मरतबए-नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमायेगा।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने आपस में कहा कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और उसके भाई बिन यामीन को अब्बा बहुत चाहते हैं क्यों न यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ख़त्म करके या वीराने में छोड़कर हम सब महबूब बन जायें। एक ने कहा ख़त्म करने के बजाये अन्धे कुएं में डाल दें जो मुसाफ़िर उठा ले जायेंगे। इस राय पर सब मुत्तफ़िक़ हुए और अब्बा से जंगल में जाने के लिये इजाज़त मांगी। बाप ने कहा मुझे डर है कि इसे भेड़िया न खा जाये और तुम खेल में लगे रहो। भाइयों ने कहा हम कई लोग हैं ऐसा न होगा। चुनांचि यूसुफ़ (अलै0) को जंगल ले गये और कुए में डाल दिया। कमीज़ पर झूठा ख़ून लगा कर बाप को बता दिया कि यूसुफ़ (अलै0) को भेड़िया खा गया। इधर क़ाफ़िला आया और यूसुफ़ (अलै0) को कुएं से निकाल कर बाज़ार मिस्र में बेच दिया। अज़ीज़ मिस्र ने यूसुफ़ (अलै0) को घर

ले जा कर अपनी बीवी से कहा उसका ख़्याल रखना। हम इसे पाल लेंगे। जब यूसुफ़ (अलै0) जवान हुए तो ख़ातून उन पर डोरे डालने लगी। उन्होंने अल्लाह की पनाह चाही और दरवाज़े की तरफ़ भागने लगे। औरत ने कमीज़ पकड़ ली। वह फट गयी। दरवाज़े पर शौहर मिला। औरत ने यूसुफ़ (अलै0) पर इल्ज़ाम लगाया और सज़ा का मुतालबा किया। यूसुफ़ (अलै0) ने कहा कि यह मुझे फ़ांस रही थी। एक शख़्स ने फ़ैसला किया कि अगर क़मीज़ आगे से फटी है तो यूसुफ़ (अलै0) गुनहगार हैं और पीछे से फटी है तो ख़ातून गुनहगार है। क़मीज़ देखी गयी तो वह पीछे से फटी हुई थी। शौहर ने कहा औरतें चालाक होती हैं यूसुफ़ इस मआमले को दरगुज़र करो।

शहर में औरतों के दर्मियान चर्चा हुआ कि अज़ीज़े मिस्र की बीवी अपने गुलाम पर फ़रेफ़तह है। उस ने शानदार दावत की और तमाम ख़्वातीन को बुलाया। हर एक को फल और छुरी दी और यूसुफ़ (अलै0) को सामने से गुज़रने का हुक्म दिया। यूसुफ़ (अलै0) को देखते ही औरतें हैरत ज़दह रह गयीं और फलों के बजाय गफ़लत में अपने हाथ काट लियें। अज़ीज़ की बीवी ने कहा यह वह शख़्स है जिसके बारे में तुम मुझे मलामत करती हो। मैंने रिझाने की कोशिश की मगर यह बच निकला। अगर वह मेरी न मानेगा तो इसे जेल भेज दूंगी। यूसुफ़ (अलै0) ने कहा मुझे जेल जाना मंज़ूर है। इस तरह यूसुफ़ (अलै0) जेल चले गये। जेल में दो क़ैदी ख़्वाब की ताबीर पूछने आये। एक ने कहा मेरे सर पर रोटी रखी है और परिन्दे खा करे हैं। दूसरे ने कहा मैं शराब कशीद कर रहा हूं दोनों ख़्वाबों का क्या मतलब है? यूसुफ़ (अलै0) ने पहले उन्हें दीन की दावत दी फिर ताबीर यह बताई कि पहले को सूली दी जायेगी और परिन्दे उसका गोश्त खा जायेंगे दूसरा बादशाहके यहां साखी बनेगा। फिर दूसरे से कहा जब तुम बादशाह के पास जाना तो मेरा तज़किरह करना। वह भूल गया और यूसुफ़ (अलै0) कई साल जेल में पड़े रहे।

एक रात बादशाह ने ख़्वाब देखा कि सात मोटी गायें सात दुबली गायों को खा गयीं। सुबह दरबारियों से ताबीर पूछी। साथी को फ़ौरन ख़्याल आया कि यूसुफ़ (अलै0) ताबीर सही देते हैं वह फ़ौरन गया और ताबीर पूछी। आप ने फ़रमाया सात साल खेती खुब अच्छी होगी और बाद में सात साल क़हत पड़ेगा। जो दाना महफ़ूज़ रखोगे वही काम आयेगा। बादशाह ताबीर सुनकर बड़ा खुश हुआ। आपको न सिर्फ़ रिहा कर दिया बल्कि मुक़र्रबीन में से बना दिया। हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने ख़ज़ाने का ज़िम्मेदार बनना पसन्द किया और उन्हें वज़ीर ख़ज़ाना बना दिया गया। जब केहत साली शुरू हुयी तब याकूब (अलै0) ने बेटों से कहा कि जाओ कहीं से गल्ला ले आओ। उनके भाई यूसुफ़ (अलै0) के पास ग़ल्ला लेने आये। यूसुफ़ (अलै0) पहचान गये। वह न पहचान सके। यूसुफ़ (अलै0) ने उन्हे गल्ला भी दिया और उनके पैसे बोरी में डाल कर लौटा दिये। और अपने सगे भाई को भी लाने के लिये कहा। उनके भाई घर पहुंच कर पैसे पाकर बहुत खुश हुए। अब्बा से कहा कि और क्या चाहिये? ग़ल्ला भी मिला और पैसे भी वापस दे दिया। इतना सख़ी कौन होगा? सगे भाई को भी भेजिये वह अपने हिस्से का गल्ला लायेगा। वालिद तैयार न हुए कि यूसुफ़ (अलै0) की तरह उसे भी ज़ाया न कर दें। सभी ने क़स्मे खायीं कि ज़रूर वापिस लायेंगे। इधर जब ग़ल्ला लेकर वापिस जाने को तैयार हुए तो यूसुफ़ (अलै0) ने हीले से अपने भाई को रोक लिया। वह वापिस न जा सके। उनके वालिद फिर दूसरे बच्चे से महरूमी के सबब काफ़ी परेशान हुए। कुछ अरसे बाद फिर भाई लोग ग़ल्ला मांगने आये। अब उनके पास फूटी कौड़ी भी न थी। बड़ी इल्तेजा की कि आप हमें गल्ला दीजिये हम पर रहम कीजिए वरना हम भूखों मर जायेंगे। हज़रत यूसुफ़ (अलै0) ने पूछा कि तुमने जो यूसुफ़ (अलै0) के साथ सुलूक किया क्या तुमको ख़बर है? वह हैरत ज़दह रह गये। पूछा क्या आप ही यूसुफ़ (अलै0) हैं उन्होंने कहा हाँ मैं यूसुफ़ (अलै0) हूँ और यह मेरा सगा भाई है। खुदा ने मुझ पर बड़ा एहसान किया। भाइयों ने कहा खुदा ने तुम्हें हम सबसे बढ़कर नवाज़ा है। हमसे बडी गलती हुई। मआफ़ फ़रमायें। यूसुफ़ (अलै0) ने कहा आज मैं तुम्हारी सब ख़ताओं से दर गुज़र करता हूं। खुदा तुम्हे माफ़ करे। मेरी यह कमीज़ ले जाओ अब्बा पर ओढ़ा देना। उनकी बीनाई लौट आयेगी। चुनांचि ऐसा ही हुआ और फिर सारा खानदान मिस्र चला आया। उन्होंने अपने बाप को तख़्त पर बिठाया। सब भाई उनके आगे झुक गये। यूसुफ़ (अलै0) ने अपने वालिद से कहा यह मेरे ख़्वाब की ताबीर है जो खुदा ने सच कर दिखायी। खुदा ने मुझे जेल से रिहाई दी। आप लोगों को मुझसे मिला दिया। खुदाया तूने बादशाहत दी। ख़्वाब की ताबीर बतायी। तेरा एहसान है। तू मुझे मुसलमान बना कर उठा, और नेक लोगों के साथ उठा।

सूरह - यूसुफ़ के बाद सूरह-राद के दो रूकूओं में बताया गया कि यह किताबे इलाही की आयात हैं। हवाई बातें नहीं हैं। इनकी हर बात एक हक़ीक़त है। और जिन बातों की ख़बर दी जा रही है वे एक-एक कर पूरी होकर रहेंगी। लेकिन अक्सर लोग ज़िद पर अड़े हुए हैं। ऐसे लोग ईमान नहीं लाएंगे।

फिर कायनात की उन निशानियों की तरफ़ तवज्जह दिलाई जो क़ुरआन की बयान-करदा हक़ीक़तों को वाज़ेह करने वाली हैं और यह यक़ीन दिलाने के लिए काफ़ी हैं कि एक रोज़ उसके सामने पेश होना है। हर खुली और ढकी चीज़ से वह वाक़िफ़ है। हर शख़्स के आगे और पीछे उसके मुक़र्रर किये हुए निगरां लगे हुए हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देखभाल कर रहे हैं।

क़ौमों की तब्दीली के बारे में यह हक़ीक़त है कि <u>अल्लाह किसी कौम की हालत को नहीं बदलता जब तक वह अपने औसाफ को नहीं बदल देती और जब अल्लाह किसी कौम की शामत लाने का फैसला कर ले तो फिर वह किसी के टाले नहीं टल सकती। क्या अल्लाह के मुकाबले में कोई किसी का मददगार हो सकता है?</u> हक़ व बातिल की कशमकश को अजीब मिसाल से समझाया कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया और नदी नाले अपने ज़र्फ़ के मुताबिक़ उसे लेकर चल निकले। फिर जब सैलाब उठा तो सतह पर झाग भी आ गये और ऐसे ही झाग उन धातों पर भी उठते हैं जिन्हें ज़ेवर और बर्तन बनाने के लिए पिघलाया करते हैं। <u>जो झाग हैं यानी बातिल वह आख़िर उड़ जाया करता है और जो चीज इन्सान के लिए नफा बख़्श है यानी हक वह जमीन में ठहर जाती है। इस तरह अल्लाह मिसालों से अपनी बात समझाता है।</u>

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।
❖ अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।
❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

"आमीन"

आज की तराहवी के चन्द अहम नुकात

ग्यारहवीं तराहवी

आज की तराहवी में तेरहवें पारे के नवें रूकूअ से चौदहवें पारे के अठारहवें रूकूअ तक तिलावत की गई। पहली आयत में है कि भला बताइये यह किसी तरह मुमकिन है कि जो शख्स ख़ुदा की नाज़िल कर्दा किताब को हक जानता हो क्या वह उस शख्स की तरह हो सकता है जो बिल्कुल उससे ग़ाफ़िल (अन्धा) है। नसीहत तो दानिशमन्द लोग ही क़ुबूल करते हैं उनका तर्ज़े अमल यह है कि वह अल्ला से किये हुए वादे को पूरा करते हैं उसे तोड़ते नहीं जो सिला रहमी करते हैं, अपने रब से डरते हैं कि कहीं उनसे बुरा हिसाब न लिया जाय जो ख़ुदा की रज़ा के लिये सब्र से काम लेते हैं नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हम ने उन्हें जो रोज़ी दी है उसमें से वह ऐलानियां और पोशीदह ख़र्च करते हैं और बुराई को भलाई से दफ़ा करते हैं। आख़िरत का घर इन्हीं लोगों के लियें है। यानी ऐसे बेरोज़गार जो उनकी अबदी क़याम गाह होंगे वह ख़ुद भी उनमें रहेंगे और उनके साथ उनके बाप दादा बीवी बच्चे जो सालेह हैं वह भी जन्नत में रहेंगे। फ़रिश्ते हर दरवाज़े से दाख़िल हो कर उन्हें सलाम करेंगे और कहेंगे तुमने दुनिया में जिस तरह सब्र से काम लिया उसकी बदौलत आज तुम इसके मुस्तहिक़ हो रहे। वह लोग जो अल्लाह से किये हुए वादे को तोड़ते हैं और क़ता रहमी करते हैं ज़मीन में फ़साद बरपा करते हैं वह लानत के मुस्तहिक़ हैं और उनका बुरा ठिकाना है। सबसे पहले कुरआन की दावत कुबूल करके अल्लाह के रास्ते पर चल खड़े होने वालों के लिए अंजामे कार में काम्याबी की बशारत सुनाई और इसकी मुख़ालिफत व मुज़हिमत करने वालों पर अल्लाह की लानत की ख़बर दी। फिर इस शुब्हे का जवाब दिया की अगर अल्लाह की तमाम इनायेतों के हक़दार सिर्फ अहले-ईमान ही हैं तो वे लोग रिज़्क़ व फ़ज़्ल के मालिक बने बैठे हैं जो रात दिन अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त में सरगर्म हैं। फरमाया अल्लाह जिसके लिए चाहता है रिज्क के दरवाजे खोल देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। जिसके लिए वह कुशादा करता है उससे चाहता है कि वह अपने रब का शुक्रगुजार बंदा बने और जिसके लिए तंग करता है उससे वह चाहता है कि सब्र करे। इसी सब्र व शुक्र पर दीन की सारी इमारत खड़ी है जो लोग इस दुनिया के कंकड़ पत्थर पाकर गुरूर में आख़िरत को भुला बैठे हैं जब आख़िरत के दिन साबिरीन व शाकिरीन के अज्र को देखेंगे जब उन्हे अंदाज़ा होगा कि निहायत ही हक़ीर चीज़ के लिए उन्होंने आख़िरत की बादशाहत खो दी।

कुफ़्फ़ार के बार-बार के इस मुतालबे पर कि कोई ज़बर्दस्त ऐसा मोजिज़ा दिखाया जाये कि माने बग़ैर चारा ही न रहे वाजेह़ किया गया कि कायनात और ख़ुद इन्सान की ज़िनदगी में जो दलीलें और निशानियां अल्ल्लाह ने रखी हैं, जिन लोगों का इतमेनान उनसे नहीं होता वह दुनियां-जहान के मौजिज़े भी देख लें तो भी अंधे ही रहेंगे क्योकि ईमान व हिदायत का रास्ता अल्लाह के कलाम और उसके रसूल (स.) की बोतों पर गोर करने से ही खुलता है।

शिर्क और खुदा के साथ ठहराए हुए शरीकों की हक़ीक़त बयान की कि उनकी कोई बुनियाद नहीं। यह महज मनघड़ंत बातें है। इस फरेब में मुब्तिला होकर जिन्होंने अल्लाह के रास्ते से मुंह मोड़ा वो इस दुनिया में भी अज़ाब से दो चार होंगे और आखिरत का अजाब तो इससे कहीं ज्यादा सख्त होगा। कोई शफीअ या शरीक वहां उन्हें बचाने वाला न होगा।

सूरते इब्राहीम में अल्लाह तआला ने शिर्क और इस्लाम के फर्क को बेहतरीन मिसाल से वाज़ेह फरमाया कि शिर्क के जिस निज़ाम पर तुम ज़िन्दगी बसर कर रहे हो (कि अपने मनमाने अहकाम चला रहे हो) इसकी बुनियाद न ज़मीन में है न आसमान में। इसकी मिसाल गंदगी के ढेर पर उगे हुए एक नापाक और काँटेदार पौधे की है जो ज़रा सी हरकत

से उखाड़ फेंका जा सकता हैं। अगर यह अब तक बरक़रार है तो इस वजह से कि अभी ऐसा कोई हाथ नहीं आया जो इसे उखाड़ फेंके। अब अल्लाह ने वे हाथ पैदा कर दिये हैं। तो तुम देखोगे कि कितनी जल्दी सारा क़िस्सा पाक हो जाएगा। इसके मुक़ाब्ले में **इस्लाम की दावत की मिसाल एक पाकीजा फलदार दरख्त की सी हैं जिसकी जडें पाताल में उतरी हुई हैं और शाखें आसमान में फैली हुई हैं। अल्लाह तआला एहले-ईमान को दुनिया में मजबूत और मुस्तहकम करेगा और आखिरत में सुरखरूई बख्शेगा। बशर्ते कि वे सब्र और इस्तिकामत के साथ हक पर डंटे रहें और इस राह में पेश आने वाली आजमाइश का अल्लाह पर भरोसा करते हुए मुकाबला करें।** इस हक़ीकत को तारीख़ की रोशनी में वाज़ेह करने के लिए हज़रत मूसा (अ.) और दूसरे अंबियाए किराम के वो वाक्यात पेश किये जिससे इस पहलू पर रोशनी पड़ती है कि सब्र करने वाले और राहे हक़ में डंटे रहने वाले ग़ालिब आए। मुख़ालिफ़ीन तबाह कर दिये गये। लेकिन यह भी बताया कि **गलबा उन्हीं को हासिल होगा जो पहले मरहले में सब्र व इस्तिकामत दिखाएं।**

मुख़ालिफ़ीने-इस्लाम का आख़िरत में जो हश्र होगा उसको बयान किया कि उनका सारा किया धरा ख़ाक और राख होकर उड़ जाएगा। लीडर और उनके पैरो सब एक दूसरे को लानत करेंगे। यहां तक कि **शैतान भी अपनी पैरवी करने वालों से अपनी जुदाई का ऐलान कर देगा और कहेगा** बस मैंने तो तुम्हें सिर्फ़ अपनी तरफ़ बुलाया था। यह तो तुम ही थे कि मेरी बात मान ली। अब मुझे मलामत मत करो। अपने आप को मलामत करो। न मैं तुम्हारे कुछ काम आ सकता हूँ, न तुम मेरे काम आ सकते हो। **बेशक अपनी जानों पर ज़ुल्म ढाने वालों का अंजाम दर्दनाक अजाब है।**

क़ुरैश के लीडरों को तम्बीह की कि उन्होंने अल्लाह की बख्शी हुई नेमतों को कुफ़ और शिर्क का ज़रिया बना लिया है और इस तरह अपनी कौम को जहन्नुम के घाट पर ला खड़ा किया है। इसमें आज के लीडरों के लिए भी नसीहत है। काश वे कुरआन को समझें। **मुसलमानों को नसीहत की गई कि वह नमाज का एहतिमाम करें और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से छुपा कर भी और अलानिया भी खर्च करें, इससे पहले कि वह दिन आए जिसमें न खरीदो-फरोख्त होगी और न दोस्ती काम आएगी।**
अल्लाह ने ज़मीनो आसमान पैदा किये, पानी बरसाया, फलों से रोज़ी दी, समन्दर में मुसख्ख़र किया, कश्ती उसके हुक्म से चलती है। नहरें अता कीं। सूरज चांद लगातार चलते जा रहे हैं। उन्हें तुम्हारे लियें मुसख्ख़र किया। दिना रात पैदा किये। तुमने जो मांगा वह सब कुछ दिया। ख़ुदा की नेमतों को गिनना चाहो तो गिन न सकोगे।

हक़ीकत यह है कि इन्सान बड़ा नाशुकरा ज़ालिम है, याद करो वह वक्त जब इब्राहीम (अलै0) ने ख़ुदा से दुआ की थी परवर दिगार इस शहर मक्का को अमन का शहर बना मुझे और मेरी नस्ल को बुत परस्ती से बचा। परवरदिगार इन बुतों ने बहुतो को गुमराह किया मुमकिन है कि मेरी औलाद को भी गुमराह करदे इनमें से जो मेरे तरीक़े पर चले वह मेरे है जो मेरे ख़िलाफ़ चले तो तू गफ़्फ़ारूर रहीम है। परवरदिगार मैंने अपनी नस्ल को इस चटयल वादी में तेरे मोहतरम घर के पास बसाया है ताकि यह लोग यहां नमाज़ क़ायम करें। लिहाज़ा तू लोगों के दिलों को इस घर की तरफ़ मायल कर, इन्हें फलों की रोज़ी दे कि यह तेरे शुक्रगुज़ार बन्दे बनें परवर दिगार तू जानता है जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम ज़ाहिर करते हैं वाक़ई अल्लाह से कुछ भी छुपा हुआ नहीं है। न ज़मीन में न आसमान में। शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने बुढ़ापे में मुझे इस्माईल और इस्हाक़ (अलै0) जैसे बेटे दिये। मेरा रब दुआओं को सुनता है। ऐ मेरे परवरदिगार मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना मेरी औलाद को भी इसका पाबन्द बना। मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमाले। परवरदिगार मुझे और मेरे वालदैन को और जुमला मोमिनीन को उस दिन माफ़ करदे जब तू सबसे हिसाब लेगा।

अल्लाह को उन ज़ालिमों के करतूत से बेख़बर न समझो वह उनको बस उसी दिन के लिए टाल रहा है जिस दिन आँखे फटी की फटी रह जाएंगी और वह सर उठाए हुए भाग रहे होगें। टिकटिकी बंधी होगी और उनके दिल उड़े हुए होंगे वह फ़रियाद करेंगे..............एक हमारे रब! हमें थोड़ी सी मोहलत और दे दे, हम तेरी दावत को क़ुबूल कर लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे............'' **अल्लाह गालिब और इंतकाम की कुदरत रखने वाला है...........** उस दिन को याद रखो जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी और आसमान भी और सब अल्लाह वाहिद

क़हहार के सामने पेश होंगे और तुम मुजरिमों को उस दिन जंज़ीरों में जकड़ा हुआ देखोगे। उनके लिबास कारकोल के होंगे और उनके चेहरे पर आग छाई हुई होगी, ताकि अल्लाह हर जान को उसकी कमाई का बदला दे। और अल्लाह को हिसाब चुकाते कोई देर नही लगेगी। यह लोगों के लिए एक ऐलान है ताकि इस के ज़रिये वे आगाह कर दिये जाएं और **जान लें कि वही एक माबूद है और एहले अक्ल** इससे याद-दहानी हासिल कर लें।

सूरत-ए-अलहिज्र में हज़रत मोहम्मद (स.) को ख़िताब करके यह इत्मीनान दिलाया गया है कि यह क़ुरआन बजाए ख़ुद एक वाज़ेह हुज्जत है। अगर यह लोग इस को नहीं मान रहे तो यह कोई अनोखी बात नहीं है। **हमेशा से रसूलों को झुठलाने वालों की यही रविश रही है। आप को तो जो कुछ हुक्म मिला है उसको अलल-ऐलान सुनाते रहिए और मुश्रिकों से दामन बचाईये। हम आपकी तरफ़ से उनसे निपटने के लिए काफ़ी हैं। आप तो अपने रब की, उसकी हम्द के साथ तस्बीह करते रहें और सज्दा करने वालों के साथ शामिल रहिये और अपने रब की, इताअत व इबादत में लगे रहिये, यहां तक कि वह यक़ीनी वक्त आ जाए यानी मौत या कयामत।**

सूरते-अन्नह्ल की इब्तिदा ही ज़बर्दस्त वार्निंग से हुई है.............**बस आया ही चाहता है अल्लाह का फैसला! अब इसके लिए जल्दी न मचाओ। पाक है वह और बालातर है उस शिर्क से जो ये लोग कर रहे हैं।** वह इस ''रूह'' यानी ''वही'' को अपने जिस बंदे पर चाहता है अपने हुक्म से मलाइका के ज़रिये नाज़िल फ़रमा देता है कि आगाह करो, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं लिहाज़ा तुम मुझ ही से डरो। उसने आसमान व ज़मीन को बरहक़ पैदा किया है। उसने इंसान को ज़रा सी बूंद से पैदा किया और देखते देखते वह सरीहन ''एक झगड़ालू हस्ती बन गया और उन तमाम निशानियों को नज़रअंदाज़ कर दिया कि अल्लाह ने उसकी खूरवार और तरह-तरह के बेशुमार फ़ायदों के लिए जानवर पैदा किये। समन्दर जैसी अज़ीमुश्शान और पुर-खतर चीज़ को उसके लिए मुसख़्ख़र कर दिया। **तो क्या वह जिसने अन चीजों को पैदा किया और जो कुछ भी पैदा नहीं करते, दोनों बराबर हैं? वे जिन्हें लोग ख़ुदा को छोड कर पुकारते हैं ख़ुद मख़्लूक़ हैं,''** मुर्दा हैं न कि ज़िंदा। और उनको कुछ मालूम नहीं कि उन्हें कब दोबारा ज़िंदा कर के उठाया जाएगा।

हमने हर उम्मत में एक रसूल भेज दिया और उसके जरिये से सबको खबरदार कर दिया कि अल्लाह की बंदगी करो और तागूत की बंदगी से बचो। इसके बाद उनमें से किसी को अल्लाह ने हिदायत बख़्शी और किसी पर गुमराही मुसल्लत हो गई। ज़रा ज़मीन में चल फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का क्या अंजाम हो चुका है?

क्या ये लोग अल्लाह की पैदा की हुई किसी चीज़ पर भी ग़ोर नहीं करते कि **उसका साया किस तरह अल्लाह के हुज़ूर सज्दा करते हुए दायें और बायें गिरता है?** सब के सब इस तरह अपनी आजिज़ी का इज़्हार करते हैं। ज़मीन और आसमान में जिस क़दर जानदार मख़्लूक़ हैं और जितने मलाइका हैं सब अल्लाह के आगे सर बसुजूद हैं। वह हरगिज़ सरकशी नहीं करते। अपने रब से जो उनके ऊपर है डरते हैं, और जो कुछ हुक्म दिया जाता है उस ही के मुताबिक़ काम करते हैं। आख़िरत के अंजाम से बेख़ौफ रहने वालों को आगाह किया, अगर कहीं अल्लाह लोगों को उनकी ज़्यादतियों पर फ़ौरन पकड़ लिया करते तो रू-ए-ज़मीन पर किसी जानदार को ज़िन्दा न छोड़ता। लेकिन वह तो सब को एक मुक़र्ररा वक़्त तक मोहलत देता है। फिर वह वक़्त आ जाता है तो घड़ी भर भी आगे पीछे नहीं हो सकता।

उन्हें कायनात की अशया में ग़ौरोफ़िक्र करना चाहिये। मवेशियों मे भी एक सबक़ मौजूद है कि उनके पेट में गोबर और खून के दरमियांन ख़ालिस दूध हम पैदा करते हैं जो पीने के वालों के के लिये ख़ुशगवार है। खजूर और अंगूर की बेले हैं कि हये तुम्हारी रोज़ी है और इनसे तुम नशाआवर चीज़ें भी बनाते हो। समझदारों के लियें इसमें निशानी है ख़ुदा ने शहद की मक्खी को यह बात सिखादी कि पहाड़ों दरवाज़ों चढ़ाई हुई टेटों में अपना छत्ता बना और हर तरह के फलों का रस चूस कर ख़ुदा के रास्ते पर आजिज़ी के साथ चल। शहद की मक्खी के पेट से रंग बिरगं का एक मशरूब निकलता है जिसमें लोगों के लियें शिफ़ा है। ग़ौर करने वालों के लियें इसमें निशानी है। देखो ख़ुदा ने तुमको पैदा किया वही तुम्हें मारता भी है तुम में से बाज़ को बदतरीन उम्र को पहुचा दिया जाता है ताकि सब कुछ

जानने के बाद कुछ न जाने। इल्म और कुदरत में अल्लाह ही कामिल है। खुदा ने किसी को कम रोज़ी दी, किसी को ज़्यादा दी जिस को ज़्यादा दी वह कम रोज़ी वालों को नहीं देता कि बराबर हो जाये। अल्लाह के अहसान का लोग क्यों इनकार करते हैं। वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लियें बीवियां बनायी और उनसे तुम्हें बेटे और पोते दिये। अच्छी अच्छी चीजें खाने को दीं फिर भी तुम बातिल को मानते हो। अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री करते हो।

उन मुनकरों को कुछ होश भी है कि उस रोज क्या बनेगा जबकि हम हर उम्मत में से एक गवाह खड़ा करेंगे फिर मुनकरों को न हुज्जतें पेश करने का मौका दिया जाएगा न तौबा व अस्तगफार का और न उनके अज़ाब में कोई कमी की जाएगी। ऐ मोहम्मद (स.) उन्हें उस दिन से खबरदार कर दीजिए जब आपको उनके मुकाबले में शहादत के लिए खड़ा किया जाएगा। यह उसी शहादत की तैयारी है कि हमने यह किताब आप पर नाजिल कर दी है। जो हिदायत, रहमत और बशारत है उन लोगों के लिए जिन्होंने सरे-तस्लीम खम कर दिया है।

- ❖ आज की तरावीह का बयान खत्म हुआ।
- ❖ अल्लाह तआला हम सबको पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।
- ❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

''आमीन''

आज की तराहवी के चन्द अहम नुकात



बारहवीं तरावीह

आज की तरावीह में चौदहवें पारे के तेरहवें रूकूअ से पंद्रहवें पारे के इख्तिाम तक तिलावत की गई। जिस रूकूअ पर इख्तिाम हुआ था उसमें बताया गया था कि जो लोग अपने आप को खुदा के हवाले कर दें उनके लिए यह किताब सिराते मुस्तकीम की तरफ रहनुमाई करेगी और रहमत व बशारत साबित होगी। अब फरमाया गया कि इसकी हिदायत और रहमत व बशारत की बुनियाद यह है कि अल्लाह हुक्म देता है अदल का, अहसान का और कराबतदारों को देते रहने का, और रोकता है बेहयाई, सरकशी से, तमाम नेकियों और बुराइयों की जड़ इन्हीं में है। अदल यह है कि जिसका जो हक बनता है, हम बगैर किसी कमी बेशी के उसको अदा करें ख्वाह हकदार कमजोर हो या ताकतवर और ख्वाह हम उससे राजी हों या नाराज। उसका हक किसी हाल में न रोकें। अहसान अदल से ज्यादा चीज है। यानी यह कि हम फैयाजाना और करीमाना सुलूक करें। फिर रिश्तेदारों पर अदल व अहसान के अलावा मजीद अपने माल खर्च करें। इसी तरह बदकारी, बेहयाई के कामों से और हर उस काम से जो एक शरीफाना मुआशरे में अच्छा नही समझा जाता, हमें बचना चाहिए और अपनी ताकत और असर से कोई नाजायज फायदा नहीं उठाना चाहिए।

जो शख्स भी नेक अमल करेगा मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो हम उसे दुनियां में पाकीज़ह ज़िन्दगी अता करेंगे और आख़िरत में उनके बेहतरीन आमाल के मुताबिक बख़शेंगे। जब भी कुर्आन पढ़ने का इरादा हो तो आऊज़ो बिल्लाहे मिनशशैतानिर रजीम पढ़ लिया करो यानि शैतान मरदूद से खुदा की पनाह मांग लिया करो। इस आयत की रू से तिलावते कुर्आन पाक के लियें आऊज़ो बिल्लह पढ़ना ज़रूरी है। हत्ता कि दरमियान में दुनयावी गुफ़्तगू हो तो दोबारह शुरू करने के लियें तअज़ पढ़ना ज़रूरी है क्योंकि कुर्आन किताबे हिदायत है और शैतान कभी न चाहेगा कि बन्दा राहे रास्त पर रहे। अल्लाह ने आऊज़ो बिल्लाह पढ़ने का हुक्म देकर शैतान के शर से महफूज़ फ़रमाया। शैतान का तसल्लुत उन लोगों पर नहीं होता जो ईमान लाते हैं और खुदा पर भरोसा करते हैं। शैतान का ज़ोर उन लोगों पर चलता है जो उसे सरपरस्त बनाते हैं और उसके बहकाने से शिर्क करते हैं।

कुफ़्र का मसलह आयत 106 में है कि जो शख्स ईमान लाने के बाद कुफ़्र करे वह अगर मजबूर किया गया हो और उसका दिल ईमान पर मुतमइन हो (तो जान बचाने के लियें कुफ़्र का कलमा कह सकता है) मगर जिसने दिल की रज़ामन्दी से कुफ़्र को कुबूल कर लिया उस पर अल्लाह का ग़ज़ब है और बड़ा भारी अज़ाब है।

मतलब यह है कि मोमिन के लियें यह रूख्सत है कि अगर वह कुफ्फ़ार के नर्गे में हो और उससे कुफ़्र का मुतालबा किया जाये तो वक कलमए-कुफ़्र कह सकता है बशर्ते कि ईमान पर उसका दिल मुतमइन हो अलबत्तह अज़ीमत यह है कि तिक्का बोटी कर दी जाये या आग में झोंक दिया जाये मगर कलमए-कुफ़्र ज़बान पर लाना गवारह न करे साहबे कराम रज़ी उल्लाहू अन्हुम की मिसालें मौजूद हैं। खुबाब बिन अरत (रज़ी0) को अंगारों पर लिटाया गया। बिलाल हब्शी (रज़ी0) को ज़िरह पहनाकर धूप में खड़ा किया गया। अम्मार बिन यासि (रज़ी0) को आखों के सामने वालदैन को सख्त अज़ाब देकर शहीद किया गया मगर इन हज़रात ने कलमए-कुफ़्र कहना गवारह न किया फिर हज़रते अम्मार (रज़ी0) को नाकाबिले बर्दाश्त अज़ीयत दी गयी। आख़िरकार उन्होंने जान बचाने के लियें वह सब कुछ कह दिया जो कुफ्फ़ार कहलवाना चाहते थे। वह रोते हुए आँहुज़ूर (स0) की खिदमत में आये और कैफ़ियत बताई। आप (स0) ने पूछा अपने दिल का क्या हाल पाते हो उन्होंने अर्ज़ किया ईमान पर पूरी तरह मुतमइन पाता हूँ उस पर आप (स0) ने फ़रमाया अगर वह फिर इस तरह का ज़ुल्म करें तो तुम फिर यही बातें कह देना।

दो गिराहों का जिक्र किया। एक वह जिन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी और इसके ऐश-ओ-आराम को तर्जीह दी। इनके बारे में अल्लाह का फ़ैसला है कि वह उन्हें सीधा रास्ता नहीं दिखाएगा और उनके दिलों पर, कानों पर; और आँखों पर मोहर लगा देगा। लाज़िमन यह आख़िरत में इन्तिहाई नुक़्सान में रहेंगे।

दूसरा गिरोह उन लोगों का है जो ईमान लाने की वजह से सताए गए तो उन्होंने घर-बार छोड़ दिये। हिजरत की। राह-ए-ख़ुदा में सख़्तियां झेलीं और सब्र से काम लिया। अनके लिए यकीनन तुम्हारा रब गफ़ूर-उर-रहीम है। लोगों को दीन की तरफ बुलाने के लिये हिदायत दी कि अपने रब के रास्ते की तरफ हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ दावत दो और बहस करना पड़े तो इस तरह बहस करो जो पसंदीदा है। बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसकी राह से भटका हुआ है और कौन उसकी हिदायत पर है। अगर तुम किसी से बदला लो तो उतना ही लो जितना तुम्हारे साथ किया गया और अगर तुम सब्र कर लो तो यह चीज सब्र करने वालों के लिए बहुत ही बेहतर है। और उन्हे सब्र नहीं हासिल हो सकता मगर अल्लाह ही के ताल्लुक से और तुम इन मुख़ालिफीन की हरकतों से गमजदा न हो और न उनकी चालों से परेशान हो। यकीनन अल्लाह उनके साथ है जिन्होंने तक़वा इख़्तियार किया और अहसान के साथ काम किया।

सूर: बनी इसराईल में उन्हें उनकी अपनी तारीख़ की रोशनी में बताया गया कि अगर तुम इस गुरूर में मुब्तिला हो कि अल्लाह के चहीते और महबूब हो तो यह ख़ुदफ़रेबी है। तुम्हारी अपनी तारीख़ गवाह है कि जब तुमने ख़ुदा से बग़ावत की तो तुम पर मार भी पड़ी। ख़ुदा की रहमत के मुस्तहक़ तुम उस वक़्त हुए जब तुमने इस्लाह की राह इख़्तियार की। साथ ही मैराज के वाक़्ये को बता मुश्रिकीन और बनी इसराईल दोनों पर यह वाज़ेह किया कि अब मस्जिदे-हराम और मस्जिदे-अक़्सा दानों की अमानत तुम ख़ाइनों से छीन कर इसी नबी-ए-उम्मी (स.) के हवाले करने का फ़ैसला हो चुका है। जिसको सुर्ख़रू होना हो वह अपनी रविश बदल कर इस रसूल (स.) की हिदायत के मुताबिक कर ले। वरना अपनी जिद और सरकशी के नताइज भुगतने के लिए तैयार हो जाएं। इसी ज़िम्न में अख़लाक़ व तमद्दुन के वे बड़े-बड़े उसूल बयान किये जिन पर ज़िन्दगी के निज़ाम को क़ायम करने के लिए मोहम्मद (स.) को यह आख़िरी किताब दी गई। यह गोया इस्लाम का मन्शूर है, जिसे मदीने में इस्लामी रियासत क़ाइम करने से एक साल पहले सबके सामने पेश कर दिया गया। कुफ़्फ़ारे-मक्का के सामने भी, और एहले किताब के सामने भी। (और अब तमाम इन्सानों के लिए क़यामत तक के वास्ते भी, यही मन्शूर काफ़ी है) फ़रमाया हर इन्सान का शगून हमने उसके गले में डाल दिया है और क़यामत के दिन हम उसका नामाए-आमाल निकालेंगे और कहेंगे ले पड़ ले अपना नामाए-आमाल अगर अपना हिसाब करने के लियें तू ख़ुद ही काफ़ी है जो सीधी राह पर होगा उसका फ़ायदा उसी को होगा जो गुमराह होगा उसका बवाल उसी पर होगा कोई किसी का बोझ न उठायेगा। जब तक हम पैग़म्बर (डराने वाला) न भेजदें हम अज़ाब देने वाले नहीं और हम जब किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं तो उसके ख़ुशहाल लोगों को हुक्म (ढील) देते हैं वह इसमें नाफ़रमानियां करने लगते हैं तब अज़ाब का फ़ैसला उस बस्ती पर चस्पाँ हो जाता है और हम उसे बरबाद करके रख देते हैं। नूह (अलै0) के बाद कितनी ही नस्लों को हमने बरबाद किया। तेरा रब अपने बन्दों के गुनाहों से पूरी तरह बाख़बर है और सब कुछ देख रहा है। जो दुनिया चाहता है हम जिसको चाहते हैं जितना चाहते हैं दे देते हैं फ़िर उसकी क़िस्मत में जहन्नुम लिख देते हैं जिसमें वह मलामतजदह दाख़िल होगा और जो आख़िरत का ख़्वाहिशमन्द हो और उसके लियें वैसी कोशिश करे जैसी कोशिश करना चाहिये और वह मोमिन हो तो ऐसों की कोशिषें हमारे नज़दीक क़ाबिले क़द्र होंगीं इनको भी और उनको भी (दोनों को) हम दुनिया दे रहे हैं। यह तेरे रब का अतियाह है कोई उसे रोकने वाला नहीं मगर देख लो दुनिया ही में हमने एक गरोह को दूसरे पर कैसी फ़ज़ीलत दे रखी है और आख़िरत में उसके दरजे और भी ज़्यादा होंगे और फ़ज़ीलत भी बढ़ चढ़ कर होगी ख़ुदा के साथ किसी और को माबूद न बनाइये वरना मलामत ज़दह बे यारो मददगार बन कर बैठे रह जायेंगे। फ़रमाया गया तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है कि (1) इबादत सिर्फ़ अल्लाह की करो (2) वालिदेन के साथ नेक सुलूक करो (3) रिश्तेदारों, मिस्कीनों और मुसाफिरों को उनका हक दो (4) फ़ुज़ूल ख़र्ची न करों (5) अगर किसी की जरूरत पूरी न कर सको तो नर्मी से जवाब दे दो (6) न

कंजूसी करो न फ़ुजूल ख़र्ची, एतिदाल की राह इख़्तियार करो (7) अपनी औलाद को मुफ़लिसी के ख़ौफ से कत्ल न करो (8) जिना के करीब भी न फटको (9) बगैर कानूनी जवाज के किसी को कत्ल न करो (10) कानूनी हुद्‌द से बाहर यतीम के माल के पास भी न फटको (11) बाहमी कौल व करार की पाबंदी करो (12) नाप और तोल में कभी बेशी न करो (13) जिस बात का तुम्हें इल्म न हो उसके पीछे मत पड़ो (14) गुरूर और तकब्बुर की चाल न चलो, ये वह हिकमत की बातें हैं जो तुम्हारे रब ने तुम पर ''वही'' की हैं।

ये आख़िरत के मुनकिरीन ताज्जुब का इज़हार करते हैं कि ख़ाक हो जाने के बाद कैसे पैदा किये जाएंगे कहो जिस तरह पहले पैदा किये गये थे और उन्हें हमारे अज़ाब का यक़ीन नहीं है। कहो कि कोई बस्ती ऐसी नहीं है कि हमने उसे एक वक्त आने पर हलाक न कर दिया या उस पर आज़ाब न भेजा हो। फिर शैतान के अज़ली दुश्मन होने का ज़िक्र किया गया ताकि समझ में आ सके कि कुफ़्, नाफ़रमानी और नाशुक्री की रविश शैतान की रविश है और जो इस पर चलेगा वह गोया शैतान की पैरवी करेगा हालांकि यह रविश धोखे के सिवा कुछ नहीं। कहने पर तो उस रब की चलना चाहिए जो तुम सब का हक़ीक़ी रब है, जो समन्दरों में कश्तियां चलाता है ताकि रोज़ी हासिल कर सको। क्या तुम इस बात से बेख़ौफ़ हो गए हो कि तुम्हें वह ख़श्की पर ज़मीन में धंसा दे या तुम पर पथराव करने वाली आध ी भेज दे और तुम कोई हिमायती न पाओ।

सीधे रास्ते पर साबित कदमी के लिए नमाज के एहतिमाम की ताकीद की और फरमाया नमाज कायम करो जवाले-आफताब से रात के अंधेरे तक और फज्र के कुरआन इलतिजाम करो क्योंकि फज्र में पढे जाने वाले कुरआन के ख़ासतौर पर ख़ुदा के फरिश्ते गवाह बनते हैं और रात को तहज्जुद पढो यह तुम्हारे लिए नफ़्ल है ताकि तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें मुकाम-ए-महमूद पर फाइज कर दे और दुआ करो कि परवर्दिगार तू मुझे जहां भी ले जा सच्चाई के साथ ले जा और जहां से भी निकाल सच्चाई के साथ निकाल और अपनी तरफ से एक इक्तिदार को मेरा मददगार बना और ऐलान करदो कि हक आ गया ओर बातिल मिट गया, बातिल तो है ही मिटने के लिए।

हर ज़माने की जिहालतों में से एक यह है कि लोग इस ग़लतफ़हमी में मुब्तिला रहे हैं कि बशर कभी पैग़म्बर नहीं हो सकता। इसी लिए जब कोई रसूल आया तो उन्होंने यह देखकर कि यह तो खाता पीता है, बीवी बच्चे रखता है, गोश्त-पोस्त का बना हुआ है फ़ैसला कर दिया कि यह पैग़म्बर नहीं था। चुनाँचे किसी ने उसको ख़ुदा का बेटा कहा और किसी ने उसको ख़ुदा बना लिया। किसी ने कहा ख़ुदा उसमें हुलूल कर गया है। ग़र्ज़ बशरियत और पैग़म्बरी का उन जाहिलों के नज़दीक जमा होना एक मुअम्मा बना रहा। हालाकि बात बिल्कुल खुली है कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते चल फिर रहे होते तो हम ज़रूर आसमान से किसी फ़रिश्ते ही को पैग़म्बर बनाकर भेजते। जब बशर ज़मीन में बसते हैं तो उनकी रहनुमाई के लिए बशर ही को रसूल बनाया है।

सूरत को ख़त्म करते हुए फ़रमाया ऐ नबी (स.)! इनसे कहो अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर, जिस नाम से भी पुकारो, उसके लिए सब अच्छे ही नाम हैं और कहो तारीफ है उस ख़ुदा के लिए जिसने न किसी को बेटा बनाया न कोई बादशाही में उसका शरीक है।

और न ही वह आजिज है कि कोई उसका सहारा बने। और उसकी बड़ाई बयान करे। कमाल दर्जे की बड़ाई।

इसके बाद सूरह कहफ़ है। यहूदियों की तरह ईसाईयों ने भी कुरैश को उकसाया कि इनसे ज़रा असहाबे-कहफ़ यानी ग़ार वालो का हाल पूछो अल्लाह ने हज़रत मोहम्मद (स.) को उनके हालात से आगाह फ़रमाया कि चंद नौजावान जो ख़ुदा की तौहीद पर ईमान लाए थे अपने मुशरिक मुआशरे के मज़ालिम से तंग आकर बस्ती से निकल खड़े हुए और पहाड़ की एक ग़ार में पनाह गज़ीन हो गए। अल्लाह ने उन पर तवील नींद तारी कर दी और ग़ार के मुंह पर उनका कुत्ता भी नींद में उसी तरह बैठा रहा कि देखने वाले उसे ज़िंदा समझकर पास भी न फटक सकें। बरसों के बाद जब मुश्रिक व जाबिर हुकूमत बदल गई तो अल्लाह ने उन्हें नींद से बेदार किया और बाहर के हालात से वाकिफ़ कराने के बाद फिर उन पर मौत तारी कर दी। इस वाक्ये के आईने में अल्लाह ने नबी (स.) और आप (स.) के सहाबा को दिखा दिया कि तुम इस वक्त दावत के जिस मरहले में हो यह मरहला असहाबे कहफ़ को भी पेश आया था। अगर

तुम सब के साथ इसी रास्ते पर चलते रहे तो अल्लाह तुम्हारे लिए भी इसी तरह रास्ता निकालेगा जिस तरह उनके लिए निकाला था। अल्लाह अपनी राह में चलने वालों को कभी जाया नहीं करता।

नबी (स.) को इस मौके पर तवज्जह दिलाई कि दुनिया के लालची लोगों के मुकाबले में अपने गरीब और नादार साथियों की तरफ ज्यादा तवज्जह दीजिए जो अगरचे दुनिया की दौलत से महरूम हैं मगर ईमान की दौलत से मालामाल हैं। दिन रात अल्लाह की राह में और इस दिन की दावत में सरगर्म हैं। जो लोग इसी दुनिया की कामयाबी को अस्ल कामयाबी समझ बैठे हैं, उन्हें खेती के लहलहानें और आखिर में सूख कर भुसा बन जाने की मिसाल के जरिये समझाया कि यह दुनिया और इसकी बहारें चंद दिन की हैं उनमें से कोई चीज साथ जाने वाली नहीं। साथ सिर्फ ईमान और नेक आमाल जाएंगे। इस सरमाए को जमा करने की फिक्र करो।

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ अल्लाह तआला हम सबको पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

"आमीन"

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात

بسم الله الرحمن الرحيم

तेरहवीं तरावीह

आज की तरावीह में सोलहवें पारे से सत्रहवें पारे के चौथे रूकूअ तक तिलावत की गयी। इन आयात में बताया गया कि इस दुनिया में बज़ाहिर सरकशों और नाफ़रमानों को ढील मिलती और अहले हक़ को मुख़्तलिफ़ किस्म की आज़माइशों और तकलीफ़ों में मुब्तिला होना पड़ता है। यह सूरते हाल देखकर बहुत से लोग ईमान खो बैठते हैं और उनके लिए सब्र करना और हक़ पर डटे रहना मुश्किल हो जाता है। इस आज़माइश में सिर्फ़ वही साबित क़दम रह सकते हैं जिन पर यह बात अच्छी तरह वाज़ेह हो जाए कि यहां जो कुछ हो रहा है सब अल्लाह के इरादे के तहत हो रहा है और उसकी हिकमत के तक़ाज़ों के मुताबिक़ हो रहा है। लेकिन इन्सान का इल्म बहुत महदूद है। वह अल्लाह की हिकमतों और मसलेहतों का आहाता नहीं कर सकता। इस वजह से सही तरीक़ा यही है कि हिदायत के रास्ते में ना-मुआफ़िक़ और मुश्किल हालात भी पेश आएं तो आदमी उनसे हिम्मत न हारे और अल्लाह की हिक्मत के ज़ाहिर होने का इन्तेज़ार करे और यक़ीन रखे कि अगर इस दुनिया में अच्छे नताइज न भी निकलें तो आख़िरत में उसे अच्छा मुक़ाम मिल कर रहेगा। इस हिक्मते-खुदावंदी पर ईमान व यक़ीन और फिर सब्र, यही दीन की बुनियाद है। इसी वजह से अल्लाह तआला ने जब हज़रत मूसा (अ.) को एक अज़ीम मुहिम यानी फ़िरऔन के मुक़ाबले के लिए मुन्तख़िब किया तो आपको इस सब्र की तरबियत देने के लिए एक ख़ास बंदे के पास भेजा, जिन्हें उर्फ़े-आम में हज़रत ख़िज़्र कहा जाता है। इसलिए कि यह चीज़ सिर्फ़ जानने की नहीं, बल्कि अमली तरबियत की मोहताज है। यहां यह वाक़्या हज़रत मोहम्मद (स.) और आपके वास्ते से आप के उस दौर के साथियों को इस मक़सद के लिए सुनाया गया कि अल्लाह के बाग़ियों और नाफ़रमानों को दनदनाते देख रहे हो उससे हिरासां और मरऊब न हो। इस दुनिया में अगर किसी ग़रीब और मिस्कीन की कश्ती में छेद कर दिया जाता है तो उसमें आइन्दा उसी की भलाई मक़सूद होती है और अगर ज़ालिमों की किसी बस्ती में किसी गिरती हुई दीवार का सहारा दिया जाता है तो उसमें भी किसी मज़लूम के लिए ख़ैर पोशीदा होती है लेकिन इन्सान का महदूद इल्म अल्लाह के सारे भेदों का अहाता नहीं कर सकता।

फिर एक सवाल के जवाब में एक आदिल और मुन्सिफ़ बादशाह ज़ुलक़र्नैन का ज़िक्र करते हुए क़ुरैश को इब्रत दिलाई है कि एक मोमिन बंदा ज़ुलक़र्नैन था जो मशरिक़ और मग़रिब के तमाम इलाक़ो को फ़तह कर के भी हर काम्याबी पर अल्लाह का शुक्रगुज़ार होता था और हर क़दम अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ उठाता था और एक तुम हो कि ज़रा सा इक्तिदार मिला हुआ है तो उसी के नशे में खुदा, आख़िरत और उसके रसूल, सब का मज़ाक़ उड़ाते हो। बार-बार मौजिज़े तलब करने के जवाब में फ़रमाया कि देखने वालीं आंख के लिए तो इस कायनात और खुद तुम्हारी ज़िन्दगी में इतनी निशानियां खुदा परस्ती, तौहीद और आख़िरत की भरी पड़ी हैं कि अगर समन्दर रौशनाई बन जाएं तब भी उन्हें लिखा नहीं जा सकता। बस जो यह समझता है कि उसे एक दिन खुदा के सामने जाना है उसे चाहिए कि बिला किसी को शरीक ठहराए ख़ालिस एक ही खुदा की बंदगी करे और उसके अहकाम के मुताबिक़ अमल करे।

सूरः मरियम में सबसे पहले हज़रत ज़करिया (अ.) की इस दुआ का बयान किया जो उन्होंने अपने बुढ़ापे में और बीवी के बांझ होने के बावजूद एक बेटे के लिए की। और अल्लाह तआला ने उनकी दुआ क़ुबूल कर के उन्हें

हज़रत यहया (अ.) के पैदा होने की खुशख़बरी सुनाई । यह वाक्या हज़रत मरियम (अ.) के यहां मोजिज़ाना तौर पर बग़ैर बाप के हज़रत ईसा (अ.) की पैदाइश का वाक्या बयान करने से पहले तम्हीद के तौर पर बयान किया है। हज़रत यहया (अ.) की विलादत भी आम क़ानून से हटी हुई है। मर्द बूढ़ा हो गया था और औरत बिल्कुल बांक्ष और विलादत के नाक़ाबिल थी, मगर जब ख़ुदा ने चाहा तो उनके औलाद हो गई। मगर हज़रत यहया (अ.) ने तो ख़ुदाई का दावा नहीं किया और न किसी ने उन्हें ख़ुदा बनाया।

फिर हज़रत मरियम (अ.) की पाकीज़ा ज़िन्दगी और उनकी इबादत गुज़ारी का हाल बयान किया। हज़रत ईसा (अ.) की पैदाईश के बारे में बताया कि लोगों को एतराज़ के जवाब में ख़ुद हज़रत ईसा (अ.) ने पालने ही में अपने बन्दे होने और ख़ुदा की तरफ़ से नमाज़ और ज़कात की हिदायत पाने की मुनादी की। फिर बताया कि उन बदबख़्तों की हालत पर अफ़सोस है कि यह सब जानते बूझते अल्लाह के एक फ़रमाबरदार बन्दे को ख़ुदा और उसकी इबादत गुज़ार मां को ख़ुदा की बीवी बना रहे हैं।

फिर हज़रत इब्राहीम (अ.) ने अपने बाप को जो तौहीद की दावत दी और उसके नतीजे में उन्हें जिस तरह हिजरत करनी पड़ी उसका हवाला दिया और बताया कि अल्लाह के लिए हिजरत और मसाइब के मुक़ाबले में सब्र के बाद अल्लाह ने उन्हें बुढ़ापे में औलाद अता की। फिर हज़रत मूसा (अ.), हारून (अ.), इस्माईल (अ.), और इदरीस (अ.) के हालात व खुसूसियात मुख़्तसरन बयान की कि ये सब आदम (अ.), नूह (अ.), इब्राहीम (अ) और याकूब (अ.) की ज़ुर्रियत में उलुल-अज़्म अंबिया गुज़रे हैं। ये सब ख़ुदा की हिदायत से सरफ़राज़ और उसके बरगुज़ीदा बंदे थे। उनका हाल यह था कि जब ख़ुदा की आयात सुनते तो रोते हुए सज्दे में गिर पड़ते। फिर इनकी औलाद में ऐसे नाख़लफ़ पैदा हुए कि नमाज़ और ज़कात सब को ज़ाया कर दिया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवीं करने लगे। ये लोग अपनी इस गुमराही के अंजाम से अनकरीब दो-चार होंगे। इनके अन्दर से निजात वही पा सकेंगे जो तौबा और अपनी इस्लाह कर लेंगे।

इन्सान कहता है कि क्या जब मैं मर जाऊंगा तो फिर ज़िन्दा कर के निकाला जाऊंगा? क्या इन्सान इस बात को नहीं जानता कि जब हमने उसे पहले पहल पैदा किया तो वह इससे पहले कुछ भी न था। तुम्हारे रब की क़सम! हम उनको भी और शैतानों को भी ज़रूर इकठ्ठा करेंगे। फिर उनको जहन्नुम के गिर्द इस तरह हाज़िर करेंगे कि वो दो ज़ानू घेरा डाल बैठे होंगे। हम बताएंगे कि तुमको अब इस जहन्नुम में ज़रूर दाख़िल होना है। फिर हम उन लोगों को निजात दे देंगे जिन्होंने तक़वा इख़्तियार किया होगा और अपनी जानों पर ज़ुल्म ढाने वाले घेरे में उकड़ू बैठा हुआ छोड़ देंगे।

सूरह के ख़ात्में पर फ़रमाया वह कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया। सख़्त बेहूदह बात है जो तुम लोग गढ़ लाये हो, क़रीब है कि आसमान फट जाये ज़मीन शक़ हो जाये और पहाड़ गिर जाये इस बात पर कि लोगों ने रहमान के लिये औलाद होने का दावा किया, रहमान की यह शान नहीं है कि वह किसी को बेटा बनाये। ज़मीन और आसमान में जो भी है सब उसके हुज़ूर बनदों की हैसियत से पेश होने वाले हैं।

इस आयत में अल्लाह तआला इस बात पर सख़्त ग़ज़बनाक है कि लोगों ने हज़रत ईसा (अलै0) को अल्लाह का बेटा बताया। ऐसी बात पर आसमान ज़मीन फट जायें और पहाड़ रेज़ह रेज़ह हो जायें तो कोई ताज्जुब नहीं जब अल्लाह तआला किसी को बेटा बनाना पसंन्द नहीं फ़रमाता फिर वह कैसे किसी इन्सान को अपना हमसर बना सकता है और इन्सानों में जिन लोगों ने बुज़ुर्गानेदीन को हाजत रवा मुश्किल कुशा बनाये है वह कितने बड़े गुनाह का

इरतिक़ाब कर रहे हैं। नीज़ जो लोग नबी (स0) को ख़ुदा का रूप देते हैं वह ख़ुदा पर कितनी बड़ी जुरअत दिखा रहे। वही जो मुसतवी अर्श था ख़ुदा होकर उतर पड़ा वह मदीने में मुस्तफ़ा होकर। ऐसा अक़ीदत रखने और ऐसा शेर पढ़ने पर ज़मीन आसमान फट जाये, पहाड़ चूर चूर हो जये, बल्कि आंधी तूफ़ान और सैलाब भी आये तो कम हैं। अल्लाह तआला इस खुले हुए शिर्क से महफ़ूज़ रखे। यक़ीनन जो लोग ईमान ले आये और अमल सालेह कर रहे हैं अनक़रीब रहमान उनके लियें दिलों में मोहब्बत पैदा कर देगा। पस ऐ नबी (स0) हमने इस किताब को तुम्हारी ज़बान में इसलिए आसान कर के उतारा है ताकि तुम खुदातरसों को बशारत दे दो और झगड़ालू क़ौम को ख़बरदार कर दो कि उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हमने हलाक कर छोड़ा है। क्या तुम इनमें से आज कहीं किसी की बू भी महसूस करते हो या किसी की आहट सुनते हो।

सूरह ताहा में नबी-ए-करीम (स) को मुख़लिफ़ीन के मुक़ाब्ले में सब्र और नमाज़ की तलक़ीन की है और फ़रमाया कि आपका काम सिर्फ़ उन लोगों को याद दहानी करवाना है जिनके अन्दर खुदा का कुछ भी ख़ौफ़ बाक़ी है, रहे वो लोग जिनके दिल ख़ौफ़ से ख़ाली हो चुके हैं, उनके अन्दर ईमान उतार देना आपकी ज़िम्मेदारी नहीं है। क़ुरआन किसी मांगने वाले की दरख़्वास्त नहीं है कि भाई मेरी सुन लो। बल्कि यह ख़ालिके-अर्ज़ोसमां, मालिके-अर्शो कुर्सी का फ़रमान है। इसको उसी के शायाने-शान अंदाज़ में पेश कीजिए। नाक़द्रों और मग़रूरों की ज़्यादा नाज़बरदारी की ज़रूरत नहीं है। अपने रब पर भरोसा कीजिये। वह आपके तमाम ढके और खुले कामों से अच्छी तरह बाख़बर है।

हज़रत मूसा (अ.) के वाक़्यात बयान किये कि किस तरह फ़िरऔन जैसे दुश्मन के घर में परवरिश कराई। हज़रत मूसा (अ.) के हाथों एक क़िब्ती का क़त्ल हुआ और आप मिस्र से निकल गए। मगर उसी को अल्लाह ने नबूवत पाने का ज़रिया बना दिया। हज़रत हारून (अ.) को आपका मददगार बनाया और फ़िरऔन के पास दावत देकर भेजा। उसने जादूगरों को इकठ्ठा कर के आपको नाकाम बनाने की कोशिश की, मगर जादूगर उल्टा उन पर ईमान ले आए। फिर बनी इसराईल को साथ लेकर हिजरत की। फ़िरऔन ने पीछा किया और मय लावे-लश्कर के ग़र्क़े दरिया हो गया। फिर फ़िरऔन से निजात पाने के बाद अल्लाह ने बनी इसराईल पर जो इनामात किये और बनी इसराईल जिस तरह बार बार नाशुक्री करते रहे उस पर तब्सिरा करते हुए नबी (स0) को ख़िताब कर के फ़रमाया कि ये जो हालात हम सुना रहे हैं, ये माज़ी के क़िस्से नहीं हैं बल्कि यही हालात आप को पेश आ रहे हैं। आप जल्दी न करें। सब्र के साथ ख़ुदा के फ़ैसले का इन्तेज़ार करें। जल्दी शैतान को दख़्लअंदाज़ी का मौक़ा देती है। आदम (अ0) ने जल्दी ही की वजह से शैतान से धोखा खाया था। इसलिए आप सब्र के साथ काम किये जाईये और अंजाम अल्लाह पर छोड़ दीजिए। इस सब्र की आदत के लिए नमाज़ का एहतिमाम कीजिए।

फ़रमाया जो मेरे ज़िक्र (दर्से नसीहत, क़ुर्आन) से मुँह मोड़ेगा उसके लिये दुनिया में ज़िंदगी तंग होगी। यहाँ चैन नसीब न होगा, करोड़पती भी होगा तो बेचैन होगा और क़यामत के रोज़ हम उसे अन्धा बनाकर उठायेंगे। वह कहेगा परवरदिगार दुनिया में तो मैं आंखों वाला था यहाँ मुझे अन्धा क्यों उठाया। अल्लाह तआला फ़रमायेगा जब हमारी आयात तेरे पास आई थीं, तूने हमारी आयात को भुला दिया था। उसी तरह आज तू भुलाया जा रहा है और इसी तरह हम हद से गुज़रने वाले और अपने रब की आयात न मानने वाले को दुनिया में बदला देते हैं और आख़िरत का अज़ाब ज़्यादा सख़्त और देर पा है।

ऐ नबी (स0) जो बातें यह लोग बनाते हैं उन पर सब्र करो। अपने रब की हम्दो-सना के साथ उसकी तस्बीह करो। सूरज निकलने से पहले (फ़ज्र) और डूबने से पहले (अस्र) और रात के औक़ात में तस्बीह (ईशा) करो और

दिन के किनारों पर भी (ज़ोहर व मग़रिब) शायद कि तुम राज़ी हो जाओ जो तुम्हें आइन्दह मिलने वाला है। और निगाह उठाकर भी न देखो दुनयावी ज़िंदगी की उस शानो-शौकत की तरफ़ जो हम ने उन मुख्तलिफ़ क़िस्म के लोगों को दे रखी है। वह तो हम ने उन्हें आज़माने के लिये दी है और तेरे रब का दिया हुआ रिज़्क़ हलाल ही बेहतर और पाइन्दहतर है कि अहले ईमान फ़िस्क़ो फ़ुज्जार की तरह जाइज़ व नाजाइज़ पैसे जमा करके दुनियावी चमक-दमक से मरऊब नहीं होते बल्कि वह तो जो पाक कमाई अपनी मेहनत से कमाते हैं ख़्वाह कितनी ही थोड़ी क्यों न हो वही उनके लिये बेहतर है जो दुनिया से आख़िरत तक बरक़रार रहेगी। फ़रमाया अपने अहलो-अयाल को नमाज़ की तल्क़ीन करो और ख़ुद भी उसके पाबंद रहो! हम तुम से कोई रिज़्क़ नहीं चाहते, रिज़्क़ तो हम ख़ुद देते हैं और बेहतरीन अन्जाम तक़वा अख्तियार करने वालों का है।

सूरह अंबिया के चार रूकूअ पढ़े गये। इनमें इस हक़ीक़त की फिर याद दिहानी कराई गई कि मुहासिबे का वक़्त क़रीब आ गया है और लोगों का हाल यह है कि ग़फ़लत में पड़े हुए हैं। और जो ताज़ा याद दिहानी अल्लाह की तरफ़ से आती है उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं। क्या ये समझते नहीं कि हमने कितनी ही बस्तियों को हलाक कर दिया है, जिनके लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म ढाते थे। बस जब उन्होंने हमारे अज़ाब की आहट पाई तो भाग खड़े हुए। हमने कहा .... ''अब कहां भागते हो?'' हाय हमारी कमबख़्ती! बेशक हम ही अपनी जानों पर ज़ुल्म ढाने वाले थे। वे यही वावैला करते रहे कि हमने उनको ख़सो-ख़ाशाक और राख बनाकर रख दिया।

इंसान जल्दबाज़ी के ख़मीर से पैदा हुआ है और इसलिए जल्दी मचा रहा है। आख़िर अज़ाब का वायदा कब पूरा होगा? काश ये कुफ़्र करने वाले जान सकते उस वक़्त जब ये दोज़ख़ के अज़ाब को न अपने चेहरों से दफ़ा कर सकेंगे, न अपनी पीठों से, और न कहीं से मदद हासिल कर सकेंगे बल्कि वह घड़ी उन पर अचानक आ धमकेगी और उनको मब्हूत कर देगी। हमने मूसा (अ.) और हारून (अ.) को हक़ व बातिल के दरम्यान फ़र्क़ करने वाली कसौटी, रौशनी और याददहानी अता फ़रमाई। उनके लिए, जो ग़ैब में रहते हुए, रब से डरते हैं और वे क़यामत से लर्ज़ा रहते हैं और यह भी एक बा-बर्कत याद दहानी है जो हमने नाज़िल फ़रमाई है तो क्या तुम इसके मुन्किर बने रहोगे।

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ अल्लाह तआला हम सबको पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

''आमीन''

بسم الله الرحمن الرحيم

चौदहवीं तरावीह

आज की तरावीह में सत्रहवें पारे के पांचवे रूकूअ से अठारहवें पारे के आठवें रूकूअ तक तिलावत की गई। आज की आयात हज़रत इब्राहीम (अ.) के तज़्किरे से शुरू होती हैं। यह बताते हुए कि हमने उन्हें वह हिदायत व मारफ़त अता फ़रमाई जो उनके शायान-ए-शान थी और यूं ही नहीं बख़्श दी थी बल्कि निहायत कड़े इम्तिहानों से गुज़ार कर बख़्शी थी। जिनके ज़रिये उन्होंने अपने आप को इसका हक़दार साबित किया था। इस तरह बताना यह मक़सूद है कि तुम लोग अपने अंदर हिम्मत तो हज़रत इब्राहीम (अ.) की किसी सुन्नत पर चलने की भी नहीं रखते लेकिन उनके साथ निस्बत के दावेदार हो और इस निस्बत के बल पर अपने आप को दुनिया और आख़िरत दोनों में बड़े से बड़े मर्तबे का हक़दार समझते हो। फ़रमाया कि खुदा के यहां इस ग़लत बख़्शी की कोई गुंजाईश नहीं। वह जिसको भी अपनी मारफ़त और हिक्मत अता करता है उसका ज़र्फ़ और हौसला देखकर अता करता है फिर उनकी जवानी का हाल बयान किया कि अगरचे वह एक बुतपरस्त कौम और मुश्रिक व बुत बनाने वाले ख़ानदान में पैदा हुए थे, लेकिन अल्लाह तआला ने उनको तौहीद का वह नूर अता फ़रमाया कि जिसकी रौशनी से दुनिया आज तक मुनव्वर है, और क़यामत तक मुनव्वर रहेगी। उन्होंने होश संभालते ही अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों को दावत दी कि ये मूर्तियां क्या हैं जिन पर तुम धरना दिये बैठे हो। इस कम-उम्री में और ऐसे माहौल में वही यह नारा लगा सकता है जिसे अल्लाह की ख़ास इनायत हासिल हो। इस सवाल पर उन्हें भी वही जवाब मिला जो हमेशा से गुमराह लोग देते आए हैं कि हमारे बाप दादा उनकी इबादत करते आए हैं। उन्होंने पूरी बेख़ौफ़ी से कहा ''तुम और तुम्हारे बाप दादा (जो खुद हज़रत इब्राहीम (अ.) के भी बाप दादा थे), सब खुली गुमराही में रहे और तुम भी हो। कोई गुमराही इस दलील से हिदायत नहीं बन जाती कि वह बाप दादा से होती चली आ रही है''। फिर उन्होंने मौक़ा पाकर सब छोटे बुतों को पाश-पाश कर दिया और बड़े को रहने दिया। जब हज़रत इब्राहीम (अ.) पर शुब्हा करके उन्होंने बाज़ पुर्स की तो आप ने कहा ''मुझसे तो क्या पूछते हो उन बुतों से पूछो किसने उनका यह हश्र किया है, बल्कि मैं तो समझता हूं कि इस बड़े बुत ने किया होगा''। हज़रत इब्राहीम (अ.) ने अपनी हिक्मत से पूरी क़ौम को ऐसे मुक़ाम पर ला खड़ा किया कि उन्होंने खुद ऐतराफ़ किया ''कि ये बोल नहीं सकते'' तो आपने कहा ''फिर ये किस मर्ज़ की दवा हैं, ऐसे बेबस बुतों को तुम पूजते हो।'' बजाए अपनी ग़लती मानने के क़ौम ने खिसिया कर आप (अ.) को आग में डाल दिया। तास्सुब में लोगों की अक़्लें इसी तरह मारी जाती हैं। मगर अल्लाह ने इस आग को हज़रत इब्राहीम (अ.) के लिए ठंडक और सलामती बना दिया। अल्लाह के लिए यह कुछ मुश्किल नहीं। वही हर चीज़ में तासीर पैदा करता है। क्या देखते नहीं कि एक ही दवा से कितने लोग अच्छे हो जाते हैं और उसी दवा से जिसे मरना लिखा है उसकी तबियत उल्टी ख़राब हो जाती है। इस पर भी लोगों की आंखें न खुली तो हज़रत इब्राहीम (अ.), उनकी बीवी और चचाज़ाद भाई हज़रत लूत (अ.) हिजरत करके निकल खड़े हुए और अल्लाह ने इन दोनों को अलग-अलग ठिकाने दिये। फिर सिफ़ाती तरतीब के साथ अंबिया का ज़िक्र किया जो सब्र और शुक्र के इम्तिहानों से गुज़रे और इनमें सौ फ़ीसद कामयाब रहे।

चुनांचे पहले हज़रत दाऊद (अ.) और हज़रत सुलेमान (अ.) का हवाला देकर बताया कि उनकी तरह ही शुक्रगुज़ार बनना चाहिए और इक्तिदार पाकर भी खुदा के हुक्म के मुताबिक़ मामलात चलाने चाहिए। फिर हज़रत अय्यूब

(अ.), इस्माईल (अ.) और इदरीस (अ.) और ज़लकिफ्ल (अ.) का हवाला देकर नबी (स.) और आपके मज़लूम सहाबा की हिम्मत अफ़ज़ाई की कि जिस तरह अल्लाह के उन नेक बंदों ने सब्र इख़्तियार किया और अल्लाह ने सब्र के बदले में अपनी रहमतों से नवाज़ा, इसी तरह तुम भी मसाइब के मुक़ाबले में सब्र का मुज़ाहिरा करो। अल्लाह तुम्हें भी अपनी रहमत से नवाज़ेगा। गोया अब क़यामत तक के लिए मुसलमानों को भी यही सबक़ दिया जा रहा है, काश वे इसे समझें।

इसी तरह हज़रत यूनुस (अ.) ''ज़करिया'' (अ.) यहया (अ.) और हज़रत मरियम (अ.) ''ईसा'' (अ.) का हवाला दिया जिनके लिये अल्लाह ने इन्तिहाई तारीक और मायूसकुन हालात में अपनी क़ुदरत व हिक्मत के निहायत हैरत अंगेज़ करिश्मे नमूदार किये, ताकि यक़ीन आ जाए कि हालात व असबाब सब अल्लाह के इख़्तियार में हैं। इसलिए उसे राज़ी करने की फ़िक्र करो। फ़रमाया जो शख़्स ईमान वाला हो और अमले सालेह करे तो उसकी नाक़दरी न होगी। हमारे रिकार्ड में सब महफ़ूज़ है। जब कोई बस्ती हलाक की जाती है तो दोबारह उसे मौक़ा नहीं दिया जाता। तुम और तुम्हारे वह माबूद जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो जहन्नुम का ईंधन हैं वहां तुमको जाना है। अगर यह वाक़ई माबूद होते तो जहन्नुम में न जाते अब सबको हमेशा उसी में रहना है। वहां वह फुन्कारें मारेंगे और हाल यह होगा कि कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देगी। रहे वह लोग जिनके लिये हमारी तरफ़ से भलाई का पहले ही फ़ैसला हो चुका होगा तो वह यक़ीनन उससे दूर रखे जायेंगे। उसकी सरसराहट तक न सुनेंगे। हमेशा हमेशा मन पसन्द चीज़ों के दर्मियान रहेंगे। इन्तिहाई घबराहट का वक़्त उनको परेशान न करेगा और मलायकह बढ़कर उन को हाथों हाथ लेंगे कि यह वही दिन है जिसका तुमसे वादा था। यह वही दिन है जब हम आसमान को ऐसे लपेट कर रख देंगे जैसे चादर लपेट दी जाती है और जैसे हमने तुमको पहली बार पैदा किया वैसे दोबारा पैदा करेंगे। यह पक्का वादा है जिसे हम ज़रूर पूरा करेंगे। ज़बूर में नसीहत के बाद हमने लिख दिया है कि हमारे नेक बन्दे ज़मीन के वारिस होंगे। यह इबादत गुज़ार बन्दों के लिये बड़ी ख़बर है और ऐ नबी (स.) हम ने आप को सारे आलम के लिये रहमत बनाकर भेजा है। यह न समझना कि नमाज़ पढ़ने से अल्लाह की ज़ात को कुछ मिलता है। नमाज़ पढ़ने वाला ही उससे फ़ायदा उठाता है कि तक़वा की सलाहियत पैदा होती है और यही परहेज़गारी उसे दुनिया व आख़िरत की मुसतक़िल कामयाबी अता करती है। सूरत के ख़ात्मे पर नबी-ए-करीम (स.) और सहाबा (रजि.) को इत्मीनान दिलाया कि अपने काम में लगे रहो जो इख़्तिलाफ़ करते हैं उनका मामला हम पर छोड़ दो।

इसके बाद सूर: हज है। यह मक्की दौर की आख़िरी सूरत हैं, जबकि क़ुरैश के ज़ुल्म व सितम से तंग आकर मुसलमानों ने मदीना हिजरत शुरू कर दी थी और नबी (स.) की हिजरत का वक़्त भी क़रीब आ गया था। इसमें क़ुरैश को ख़ुदा के ग़ज़ब से डराते हुए और हज़रत इब्राहीम (अ.) की दावत और बैतुल्लाह की तामीर करने के मक़सद की रौशनी में वाज़ेह किया गया कि इस घर के मुतवल्ली होने के अस्ल हक़दार मुश्रिकीन नहीं बल्कि वे मुसलमान हैं जिनको यहां से निकालने के लिए उन पर मज़ालिम ढाए जा रहे हैं। इस तरह क़ुरैश को ख़ुदा का ग़द्दार और ग़ासिब क़रार दिया गया और मुसलमानों को बशारत दी गई कि अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा और क़ुरैश की जगह उनको अपनी अमानत की अमीन बनाएगा। याद करो वह वक़्त जब हमने इब्राहीम (अलै0) को इस घर की तामीर का हुक्म दिया था। इस हिदायत के साथ कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना और मेरे घर को तवाफ़ करने वालों, क़याम रूकू व सुजूद करने वालों के लिये पाक व साफ़ रखना। लोगों में हज का ऐलान कर दो कि वह तुम्हारे पास दूर दराज़ मक़ाम से पैदल नीज़, सवार होकर आयें ताकि वह फ़ायदे देखें जो उन के लिये यहां रखे गये हैं और चन्द मुक़र्रर दिनों में उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें बख़्शा है। ख़ुद भी खायें और ज़रूरत मन्दों को भी खिलायें। मुराद यह है कि क़ुरबानी का गोश्त ख़ुद भी खा सकते हैं और मोहताज, फ़क़ीर के अलावह दोस्त, हमसाए, रिश्ते दार सबको खिलाना जाइज़ है। (ज़मानए जाहिलियत में लोग क़ुर्बानी का गोश्त ख़ुद खाना मायूब समझते थे) फिर अपना मैल

अलमूमिनून की इब्तिदा इस तफ़्सील से की गई है। फ़रमाया! काम्याब हो गए वो एहले ईमान जो (1) अपनी नमाज़ों

में खुशू इख़्तियार करते हैं। (2) लग़वियात यानी फुज़ूल और बेमक़सद बातों और कामों से दूर रहते हैं। (3) अपने नफ़्स, अख़्लाक़, ज़िंदगी और माल सबका तज़किया करते रहते हैं (4) अपने जिस्मों के क़ाबिले शर्म हिस्सों को छुपा कर रखते हैं। जिन्सी मामलात में आज़ाद और बेलगाम नहीं होते। (5) अपनी अमानतों और अहद व पैमान का पास रखते हैं। (6) अपनी नमाज़ों की मुहाफ़िज़त करते हैं। यही लोग वो वारिस हैं जो मीरास में फ़िरदौस पाएंगे और उसमें हमेशा रहेंगे।

इंसान की पैदाईश में खुदा की कुदरत की जो निशानियां हैं उनसे मौत के बाद दोबारा उठाए जाने पर दलील दी और कायनात में खुदा की परवरदिगारी की जो निशानियाँ हैं उन से सज़ा और जज़ा के लाज़िम होने की दलील दी। हर क़िस्म के मेवो, फलों और ग़िज़ा की दूसरी चीज़ों, जानवरों और उनके दूध और उसके फ़वाइद की तफ़्सील गिना कर तवज्जे दिलाई कि जो हस्ती तुम्हारी एक-एक ज़रूरत और आसाइश का इस दर्जा ख़्याल रखती है, क्या तुम्हें और इन चीज़ों को बनाकर वह एक कोने में जा बैठी है। और इस बात से बिल्कुल बेताल्लुक़ हो गई है कि तुम उसकी दुनिया में क्या कर रहे हो और क्या नहीं कर रहे? क्या उसकी इंसाफ़ पसंदी का यह लाज़मी तक़ाज़ा नहीं है कि वह एक दिन ऐसा भी लाए जब तुमसे तुम्हारी ज़िम्मेदारियों की बाज़पुर्स हो और खुदा की नेमतों का शुक्र अदा करने और उसके हुकूक़ अदा करने वालों को जज़ा और नाशुक्री और ज़ुल्म करने वालों को सज़ा दी जाए।

बताया कि तमाम अंबिया को अल्लाह की तरफ़ से एक ही दीन मिला और वे एक ही पैग़ाम लेकर आए लेकिन उनकी उम्मतों ने उनके लाए हुए दीन को टुकड़े टुकड़े करके रख दिया। और अब सब अपने अपने तरीक़ों में मग्न हैं। नबी-ए-करीम (स.) को तल्क़ीन की गई कि सब्र करें और कुछ दिन उन्हें अपने तरीक़ों में मग्न रहने दें। ये दुनियादार और दुनिया परस्त अपनी इन्हीं दिलचस्पियों में डूबे रहेंगे यहां तक कि जब हम इनको पकड़ेंगे तो ये सब चीखें और चिल्लाएंगे लेकिन ये सब बेकार होगा।

सूरत के ख़ात्मे पर नाफ़रमानों को दी जाने वाली इब्रतनाक सज़ा का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाया कि उस वक़्त उनसे कहा जाएगा कि तुमने हमारे फ़रमांबर्दारों और हमसे बख़्शिश और रहम की दुआएं करने वालों का मज़ाक़ उड़ाया। यहां तक कि उनकी मुख़ालिफ़त में तुम यह भी भूल गये कि मैं भी कोई हूं। और तुम उन पर हंसते रहे। आज उनके सब्र का फल मैंने यह दिया है कि उन्हें काम्याब कर दिया। फिर अल्लाह तआला उनसे पूछेगा ''बताओ ज़मीन में कितने साल रहे?'' कहेंगे ''एक दिन या उसका कोई हिंस्सा''। इरशाद होगा ''थोड़ी देर ठहरे हो न! काश तुमने यह बात उसी वक़्त जान ली होती! क्या तुमने यह समझ रखा था कि हमने तुम्हें फ़िज़ूल पैदा किया है और तुम्हें हमारी तरफ़ कभी पलटना ही नहीं है?'' ऐ मोहम्मद (स.)! दुआ कीजिए, मेरे रब दरगुज़र कर और रहम फ़रमा! तू सब रहम करने वालों में सबसे अच्छा रहम करने वाला है।

सूरह नूर में सबसे पहले ज़िना की सज़ा बयान की गई कि हर एक को सौ कोड़े मारे जाएं। फिर झूठे इल्ज़ाम की सज़ा बयान की कि अस्सी कोड़े मारे जाएं। और हज़रत आएशा (रज़ि0) पर जो इल्ज़ाम मुनाफ़िक़ीन ने लगाया था उससे हज़रत आएशा (रज़ि0) को बरी करते हुए फ़रमाया ''तुमने उसी वक़्त क्यों न कह दिया कि यह सरीह-बुहतान है।''

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ अल्लाह तआला हम सबको पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



पंद्रहवी तरावीह

आज अठारवें पारे के नवें रूकूअ से उन्नीसवें पारे के सौलहवें रूकूअ तक तिलावत की गई है।

सूरह अल-नूर के तीन रूकूअ कल पढ़े गए थे मगर मज़मून की अहमियत और तसल्सुल के पेशेनज़र पूरी सूरत का पस मंज़र और नुकात पेश किये जा रहे हैं। यह सूरत मदनी है। इससे पहली सूरत अल-मूमिनून मक्की थी। इसमें ईमान के जो तकाज़े............नमाज़ों में खुशू व खुज़ू, लग़वियात से परहेज़ तज़किये नफ़्स ज़कात, शर्मगाहों की हिफ़ाज़त और जिन्सी जज़्बबात को काबु में रखना, अपनी अमानतों व कौल व क़रार की पासदारी इनके असरात ज़ाहिर है कि मक्के में रहते हुए मुसलमानों की इन्फिरादी ज़िंदगियों ही में उभर सकते थे। इसलिए कि मक्के में इनकी कोई इज्तिमाई और मुअस्सर क़व्वत नहीं थी। लेकिन जिहरत के बाद जब मुसलमान मदीने में जमा हो गए और उनकी एक इज्तिमाई और सियासी शक्ल बन गई तब वक्त आया कि इस ईमान के तक़ाज़े उनकी मुआशरती ज़िंदगी में भी नुमायां हों। चुनांचे जिस रफ़्तार से हालात साज़गार होते गए मुआशरे की इस्लाह के अहकाम नाजिल होते गए और ईमान की नूरानियत जो अब सिर्फ अफ़राद तक महदूद थी, एक पूरे मुआशरे को मुनव्वर करने लगी।

सूरह-नूर इसी सिलसिले की एक सूरत है, जिसमें अहले-ईमान को उन अहकाम और हिदायत से आगाह किया गया है जो उनके नये तश्कील पाने वाले मुआशरे को ईमान के असरात से मुज़य्यन और मनाफ़ी-ए-ईमान मफ़ासिद से महफ़ूज़ रखने के लिए ज़रूरी थे।

इब्तिदा ही में फ़रमाया यह एक अज़ीम सूरत है। हमारा उतारा हुआ फ़रमान, जो अहकाम दिये जा रहे हैं उनकी हैसियत फ़र्ज़ की है। जिनकी इताअत बे-चूं-व-चरा की जानी चाहिए। फिर जिना का जिक्र किया क्योंकि मुआशरे के इंतिशार व फसाद में सबसे ज्यादा दख्ल उसी को है। मुआशरे के इस्तहकाम का इन्हिसार इस बात पर है कि रहम के रिश्तों की पाकीजगी बरकरार रखी जाए, इनका एहतेराम किया जाए और इन्हें हर तरह खलल और बिगाड से महफुज रखा जाए। जिना इस पाकीजगी को खत्म कर के मुआशरे को बिल-आखिर ढोर-ढंगरों का एक गल्ला बनाकर रख देता है। रिश्तों पर से बाहमी एतिमाद उठ जाता है। इसीलिए इस्लाम ने पहले दिन से इस इंतिशार को रोकने के लिए तफ्सील से अहकाम जारी किये और जिना की सजा को "दीन-अल्लाह" करार दिया। यानी अल्लाह का दीन। आज कल यह फल्सफा गढा गया है कि जो लोग जुर्म करते हैं वह जहनी बीमारी के सबब करते हैं, इस वजह से वह सजा के नहीं बल्कि हमदर्दी के मुस्तहक हैं। इनकी तर्बियत और इस्लाह करनी चाहिए। इन फ़ल्सफ़े की वजह से खुदा की ज़मीन गुन्डों और बदमाशों से भर गई हैं और चारों ओर ज़ानियों की हमदर्दी में लोग यहां तक कि मुसलमान भी नऊज़ोबिल्लाह खुदा से भी ज़्यादा रहीम बन गए हैं।

मुआशरे को खराबियों से बचाने के लिए जो अहकाम दिये गये हैं उनमें से चन्द अहम हैं :-

(1) मुसलमान मर्द-औरत का यह हक है कि दूसरे अफराद उनके बारे में अच्छा गुमान रखें और जब तक दलील से किसी का गलत होना साबित न हो जाए सुनी सुनाई बातों पर कोई फैसला नहीं करना चाहिए। (2) शरीर लोगों को भी खुली छूट नहीं मिलनी चाहिए बल्कि उन्हें बुराई से रोकना चाहिए और मसनून तरीकों की तलकीन करना चाहिए। (3) बदमाश लोग अच्छे मुआशरे को बर्दाश्त नहीं कर सकते इसलिए बेहयाई का चर्चा करते हैं, मगर यह बात खुदा के नजदीक बहुत बुरी है। बेहयाई फैलाने वालों के लिए दुनिया और आखिरत में रूस्वा करने वाला अजाब है। (4) बेइजाजत एक दूसरे के घरों में दाखिल

नहीं होना चाहिए। तीन दफा इजाजत मांगने पर भी जवाब न मिले तो वापस लौट जाना चाहिए (5) औरत और मर्द दानों को आमना सामना होने पर निगाहें नीची रखने का हुक्म दिया गया क्योंकि दोनों के दरम्यान सबसे पहला कासिद निगाह होती है। (6) नफसियाती इश्तिआल से बचने के लिए बा-विकार लिबास पहनने और दुपट्टा ओढने को जरूरी करार दिया गया जिससे सर और गिरेबान को ढांका जाए। यहां तक कि सीना भी छुप जाए। (7) बेवा औरतों और लौंडी गुलामों तक का निकाह करने की ताकीद की। और कहा कि जब कोई निकाह की उम्र को पहुंच जाए तो लाजिमन "निकाह का बंदोबस्त होना चाहिए"।

कायनात की निशानियों पर ग़ौर करने की दावत दी कि इस कायनात में तमाम इख्तियारात और तसर्रूफात का मालिक अल्लाह वहदहू-ला-शरीक है। हर चीज उसी की हम्द और तस्बीह करती है। इसलिए इंसानों का भी फर्ज है कि उस पर ईमान लाएं। उसकी इबादत और इताअत में किसी को शरीक करके उसके ग़ज़ब के मुस्तहक़ न बनें। यहां इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ किसी की इताअत न की जाए। हमारे यहां एक बीमारी यह फैली हुई है कि शौहर अगर बेपर्दगी और बेहयाई चाहता है तो औरत यह कहकर कि शौहर ऐसा चाहता है, वही रविश इख्तियार कर लेती है। इसका कोई जवाज़ नहीं।

मुनाफ़िक़ीन को तम्बीह की कि उन्होंने जो रविश अपनाई हुई है कि मफ़ाद की हद तक ख़ुदा और रसूल (स) का कहना मानते हैं और मफ़ाद के ख़िलाफ़ उनके हुक्म को टाल जाते हैं। यह रविश अब नहीं चलेगी। मानना है तो पूरी यकसूई से ख़ुदा और रसूल (स.) का हुक्म मानो वरना ख़ुदा को तुम्हारी कोई परवाह नहीं।

रसूल (स.) के सच्चे साथियों को निहायत वाज़ेह अल्फ़ाज़ में ख़ुशखबरी दी कि ज़मीन की ख़िलाफ़त तुम्हें मिलेगी और मुख़ालिफ़ीन और दीन के दुशमन तुम्हारा और तुम्हारे दीन का कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। तुम नमाज का एहतिमाम करो, जकात अदा करते रहो और रसूल (स.) की इताअत पर पूरी दिल-जमई से डटे रहो। जल्द वक्त आने वाला है कि ख़ुदा ख़ौफ की हालात को अम्न और इत्मीनान से बदल देगा।

बाज़ मआशरती एहकामात सूरह के आख़िर में दिये गये हैं आयत 58 में कहा गया है कि घर के नौकर चाकर और नाबालिग़ बच्चों को चाहिये कि इन तीन औक़ात में इजाज़त लेकर कमरे में दाख़िल हों (1) फ़ज्र की नमाज़ से पहले (2) दोपहर को जब कपड़े उतार कर लेटते हों (3) ईशा की नमाज़ के बाद। यह तीन औक़ात तुम्हारे पर्दे के हैं। इन औक़ात के अलावह वह बिला इजाज़त आयें तो तुम पर और उन पर कोई गुनाह न होगा। तुम एक दूसरे के पास बार बार आते जाते हो। इस तरह अल्लाह तआला अपने इरशादात की तौज़ीह करता है वह बड़ा अलीम व हकीम है। फिर बच्चे जब बड़े हो जायें तो चाहिये कि इसी तरफ़ इजाज़त लेकर आया करें जिस तरफ़ इजाज़त लेकर उनके बड़े इजाज़त लेते रहे हैं जो औरते अधेड़ उम्र की हों और उन्हें निकाह में दिलचस्पी न हो वह अगर अपनी चादरें उतार कर रख दें तो उन पर कोई गुनाह नहीं बशर्ते कि ज़ीनत की नुमाइश करने वाली न हों फिर भी वह एहतियात करें और हयादारी बरतें तो उनके हक में अच्छा है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआला का यह हुक्म आया कि एक दूसरे का माल नाजायज़ तरीक़ों से न दबाया करो। लोग एक दूसरे के यहां खाना खाने में सख़्त एहतियात बरतने लगे हालांकि कानूनी शर्तो के मुताबिक साहबे ख़ाना की दावत और इजाज़त जब तक न हो किसी अज़ीज़ या दोस्त के यहां भी खाना जाइज़ नहीं समझते थे। इसकी तरदीद में फ़रमाया माज़ूर हज़रात अन्धे लंगड़े बीमार और खुद तुम लोग अपने रिश्तेदारों के यहां खा सकते हो। जैसे बाप, दादा, मां, नानी, बहनों और भाइयों के घर। इसी तरह चाचा, फूफी, ख़ाला, मामू के घर भी खाना खा सकते हो या तुम्हारा करीबी बेतकल्लुफ़ दोस्त हो उसके यहां भी खा सकते हो। इसमें भी कोई हर्ज नहीं कि सब मिलकर खाओ या अलग अलग खाओ। अलबत्ता जब घरों में दाख़िल हुआ करो तो अपनों को सलाम कर लिया करो कि यह दुआये ख़ैर है जो अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर करदह बड़ी बाबरकत और पाकीज़ह चीज़ है। अल्लाह तआला इसी तरह तुम्हारे सामने आयात बयान करता है, तवक्क़े है कि सूझ बूझ से काम लोगे।

इस आयत से यह बात भी समझ में आती है माज़ूर हज़रात का हक़ है कि मुस्लिम मआशरे का हर फ़र्द उन्हें खाना खिलाने को तैयार रहे नीज़ वह खुद भी किसी के घर जाकर खाना मांग सकते हैं, खा सकते हैं। साहेबे खाना

को इनकार नहीं करना चाहिये। दूसरी बात यह कि अइज्ज़ह व अक़ारिब के घर खाना ऐसा है जैसा अपने घर खाना क़रीबी रिश्तेदारों और बेतकल्लुफ़ दोस्तों के यहां खाने के लिये बाकायदह इजाज़त जरूरी नहीं। आदमी उनमें से अगर किसी के यहां जाये और घर का मालिक मौजूद न हो और उसके बीवी बच्चे खाने को कुछ पेश करें तो बेतकल्लुफ़ खाया जा सकता है।

आख़िरी रूकू में फरमाया कि जब इजतिमाई काम के मौके पर मुसलमान रसूल (स0) के साथ हों या अपने अमीर के साथ हों और कोई इनफ़िरादी ज़रूरत पेश आ जाये तो मुसलमानों को चाहिये कि रसूल (स0) या अमीर से इजाज़त लेकर जायें फिर अमीर को इख़्तियार है कि इजाज़त मांगने वाले की ज़रूरत के मुताबिक़ चाहे इजाज़त दे या इनकार कर दे और अगर इजाज़त दे तोऐसे लोगों के हक़ में अल्लाह से दुआए मग़फ़िरत कर दे कि अल्लाह तआला मआफ़ फ़रमाने वाला और रहम फ़रमाने वाला है। इसमें तंबीह है कि किसी वाक़ई ज़रूरत के बगैर इजाज़त तलब करना तो सिरे से ही नाजाइज़ है जवाज़ का पहलू सिर्फ़ इस सूरत में निकलता है कि जबकि जाने के लिये हक़ीक़ी ज़रूरत लाहक़ हो फिर ज़रूरत बयान करने पर भी इजाज़त देना न देना रसूल (स0) या अमीर की मर्ज़ी पर मौकूफ़ है अगर वह समझता है कि इजतिमाई ज़रूरत इस शख़्स की इनफ़िरादी ज़रूरत से ज़्यादह अहम है तो वह पूरा हक़ रखता है कि इजाज़त न दे और इस सूरत में एक मोमिन को उससे कोई शिकायत न होनी चाहिये। इजाज़त के साथ असतग़फ़ार का हुक्म देने में तम्बीह है कि इजाज़त तलब करने में अगर ज़रा सी बहाना बाज़ी का भी दख़्ल हो या इजतिमाई ज़रूरत पर इनफ़िरादी ज़रूरत को मुक़द्दम रखने का जज़्बा कारफ़रमा हो तो यह एक गुनाह है लिहाजा रसूल (स0) और उनके जानशीन को चाहिये कि इजाज़त देने के साथ यह भी कह दें कि खुदा तुम्हे मआफ़ फ़रमाये।

अब सूरह अल-फुरक़ान निहायत मुअस्सर अन्दाज़ में शुरू होती है। बड़ी बा-बरकत है वह ज़ात जिसने अपने बन्दे पर हक़ व बातिल के दरम्यान इम्तियाज़ कर देने वाली किताब उतारी ताकि वह अहले आलम को होशियार कर दे कि वह ज़ात आस्मानों और ज़मीन की बादशाही की मालिक, किसी बेटे या बादशाही में किसी की शिर्कत से पाक है। उसने हर चीज़ को पैदा किया फिर उसकी तक़दीर मुक़र्रर की। लोगों ने ऐसी हस्ती को छोड़कर उन्हें माबूद बना लिया जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते बल्कि खुद पैदा किए जाते हैं। जो न मार सकते हैं, न जिला सकते हैं।

मुनकरीने हक़ का अन्जाम बताते हुए उनके इन्कार की अस्ल वजह बताई। क्योंकि यह लोग एक मर्तबा उस घड़ी को झुटला चुके हैं, इसलिए अब ज़िद पर अड़े हुए हैं। मगर जब ये उस घड़ी के आने पर हाथ-पैर बांध कर भड़कती हुई आग में एक तंग जगह ठूंसे जाएंगे, तो अपनी मौत को पुकारने लगेंगे। उस वक़्त उनसे कहा जाएगा "आज एक मौत नहीं, बहुत सी मौतों को पुकारो"। उनसे पूछो यह अन्जाम अच्छा है या वह अबदी जन्नत जिसका वायदा खुदातरस लोगों से किया गया है, जो उनके अमल की जज़ा और उनके सफ़र की आख़िरी मंज़िल होगी। उनका अता करना तुम्हारे रब के ज़िम्मे एक वाजिबुल-अदा वायदा है।

कभी तुमने उस शख़्स के हाल पर ग़ौर किया जिसने ख़्वाहिशे-नफ़्स को अपना खुदा बना लिया है? क्या तुम ऐसे शख़्स को राहे-रास्त पर लाने का ज़िम्मा ले सकते हो? ये तो जानवरों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी गए गुज़रे। साये के निज़ाम को अपनी कुदरते-कामिला और तौहीद की दावत को बरहक़ होने की दलील में पेश किया कि तुम्हारी सारी ज़िन्दगी इस साये के घटने-बढ़ने की मौहताज है क्योंकि सूरज की रोशनी और हरारत पर सबकी ज़िन्दगी का दारो-मदार है और साया उसकी वजह से है। अगर हमेशा साया रहता तो हमेशा सूरज निकलता या हमेशा सूरज निकलता तो सारी मख़लूक उसकी शुआओं से झुलस कर रह जाती यह तो एक हकीम और क़ादिरे-मुतलक़ ख़ालिक़ है जिसने ज़मीन और सूरज के दरम्यान ऐसी मुनासिबत क़ायम रखी है जो हमेशा लगे-बंधे तरीक़े से आहिस्ता-आहिस्ता साया डालती और उसे घटाती-बढ़ाती रहती है। यह हकीमाना निज़ाम न तो खुद-बखुद क़ायम हो सकता था और न बे-इख़्तियार माँबूद उसे क़ायम करके चला सकते थे।

ख़ात्मे पर खुदा के अस्ल बन्दे कहलाने के मुस्तहक़ अफ़राद का नक्शा खींचा है। रहमान के असल बन्दे वे हैं जो नर्म चाल चलने वाले, जाहिलों से बहस में न उलझने वाले, इबादतगुज़ार, अज़ाब से बचने की दुआएं मांगने वाले, एतिदाल के साथ ख़र्च करने वाले, नाहक़ किसी को न मारने वाले। ऐसे बन्दों का जन्नतों में

शानदार इस्तकबाल होगा।

सूरह अल-शुअराअ का आग़ाज़ इन अल्फ़ाज़ से होता है- ऐ माहम्मद (स.)! क्या आप अपनी जान इस ग़म में खो देंगे कि ये लोग ईमान क्यों नहीं लाते? हम चाहें तो उनके मुतालबे के मुताबिक़ आसमान से ऐसी निशानी नाज़िल कर सकते हैं कि उनकी गर्दनें उसके आगे झुक जायें मगर इस तरह का जब्री ईमान हमें मतलूब नहीं है। हम चाहते हैं कि लोग अक्ल व फहम से काम लेकर ईमान लाएं।

आख़िर के रूकूअ में बहस को समेटते हुए कहा गया है कि तुम लोग अगर निशानियां ही देखना चाहते हो तो आख़िर वह खौफ़नाक निशानियां देखने पर क्यों इसरार करते हो जो तबाहशुदा क़ौमों ने देखी हैं। इस क़ुरआन को देखो। इसके लाने वाले को देखो। इसके साथियों को देखो। क्या यह कलाम किसी शैतान या जिन का कलाम हो सकता है? क्या मोहम्मद (स.) और उनके साथी तुमको ऐसे नज़र आते है जैसे शायर और उनको दाद देने वाले होते हैं? ज़िद की बात तो दूसरी है मगर अपने दिलों को टटोल कर देखो कि वह क्या गवाही दे रहे हैं? अगर दिलों में तुम खुद जानते हो कि कहानत और शायरी का इससे दूर का भी ताल्लुक़ नहीं तो फिर यह भी जान लो कि तुम ज़ुल्म कर रहे हो और ज़ालिमों का अन्जाम भी देखोगे।

सूरह नमल का सिर्फ़ एक रूकूअ पढ़ा गया है। इसका मफ़हूम कल की आयत के साथ बयान किया जायेगा।

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ अल्लाह तआला हम सबको पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

''आमीन''

आज की तराहवी के चन्द अहम नुकात



सोलहवीं तरावीह

आज उन्नीसवें पारे के सत्रहवें रूकूअ से बीसवें पारे के इख़्तिताम तक तिलावत हुई। सूरह-नस्ल में यह वाज़ेह फ़रमाया है कि इस किताब को अल्लाह ने हिदायत और बशारत बनाकर नाज़िल किया है, लेकिन इस पर ईमान वही लाऐंगे जिनके दिलों के अन्दर आख़िरत का ख़ौफ है। जो लोग इस दुनिया के एश-ओ-आराम में मगन हैं वे अपने मशग़लों को नहीं छोड़ सकते। उनके आमाल उनकी निगाहों में इस तरह ख़ुशनुमा बना दिये गये हैं कि अब कोई याददहानी और डरावा उन पर कारगर नहीं हो सकता। इस सिल्सिले में उनके सामने तीन क़िस्म की सीरतों के नमूने रखे गए। एक नमूना फ़िरऔन, क़ौमे-समूद के सरदारों और क़ौमे लूत (अ.) के सरकशों का जिनकी सीरत आख़िरत की जवाब देही कीं तसव्वुर से ख़ाली थी और इसके नतीजे में उन्होंने नफ़स की बंदगी इख़्तियार की। किसी निशानी को भी देख कर ईमान लाने पर तैयार न हुए। बल्कि उन लोगों के दुश्मन बन गए जिन्होंने उन्हें नेकी की तरफ़ बुलाया। उन्होंने अपनी बदकारियों पर इसरार किया। आख़िर उन्हें अज़ाबुल्लाह ने आ पकड़ा और एक पल पहले तक भी उन्हें होश न आया।

दूसरा नमूना हज़रत सुलैमान (अ.) का है जिनको ख़ुदा ने दौलत, हुकूमत और शौकत व हशमत से इस पैमाने पर नवाज़ा था कि कुफ़्फ़ारे मक्का इसका ख़्वाब भी न देख सकते थे। लकिन इसके बावजूद अपने आप को ख़ुदा के हुज़ूर जवाब देह समझते थे। और उन्हें अहसास था कि उन्हें जो कुछ भी हासिल है ख़ुदा की अता से हासिल है। इसलिए उनका सर हमेशा उस हक़ीक़ी इनाम देने वाले के आगे झुका रहता था। और नफ़्स के घमंड का ज़रा सा शाइबा भी उनकी सीरत में नहीं पाया जाता था।

तीसरा नमूना मल्का-ए-सबा का है जो तारीख़े-अरब की निहायत दौलतमंद क़ौम की हुकुमरान थी। उसके पास तमाम वो असबाब जमा थे जो किसी इंसान को गुरूर और सरकशी में मुब्तिला कर सकते थे और सरदाराने-क़ुरैश के मुक़ाब्ले में लाखों दर्जे ज़्यादा हासिल था। फिर वह एक मुश्रिक क़ौम से ताल्लुक़ रखती थी। बाप दादा की तक़लीद की बिना पर भी और अपनी क़ौम में अपनी सरदारी बरक़रार रखने की ख़ातिर भी उसके लिए शिर्क के दीन को छोड़ कर तौहीद के तीन को इख़्तियार करना उससे निहायत ज़्यादा मुश्किल काम था, जितना किसी आम मुश्रिक के लिए हो सकता है। लेकिन जब उस पर हक़ वाज़ेह हो गया तो कोई चीज़ उसे हक़ को क़ुबूल करने से नहीं रोक सकी। क्योंकि गुमराही सिर्फ़ इस वजह से थी कि उसने आँख ही उस मुश्रिकाना माहौल में खोली थी। लेकिन नफ़्स की बंदगी और ख़्वहिशात की गुलामी का मर्ज़ उस पर मुसल्लत नहीं था। चुनाँचे ख़ुदा के हुज़ूर जवाब-देही का एहसास उसके ज़मीर में मौजूद था। और इसी वजह से हक़ क़ुबूल करने की सआदत हासिल हुई।

इसके बाद कायनात के चंद नुमायां तरीन मशहूर हक़ायक़ की तरफ़ इशारे किये हैं और पूछा है कि <u>"अल्लाह बेहतर है या वे माबूद जिन्हें लोग ख़ुदा का शरीक बनाए बैठे हैं ?"</u> फिर बनावटी ख़दाओं के मुताल्लिक़ जो लोग यह ऐतिक़ाद रखते हैं कि उन्हें ग़ैब का इल्म हासिल है, इसकी तरदीद की और फ़रमाया..........

..........अल्लाह के सिवा आस्मान और ज़मीन में कोई ग़ैब का इल्म नहीं रखता। और जिन दूसरों के बारे में यह गुमान किया जाता है कि वह भी ग़ैब का इलम रखते हैं और इसी बिना पर उन्हें ख़ुदाई में शरीक ठहरा लिया गया है। इन बेचारों को तो ख़ुद अपने मुस्तक़बिल की ख़बर नहीं। वे नहीं जानते कि क़यामत की घड़ी कब आएगी? और कब अल्लाह तआला उनको दोबारा उठा खड़ा करेगा? <u>और क्या गुजरेगी उस रोज जब सूर फ़ूंका जाएगा।? और वे होल खा जाएंगे। वह सब जो आसमान और जमीन में हैं, सिवा उनके जिन्हें अल्लाह होल से बचाना चाहेगा</u>

और सब कान दबाए उसके हुज़ूर हाजिर हो जाएंगे। आज तुम पहाड़ों को देखते हो और समझते हो कि वे खूब गड़े हुए हैं मगर उस वक़्त ये बादलों की तरह उड़ रहे होंगे। यह अल्लाह की कुदरत का करिश्मा होगा। जिसने हर चीज़ को हिक्मत के साथ उस्तवार किया है। वह ख़ूब जानता है कि तुम लोग क्या कर रहे हो। **जो शख़्स भलाई लेकर आएगा उसे ज्यादा बेहतर सिला मिलेगा और ऐसे ही लोग उस दिन होल से महफ़ूज होंगे और जो बुराई लेकर आएगा ऐसे सब लोग औंधे मुंह आग में फेंक दिये जाएंगे। क्या तुम लोग इसके सिवा कोई और बदला पा सकते हो? जैसा करो वैसा भरो।**

उनसे फ़रमा दीजिए कि **मुझे तो यही हुक्म दिया गया है कि इस शहर के रब की बंदगी करूं जिसने उसे हरम बनाया है और जो हर चीज का मालिक है। मुझे हुक्म दिया गया है कि मुस्लिम यानी फरमांबर्दार बन कर रहूं।** और यह क़ुरआन पढ़कर सुनाऊ़। अब जो हिदायत इख्तियार करेगा और जो गुमराह होगा उनसे कह दीजिए कि मैं तो बस ख़बरदार करने वाला हूं।

सूरह अल-क़सस में उन शुब्हात और एतराज़ात को दूर किया गया है जो एहले-मक्का नबी (स.) की रिसालत पर कर रहे थे और उनके उन बहानों को रद्द किया है जो वह ईमान न लाने के लिए पेश कर रहे थे। इस ग़रज़ के लिए हज़रत मूसा (अ.) का क़िस्सा बयान किया गया और चंद हक़ायक़ ज़हन नशीन कराए गए मसलन जो कुछ अल्लाह तआला करना चाहता है उसके लिए ग़ैर महसूस तरीक़े पर असबाब व ज़राए फ़राहम कर देता है। जिस बच्चे के हाथों फ़िरऔन का तख़्ता उलटना था उसे अल्लाह ने ख़ुद फ़िरऔन के घर में परवरिश करवा दिया और फ़िरऔन **यह जान ही न सका कि किसकी परवरिश कर रहा है। ऐसे ख़ुदा से कौन लड कर कामयाब हो सकता है?**

इसी तरह बताया कि नुबव्वत की ज़िम्मेदारी बड़े जश्न मनाकर और आसमान ज़मीन में ज़बर्दस्त एलान कर के नहीं दी गई। तुम हैरत करते हो कि मोहम्मद (स.) को चुपके से नुबव्वत कैसे मिल गई? मगर मूसा (अ.) को भी इसी तरह रास्ता चलते हमने नुबव्वत दे दी थी कि किसी को कानों-कान ख़बर नहीं हुई कि आज तूरे-सीना की वादी-ए-एमन में क्या वाक़्या पेश आ गया। ख़ुद हज़रत मूसा (अ.) भी एक लम्हा पहले नहीं जानते थे कि उन्हें क्या चीज़ मिलने वाली है। वह आग लेने गये और पैग़म्बरी मिल गई। फिर यह कि **जिस बंदे से ख़ुदा कोई काम लेना चाहता है वह बगैर किसी लाव-लश्कर और सरो समान के उठता है। बजाहिर कोई ताक़त उसकी मददगार नहीं होती मगर बडे-बडे लाव लश्कर वाले आख़िरकार उसके मुक़ाबले में बेबस हो जाते हैं।** आज जो निस्बत तुम अपने और माहम्मद (स.) के दरम्यान पा रहे हो इससे भी कहीं ज़्यादा फ़र्क़ हज़रत मूसा (अ.) और फ़िरऔन की ताक़त के दरम्यान था। मगर देख लो कौन जीता और कौन हारा?

सीरत इब्ने हश्शाम में है कि हिजरते हबशह के बाद जब नबी (स0) की बैसत और दावत की ख़बरें हबश मुल्क में फ़ैली तो वहां से बीस के क़रीब ईसाइयों का एक वफ़्द आया और नबी (स0) से मस्जिदे हराम में मिला। क़ुरैश के बहुत से लोग मौजूद थे। आप (स) से सवालात किये। आप (स0) ने जवाब दिया और क़ुरआन की आयात उन्हें सुनायीं। उनकी आखों से आंसू जारी हो गये और वह ईमान ले आये। मजलिस बरखास्त होने के बाद अबूजहल और उसके साथियों ने उन्हें रास्ते में जा लिया उन्हें मलामत की। इस पर उन्होंने कहा तुम पर सलामती हो हम जिहालत बाज़ी नहीं कर सकते हमें हमारे तरीक़े पर चलने दो तुम अपने तरीक़ों पर चलते रहो हम अपने आप को जान बूझ कर भलाई से महरूम नहीं कर सकते इस ज़िमन में यह आयत उतरी कि जिन लोगों को इस से पहले हमने किताब दी थी वह इस क़ुर्आन पर ईमान लाते हैं। उन्हें जब यह सुनाया जाता है तो वह कहते हैं हम इस पर ईमान लाये। वाक़ई यह हक़ है। हमारे रब की तरफ़ से हम तो पहले ही से मुस्लिम हैं। यह वह लोग जिन्हें अज्र दो गुना दिया जायेगा (पिछे नबी पर और आंहज़रत (स0) पर ईमान लाने की वजह से) इस साबित क़दमी के बदले जो उन्होंने दिखाई वह बुराई को भलाई से दफ़ा करते हैं। हम उन्हें जो रोज़ी देते हैं उस में से वह अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं जब उन्होंने बेहूदह बात सुनी वह किनारा कश हो गये और कहा हमारा अमल हमारे साथ, तुम्हारा अमल तुम्हारे साथ है। तुम को सलाम है हम जाहिलों का सा तरीका इख्तियार नहीं करना चाहते।

ऐ नबी (स0) आप जिसे चाहे हिदायत नहीं दे सकते मगर अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। वह

ख़ूब जानता है कौन हिदायत क़ुबूल करने वाले है। वह आयत आप (स0) के चचा अबू तालिब के बारे में उतरी। उनका आख़िरी वक़्त आया तो हुज़ूर (स0) ने अपनी हद तक इन्तेहाई कोशिश की कि वह कलमह पढ़ लें मगर उन्होंने आबाई मज़हब पर ही जान देने को तरजीह दी। खुलासह यह है कि अल्लाह तआला अहले मक्का को ग़ैरत दिला रहा है कि तुम अपने घर आयी हुई नेअमत को ठुकरा रहे हो हालांकि दूर दराज़ के लोग इसकी ख़बर सुनकर आ रहे हैं इसकी क़द्र पहचान कर उससे फ़ायदा उठा रहे हैं। तुम कितने बदनसीब हो कि इससे महरूम हो। आप (स0) को ख़िताब करके यह बात कही जा रही है कि आप (स0) चाहते हैं कि कौम के लोग अज़ीज़-अक़ारिब ईमान लायें मगर हिदायत तो अल्लाह के इख़्तियार में है वह इस नेअमत से उन्हीं लोगों को फ़ैज़याब करता है जिनमें वह क़ुबूले-हिदायत की आमादगी पाता है। तुम्हारे रिश्तेदारों में अगर यह जौहर मौजूद न हो तो उन्हें यह फ़ैज़ कैसे नसीब हो सकता है?

क़ारून का तज़किरह इस सूरह में आया है कि वह मूसा (अलै0) की क़ौम में से था मगर बाग़ी ऐसा कि फ़िरऔन से जा मिला था। काफ़ी दौलतमन्द था। ताक़तवर आदमियों की जमाअत ख़ज़ाने की कुंजिया उठाती थी एक बार कौम के लोगों ने उससे कहा कि दौलत पाकर भूल न जाओ इसे राहे ख़ुदा में ख़र्च करो। एहसान करो जैसा कि अल्लाह ने तुझ पर ऐहसान किया है। ज़मीन में फ़साद बरपा करने की कोशिश न करो। अल्लाह फ़सादी को पसन्द नहीं करता, कहने लगा यह मालो दौलत मेरी ज़ाती ख़ूबियों की बदौलत है मैं क्यों ख़र्च करूँ। क्या उसे इल्म नहीं कि उससे पहले बहुत से ऐसे लोग गुज़रे जिनके पास क़ारून से ज़्यादह दौलत थी, उससे ज़्यादह ताक़तवर थे मगर ख़ुदा ने उन्हें बरबाद कर दिया। मुजरिमों से तो उनके गुनाह पोछे नहीं जाते, क़ारून एक रोज़ बड़े तुमतराक़ से क़ौम के सामने निकला जो लोग दुनयावी ज़िंदगी पर घर फ़रेफ़्तह थे कहने लगे काश हमारे पास क़ारून जैसा ख़ज़ाना होता यह तो बड़े नसीबों वाला है। लेकिन समझदार लोगों ने कहा तुम पर अफ़सोस है ख़ुदा का अता करदह सवाब अहले-ईमान व साहबे अमल के लिये कहीं ज़्यादा बेहतर है यह दरजा बर्दाश्त करने वाला और साबित क़दम रहने वालों को मिलता हैं। आख़िरकार ख़ुदा ने क़ारून को उसके ख़ज़ाने समेत ज़मीन में धंसा दिया और कोई उसे बचा नहीं सका। न वह ख़ुद बच सका। जो लोग उसे रश्क भरी निगाहों से देख रहे थे कहने लगे अफ़सोस हम भूल गये थे कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिसका रिज़्क चाहता है कुशादह करता है और जिसे चाहता है नपा तुला देता है। ख़ुदा का एहसान हम पर न होता तो हम भी ज़मीन में धंसा दिये जाते। अफ़सोस हमें याद न रहा कि काफ़िर फ़लाह नहीं पाते।

सूरत के इख़्तिताम पर ऐलान होता है कि **हर चीज हलाक होने वाली है, सिवाए उस जात के। फरमांरवाई उसी की है और तुम सब उसी की तरफ पलटाए जाने वाले हो।**

सूरह अन्कबूत मक्का मोअज़्ज़मा के उस दौर में नाज़िल हुई है जबकि मुसलमानों पर मुसीबतों के पहाड़ तोड़े जा रहे थे। कुफ़्फ़ार की तरफ़ से इस्लाम की मुख़ालिफ़त पूरे ज़ोर व शोर से हो रही थी। इन हालात में अल्लाह तआला ने यह सूरत सच्चे मौमिनों में अज़्म व हिम्मत और इस्तिक़ामत पैदा करने और दूसरे कमज़ोर ईमान वालों को शर्म दिलाने के लिए नाज़िल फ़रमाई। इसके साथ कुफ़्फ़ारे-मक्का को भी इसमें सख़्त तम्बीह की गई अपने हक़ में उस अंजाम को दावत न दें जो हर ज़माने में हक़ से दुश्मनी करने वालों का होता आया है।

इस सिलसिले में उन सवालात का भी जवाब दिया गया है जो बाज नौजवानों को उस वक्त पेश आ रहे थे, मसलन वालिदैन उन पर जोर देते थे कि मोहम्मद (स.) का साथ छोड दो और हमारे दीन पर कायम रहो। जिस कुरआन पर तुम ईमान लाए हो उसमें तो यही लिखा है कि मां-बाप का हक सबसे ज्यादा है। उनका कहना मानो। इसका जवाब दिया गया ''हमने ही इंसान को हिदायत की है कि अपने वालिदैन के साथ नेक सुलुक करे लेकिन अगर वह तुझ पर जोर डालें कि तु मेरे साथ किसी ऐसे माबूद को शरीक ठहराए जिसे तु (मेरे शरीक की हैसियत से) नहीं जानता तो उनकी इताअत न कर।''।

इसी जरह इस्लाम क़ुबूल करने वालों से उनके क़बीले के लोग कहते थे कि अज़ाब-सवाब हमारी गर्दन पर, तुम तो हमारा कहना मानो..................इसका जवाब दिया गया..........ये काफ़िर लोग ईमान लाने वालों से कहते हैं कि तुम हमारे तरीक़े की पैरवी करो और तुम्हारी ख़ताओं को हम अपने ऊपर ले लेंगे। हालांकि इनकी ख़ताओं में से कुछ भी वे अपने ऊपर लेने वाले नहीं। वे क़तअन झूठ कहते हैं। हां, ज़ुरूर वे अपने बोझ भी उठाएंगे और अपने बोझों के

साथ वे दूसरे बहुत से बोझ भी उठाएंगे। यानी एक बोझ अपनी गुमराही का और दूसरा बोझ दूसरों को गुमराह करने का। और क़यामत के रोज़ यक़ीनन उनसे इस झूठ गढ़ने की बाज़पुरूस होगी, जिसे उन्होंने अपनी आदत बना लिया है।

अहले ईमान के सामने हज़रत नूह (अ.) इब्राहीम (अ.) मदयन, आद, समूद, क़ारून, फ़िरऔन और हामान के वाक्यात बयान करके यही पहलू नुमायां किया गया कि पिछले अंबिया पर कैसी सख्तियां गुज़रीं और कितनी कितनी मुद्दत तक वे सताए गए। फिर उसकी तरफ़ से उनकी मदद हुई इसलिए **घबराओ नहीं। अल्लाह की मदद जरूर आएगी। मगर आज़माइश का एक दौर गुज़रना ज़रूरी है। साथ ही कुफ्फारे मक्का को भी इन किस्सों के ज़रिये तम्बीह की गई। अगर ख़ुदा की तरफ से पकड होने में देर लग रही है तो यह न समझ बैठो कि कभी पकड होगी ही नहीं। पिछली तबाह-शुदा कौमों के खंडरात तुम्हारे सामने हैं। देख लो कि आख़िरकार उनकी शामत आकर रही।**

मुसलमानों को हिदायत की गई कि अगर ज़ुल्म व सितम नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाए तो ईमान छोड़ने के बजाए घर बार छोड़ कर निकल जाएं। ख़ुदा की ज़मीन वसीअ है, जहां ख़ुदा की बंदगी कर सको, वहां चले जाओ। और कितने प्यारे अंदाज़ में कहा है कि.................**कितने ही जानवर हैं जो अपना रिज़्क अपनी पीठों पर उठाए नहीं फिरते। अल्लाह उनको रिज़्क देता है, वही तुम्हें भी देगा। वह सब कुछ सुनता और जानता है।**

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ **अल्लाह तआला हम सबको पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।**

❖ **अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।**

''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



सत्रहवीं तरावीह

आज इक्कीसवे पारे उतलु मा ऊहिया की तिलावत की गई।

सूरह अंकबूत की आयत में एहले ईमान में अज़्म व हिम्मत पैदा करने के साथ साथ कुफ़्फ़ार को समझाने का पहलू भी छूटने नहीं पाया। तौहीद और आख़िरत दोनों हक़ीक़तों को दलाइल के साथ उनके सामने बयान किया गया, फ़रमाया: अगर तुम उन लोगों से पूछो कि ज़मीन और आसमान को किसने पैदा किया है और चांद और सूरज को किसने तुम्हारी ख़िदमत पर लगाया है तो ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने! फिर ये कैसे धोखा खा रहे हैं? अगर तुम उनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी बरसाया और उसके बाद मुर्दा ज़मीन को जिला उठाया? तो वे ज़रूर कहेंगे अल्ला ने। **कहो अल्हमदोलिल्लाह यानी जब ये सारे काम अल्लाह कर रहा है तो फिर हम्द व तारीफ़ और इबादत का मुस्तहिक भी वही है। यह दुनिया की जिंदगी कुछ नहीं है मगर एक खेल और दिल का बहलावा है। यानी इसकी हक़ीक़त बस इतनी है जैसे थोडी देर के लिए खेल कूद लें और फिर अपने घर को सिधार जाएं।** यहां जो बादशाह बन गया वह हक़ीक़त में बादशाह नहीं बन गया है बल्कि सिर्फ़ बादशाही का ड्रामा कर रहा है। एक वक़्त आता है जब उसका यह खेल ख़त्म हो जाता है और इसी तरह ख़ाली हाथ रूख़सत हो जाता है जिस तरह दुनिया में आया था। **अस्ल जिन्दगी का घर तो आख़िरत का घर है। काश ये लोग जानते!**

क्या ये लोग नहीं देखते कि हमने चारों तरफ़ लूट मार करने वालों के दरमियां मक्का को पुर अम्न हरम बना दिया है। फिर भी यह बातिल को मानते हैं और अल्लाह की नेमत का कुफ़्रान करते हैं। क्या ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नुम नहीं है? **जो लोग हमारी ख़ातिर मुजाहिदा करेंगे उन्हें हम अपने रास्ते की हिदायत देंगे और यकीनन ''अल्लाह दीन का काम करने वालों के साथ है''**

अब सूरह रूम शुरू होती है 615 ईसवीं में ईरानियों ने रूमियों पर ग़लबा हासिल कर लिया। इसी साल मुसलमानों ने हब्शा हिजरत की। रूम पर आतिश-परिस्तों के क़ब्ज़े से लोगों में चेमी गोइयां हुई कि आसमानी मज़हब के मानने वाले आग की पूजा करने वालों से शिकस्त खा गये। इस बात को मुश्रिकों ने अपने मज़हब के हक़ होने की दलील समझा। चुनाँचे ईरान के बादशाह ख़ुसरो परवेज़ ने बैतुलमुक़द्दस पर क़ब्ज़ा कर के हरकुल को ख़त लिया ''तू कहता है कि तुझे अपने रब पर भरोसा है। क्यों न तेरे रब ने यरूशलम को मेरे हाथ से बचा लिया?''

इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है आज भी यही हो रहा है कि **कमज़रफों को दुनिया में जरा सी कामयाबी होती है तो फौरन ''खुदा और उससे मनसूब मजहब का मजाक उडाने लगते हैं।''** उसी तरह मुश्रिकीने अरब भी कहने लगे थे कि मुसलमानों का दीन भी इसी तरह मिटा दिया जाएगा।

अल्लाह ने इस बात का नोटिस लिया और यह सूरत नाज़िल की। फ़रमाया ''हां क़रीब की सरज़मीं में रूमी मग़लूब हो गये हैं मगर चंद साल के अन्दर अन्दर वे ग़ालिब आ जाएंगे। और वह दिन वह होगा जब अल्लाह की दी हुई फ़तह से अहले-ईमान ख़ुश हो रहे होंगे।'' इसमें दो बातों की पेशीन गोई की गई। एक यह कि रूमी ग़ालिब आ जाएंगे। दूसरी यह कि मुसल्मानों को भी फ़तह नसीब होगी। किसी को यक़ीन नहीं आता था कि यह पेशन गोईयां पूरी होंगी। चुनाँचे कुफ़्फ़ारे -मक्का ने ख़ूब मज़ाक उड़ाया और आठ साल तक रूमी भी शिकस्त पर शिकस्त खाते रहे। यहां तक कि क़ैसर कुस्तुनतुनिया छोड़ कर त्यूनिस में पनाह लेने पर मजबूर हो गया। और मुसल्मानों पर अहले मक्का के मुज़ालिम इन्तिहा को पहुच गये। 622 ई0 में हुजूर (स0) हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए। 624 ईसवीं में हरक़िल ने अज़रबाइजान में घुस कर ईरानियों पर पुश्त से हमला किया और ईरान के आतिशकदे की ईट से ईट बजा दी। इधर मुसल्मानों पर मुश्रिकीने-मक्का ने बदर के मक़ाम पर हमला किया। मगर अल्लाह ने उनका ज़ोर

तोड़कर रख दिया और मुसल्मानों को तारीख़ की अज़ीमुश्शान फ़तर नसीब हुई और इस तरह दोनों पेशीनगोईयां सच्ची साबित हुई।

सूरे रूम से यह बात सामने आ गयी कि इंसान बज़ाहिर वही कुछ देखता है जो उसकी आंखों के सामने होता है। मगर इस ज़ाहिर के पर्दे के पीछे जो कुछ होता है उसकी उसे ख़बर नहीं होती। जब ये ज़ाहिर बीनी दुनियां के ज़रा ज़रा से मामलात में ग़लत अंदाज़ों का सबब बनकर बाज़ औक़ात इंसान को बड़े नुक़सान में मुब्तिला कर देती है तो फिर पूरी ज़िंदगी के पूरे सरमाया, माल, औलाद, जायदाद सब को दांव पर लगा देना........कि ख़ुदा परस्ती के बजाए दुनिया परस्ती पर चलाने लग जाना...... कितनी बड़ी ग़लती है। रूम और ईरान के मामलों का रूख़ आख़िरत के मज़मून की तरफ़ फेरते हुए अहसन तरीक़े से समझाया गया है कि आख़िरत मुमकिन भी है, माकूल भी है और इसकी ज़रूरत भी है। इंसान की ज़िंदगी के निज़ाम को दुरूस्त रखने के लिए भी यह ज़रूरी है कि आदमी आख़िरत का यक़ीन रखकर मौजूदा ज़िंदगी का प्रोग्राम बनाए। वरना वही ग़लती होगी जो ज़ाहिर पर एतिमाद करके बड़े बड़े फ़ैसले करने से अकसर होती है।

कायनात की निशानियों की तरफ़ इंशारे करते हुए बताया कि अल्लाह ही ने ख़ुल्क़ की इब्तिदा की और वही दोबारह पैदा करेगा फिर तुम उसी की तरफ़ पलट कर जाओगे जब क़यामत बरपा होगी। मुजरिमीन दंग रह जायेंगे। जिनको अल्लाह के साथ उन्होंने शरीक किया था कोई सिफ़ारशी न होगा बल्कि वह अपने शरीकों के मुन्किर हो जायेंगे। जब क़यामत आयेगी लोग गरोह दर गरोह बंट जायेंगे। जो लोग ईमान लाये और अच्छे अमल किये वह बाग़ों में खुश खुश होंगे जिन्होंने कुफ़्र किया हमारी आयात और आख़िरत को झुठलाया वह अज़ाब से दो चार होंगे। पस सुबहो शाम अल्लाह की तस्बीह करो। आसमानों और ज़मीनों में उसी की हम्द है तीसरे पहर और ज़ोहर के वक्त भी उसकी तस्बीह करो। वह ज़िन्दह को मुर्दे में से निकालता है (जैसे अन्डे से बच्चा) और मुर्दे को ज़िन्दह से निकालता है (जैसे परिन्दे से अन्डा) और ज़मीन से मुर्दह होने के बाद ज़िन्दगी बख़्शता है। इसी तरह तुम भी उठाये जाओगे खुदा की निशानियों में से है कि (1) उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर तुम पूरे इन्सान बनकर ज़मीन में फैलते जा रहे हो। बेजान मिट्टी से ऐसा जामेअ ख़ूबियों वाला इन्सान बनाया। इन्तिहाई हकीमाना ख़िलक़त है। (2) उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से बीवियां बनायीं ताकि तुम इनसे सुकून हासिल करो और तुम्हारे दर्मियान मोहब्बत और रहमत पैदा कर दी। (3) उसकी निशानियों में से आसमानों ज़मीन की पैदाइश तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों का इख़्तिलाफ़ यक़ीनन उसमें बहुत सी निशानियां हैं। दानिशमन्द लोगों के लिये (4) उसकी निशानियों में तुम्हारा रात को सोना और दिन को रोज़ी तलाश करना है जो लोग गौर से सुनते उनके लिये इसमें अलामतें हैं। (5) उसकी निशानियों में से यह है कि डर और उम्मीद के साथ वह तुम्हें बिजली की चमक दिखाता है, आसमान से पानी बरसाता है फिर उससे मुरदह ज़मीन को ज़िन्दा करता है जो अक़्ल से काम लेते हैं इसमें उनके लिये बहुत सी निशानियां है। (6) उसकी निशानियों में से यह है कि आसमानों ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम है फिर जब भी वह तुम्हे पुकारेगा तुम अचानक ज़मीन से निकल पड़ोगे। आसमानो ज़मीन में जो कुछ है उसी का है। कायनात की हर शै उसकी ताबे फ़रमान है। वही है जो तख़्लीक़ की इब्तिदा करता है फिर वही उसका इआदह करेगा और यह उसके लिये आसानतर है। ज़मीन में उसकी सिफ़त सबसे बरतर है। वह ज़बरदस्त और हकीम है।

<u>शिर्क कायनात और इंसान दोनों की फितरत के खिलाफ है</u> इसलिये जहां भी इंसान ने इस गुमराही को इख़्तियार किया वहां फ़साद रूनमा हुआ इन दोनों कौमों की लड़ाई के सबब जो फ़साद अज़ीम रूनमा हुआ वह भी शिर्क के नताइज में से हैं।

सूरह लुक़मान में अल्लाह ने हज़रत लुक़मान की वो नसीहतें बयान की हैं जो उन्होंने अपने बेटे को की थीं। अहले -अरब हज़रत लुक़मान की हिकमत व दानिश पर फ़ख़्र करते थे और उनके क़िस्से इनके यहां मशहूर थे। अल्लाह ने इसी से इस्तदलाल करते हुए बाताया है कि हज़रत लुक़मान ने भी अपने बेटे को वही नसीहतें कीं, जिनकी दावत यह हाकिमाना किताब दे रही है। यह इस बात का सबूत है कि अक़्ले-सलीम इस दावत के हक़ में है। और जो लोग मुख़ालफ़त कर रहे हैं वो दरअसल अक़्ले-सलीम और फ़ितरत से जंग कर रहे हैं। साथ ही इस बात की तरफ़ भी इशारा

हो गया कि लुक़मान अपने बेटे को जिन बातों पर अमल करने के लिए इस दिलसोज़ी से नसीहत करते थे। आज इन्हीं बातों से रोकने के लिए बापों की तरफ़ से बेटों पर सितम ढाए जा रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि उन्हें बताया कि उनके अंदर भी जो लोग सही फ़िक्र व दानिश रखने वाले गुज़रे हैं उन्होंने भी इन्हीं बातों की तालीम दी है, जो पैग़म्बर दे रहे हैं। यानी यही बातें इंसानी फ़ितरत के मुताबिक़ हैं। आज भी यह बात मलहूज़ रहे कि मग़रिबी फ़िलॉसफ़र जब अख़लाक़ियत पर बहस करते हैं तो वह भी उसकी बुनियाद अक्ले-आम के मारूफ़ और मुसल्मां अख़लाक़ी उसूलों पर ही रखते हैं। मगर आख़िरत और ख़ुदा का इन्कार करने की वजह से वह ये नहीं बता पाते कि इंसान को **आख़िर नेकी क्यों करनी चाहिए और बदी से क्यों बचना चाहिए?...... अस्ल बुनियाद यानी अपने पैदा करने वाले को राज़ी करना और उसकी नाराज़गी से बचना.......बस इससे भागते हैं इसकी सजा यह मिली है कि तमाम अख़लाक़ियात्त बेबुनियाद और बेमायनी हो कर रह गयी हैं।** इन फ़िलासफ़र्स ने बुनियाद यह बताई कि फ़ायदा पहुंचे लज़्ज़त मिले ख़ुशी हासिल हो और ज़्यादा से ज़्यादा यह कि फ़र्ज़ बराए फ़र्ज़ यानि ड्यूटी है। इसे ड्यूटी समझकर अदा करो। नतीजा यह निकला है कि नफ़्स परस्ती और हवसनकी को ख़ुशी (Hapiness) कहा जाता है और इसी को ज़िंदगी का मक़सद बना लिया है। **मोहब्बत के रिश्ते भी मासूमियत और इंसानियत से ख़ाली हो गये हैं और सिर्फ़ नफसानी ख़्वाहिश पूरी करने का नाम मोहब्बत रख लिया है।**

इस फलसफे ने इनकी सब अच्छी तालीमात का हुलिया बिगाड दिया है। ख़ानदानी निज़ाम के बख़िये उधड गये हैं और मफाद परस्ती के सिवा कोई रिश्ता काबिले-एहतिराम बाकी नहीं रहा है। इसके बरख़िलाफ़ क़ुरआन में न सिर्फ अख़्लाकियत बल्कि सारे दीन की बुनियाद फितरत पर रखा है। मगर जानवरों की फितरत पर नहीं। बल्कि इंसानी फितरत पर। जिसकी गुथ्थियां सुलझाने और गलतफहमयों को दूर करने के लिए उसने किताबें और रसूल भेजे हैं। और सियाह इंसानी फितरत को उनके ज़रिये वाज़ेह किया है और बताया कि अस्ल चीज अपने रब को राज़ी करना है और उसकी नाराजगी से बचना है।

इस पर मुश्रिकीन एतराज़ करते थे कि इस हक़ीक़त को झुठलाने का अन्जाम क़यामत को आना है तो वह क्यों नहीं आ जाती? इसका जवाब सूरत के आख़िर में दिया गया है कि क़यामत के आने का वक़्त अल्लाह को मालूम है। अगर आम इंसानों को मालूम नहीं तो इसका मतलब यह नहीं कि वह हक़ीक़त नहीं है। बारिश एक हक़ीक़त है मगर क्या तुम बता सकते हो जो बादल आए हैं वे ज़रूर बरसेंगे। या ऐसे ही आगे बढ़ जाएंगे। इसी तरह औरत को हम्ल से औलाद होगी मगर, क्या होगी? यही हाल मौत का है, जो ज़बर्दस्त हक़ीक़त है। मगर किसको, कब मौत आएगी कौन जानता है? जब इन चीज़ों का इल्म नहीं, मगर यह हक़ीक़त हैं, तो फिर **क़यामत का अगर इल्म नहीं हो तो वह कैसे मशकूक हो गई? इस घडी का सही इल्म अल्लाह ही के पास है, जैसे बारिश, होने वाली औलाद और कल क्या होगा और किस सरजमीं में इंसान को मौत आएगी, ये सब अल्लाह जानने वाला है।**

सूरह सजदह में है कि काफ़िर कहते हैं कि जब हम मिट्टी में मिल जायेंगे तो फिर क्या हम नये सिरे से पैदा किये जायेंगे? आप उन से कहिये मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है वह तुमको पूरा पूरा अपने क़ब्ज़े में ले लेगा फिर तुम अपने रब की तरफ़ पलटाये जाओगे। काश आप देखते कि मुजरिम सर झुकाये अपने रब के हुज़ूर खड़े होंगे उस वक़्त वह कहेंगे ऐ हमारे रब हमने देख लिया, सुन लिया अब हमें वापिस भेज दे। हम अच्छा अमल करेंगे। अब हमें यक़ीन आ गया। जवाब में इरशाद होगा हम चाहते तो हर एक को यह सब दिखा कर हिदायत दे देते मगर हम हक़ीक़त को ओझल रखकर इम्तिहान लेना चाहते थे और हमारी बात पूरी हो गयी कि जहन्नुम को जिनों और इन्सानों से भर देंगे। (जो नाफ़रमानी करेंगे) आज के दिन को भूल जाने का अब मज़ह चखो। आज हम तुम्हें भुलेंगे अपने करतूतों की वजह से दायमी अज़ाब चखो। हमारी आयात पर वह लोग ईमान लाते हैं जिन्हें यह आयात सुनाकर नसीहत की जाती है। वह सजदे में गिर पड़ते हैं (यह आयते सजदह हैं) और अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करते हैं। तकब्बुर नहीं करते। उनकी पीठें बिस्तरों से अलग रहती हैं। अपने रब को उम्मीद और ख़ौफ़ से पुकारते हैं। हमने जो रोज़ी दी है उसमें से ख़र्च करते हैं। कोई नहीं जानता कि हमने उनकी आखों

की ठंडक के लिये क्या कुछ तैयार कर रखा है। यह उनके आमाल का बदला है। मोमिन और फ़ासिक़ दोनों बराबर नहीं हो सकते। साहबे-ईमान व अमले सालेह के लिये जन्नतुलमावा है। उनके आमाल के बदले ज़ियाफ़त के तौर पर जिन्होंने फ़िस्क किया उनका ठिकाना जहन्नुम है। जब जब उससे निकलना चाहेंगे ढकेल दिये जायेंगे। उनसे कहा जायेगा जिस अज़ाब को तुम झुठलाते थे अब इसे चखो। इस बड़े अज़ाब से पहले दुनिया में भी हम छोटे छोटे अज़ाब देते रहेंगे ताकि तुम बाज़ आ जाओ।

सूरह अलसिजदा में बताया गया है कि अल्लाह की बड़ी रहमत है कि वह इंसान के क़ुसूरों पर यकायक एक आख़िरी और फ़ैसला कुन अज़ाब में उसे नहीं पकड़ लेता, बल्कि इससे पहले छोटी छोटी तकलीफ़ें, मुसीबतें और नुक़सानात भेजता रहता है। और इस तरह की हल्की हल्की चोटें लगाता रहता है। ताकि उसे तम्बीह हो और उसकी आँखें खुल जाएं। आदमी अगर इब्तिदाई चोटों से होश में आ जाए तो यह उसके हक़ में बेहतर है।

कुफ़्फ़ारे-मक्का से कहा गया कि ज़ाहिर से धोखा न खाओ। आज तुम देख रहे हो कि मोहम्मद (स0) की बात चंद लड़कों और चंद ग़ुलामों और ग़रीब लोगों के सिवा कोई नहीं सुन रहा है। और हर तरफ़ से उनका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है तो समझते हो कि यह ज़्यादा चलने वाली नहीं। मगर यह महज़ तुम्हारी नज़र का धोखा है। क्या तुम दिन रात यह नहीं देखते कि आज ज़मीन बिल्कुल बंजर पड़ी है जिसे देखकर यह ख़्याल भी किसी को नहीं होता कि उसके पेट में हरियाली के ख़ज़ाने छिपे हुए हैं। मगर कल एक ही बारिश में उसके चप्पे चप्पे से सब्ज़ा फूट रहा है। सूरह अहज़ाब में तीन अहम वाक़ेआत इस तसल्सुल के साथ बयान हुए हैं कि उन्हें आज और कल जुदा जुदा बयान करने से अस्ल मज़मून समझने में मदद नहीं मिलेगी, इसलिए इस पूरी सूरत का बयान कल होगा।

- ❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।
- ❖ अल्लाह तआला हम सब को क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अम्ल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।
- ❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

''आमीन''

आज की तराहवी के चन्द अहम नुकात



अठारहवीं तरावीह

आज के पेशकर्दा नुकात बाईसवे पारे "वमैंय-यक़नुत" से ताल्लुक़ रखते हैं। सूरह अहज़ाब में तीन वाक्यात से बहस की गई है। एक ग़ज़वा खन्दक़, दूसरा ग़ज़वा बनी कुरैजा और तीसरा हज़रत ज़ैनब से हुजूर (स.) का निकाह, यानी मुंह बोले बेटे की तलाक़ दी हुई औरत से निकाह। जंगे उहुद में हुजूर (स.) की एक हिदायत को नज़र अन्दाज़ करने के सबब जो शिकस्त हुई उसका असर अरबों पर यह पड़ा कि मुशरिकीन, यहूद और मुनाफ़िक़ीन तीनों की हिम्मतें बढ़ गयीं और वह समझने लगे कि मुसलमानों को खत्म करना कुछ ज़्यादा मुश्किल काम नहीं। चुनाँचे उहुद की जंग को दो महीने भी नहीं हुए थे कि नज्द के क़बीले ने मदीने पर छापा मारने की तैयारियां शुरू कर दीं। फिर एक साल बाद तीन क़बीलों ने हुज़ूर (स.) से दीन सिखवाने के लिए आदमी मांगे। हुज़ूर (स.) ने सत्तर के क़रीब मुबल्लिग़ीन उनके क़बीलों में भेजे। मगर उन्हें धोखा देकर शाहीद कर दिया गया। जिस पर आप ने एक महीने तक इन क़बीलों के खिलाफ़ कुनूते-नाज़िला पढ़ी। इन्ही हालात में शव्वाल पांच हिजरी में अरब के बहुत से क़बाइल ने मदीना पर एक मुशतरिका कुव्वत के साथ हमला किया। अगर यह हमला अचानक हो जाता तो सख्त तबाहकुन होता। मगर तहरीके-इस्लामी के हमर्ददों और मुतास्सिरीन अफ़राद जो मुखालिफ़ क़बीलों में रहते थे। आपको सब कारवाईयों की इत्तिला देते रहते थे। इसलिये हमले के कुछ दिन पहले से आपने मदीने के दो तरफ़ खन्दक़ खोद डाली और तीन हज़ार अफ़राद के साथ जंग के लिए तैयार हो गये। कुफ़्फ़ार के ख्वाब व ख्याल में भी नहीं था कि उन्हे खन्दक से साब्क़ा पेश आयेगा। क्योंकि अरब इस तरीके पर कभी नहीं लड़े थे। मुशरिकीने-अरब को जाड़े के ज़माने में लम्बे मुहासिरे के लिए मजबूर होना पड़ा। जिस के लिये वे घरों से तैयार होकर न आये थे। 25 दिन से ज़्यादा यह मुहासिरा जारी रहा। कुछ तो मुहासिरे की तवालत, कुछ हुज़ूर (स.) की जंगी चालें और फिर एक रात अल्लाह ने ऐसी आंधी चलाई कि तमाम खेमे उखड़ गये और कोई उनमें से न ठहर सका। इस पूरे अरसे में एक बार शदीद हमला हुआ था। जो सुबह से रात तक जारी रहा और पाँचों वक्त की नमाज़े रात को जंग से फ़ारिग़ होकर एक साथ पढ़ी गयीं। मुसलमानों ने इन्तिहाई बे-जिग्री से मुक़ाबला किया।

मारकए खन्दक खत्म हुआ तो जिबराईल (अ.) ने अल्लाह का हुक्म सुनाया कि अभी हथियार न खोले जायें बल्कि यहूदी क़बीले बनी कुरैज़ा पर वार करके उनसे निपट लिया जाये। क्योंकि उन्होंने गद्दारी की थी। चुनाँचे फ़ोरन ही मुसलमान उनके इलाक़े में पहुच गये और यहूदियों के मुक़र्रर करदा सालिस हज़रत साअद बिन मुआज़ के फ़ैसले के मुताबिक़ उनके तमाम मर्दो को क़त्ल कर दिया गया और औरतों और बच्चों को गुलाम बना लिया गया।

जंगे उहुद से जंगे खन्दक तक का दो साल का तमाम अर्सा सख्त बुहरानी ज़माना था मगर इसमें मुआशरे के इस्तहकाम और इस्लाह का काम जारी रहा। चुनाँचे मुसलमानों के निकाह और तलाक़ के क़वानीन इसी ज़माने में मुकम्मल हुए। विरासत का क़ानून नाज़िल हुआ और शराब और जुए को हराम किया गया और दूसरे भी कई पहलूओं के मुत्तालिक़ क़वानीन नाज़िल हुए। इस सिल्सिले का एक अहम मसला जो इस्लाह का तक़ाज़ा कर रहा था वह मुह बोली मां और मुह बोली बहन इसी तरह बेतकल्लुफ़ होती थीं जैसे सगी मां और सगी बहन। इसी तरह अगर वह

मर जाऐ या अपनी बीवी को तलाक़ दे दे तो उसकी बीवी से मुह बोला बाप शादी नहीं कर सकता था। यह बातें क़दम क़दम पर कुरआन के उन क़वानीन से टकराती थीं, जो अल्लाह ने सूरह निसा और बक़रह में निकाह, तलाक़ और विरासत के मुताल्लिक़ उतारे हैं। साथ ही बात अख़लाक़ के पहलू से भी बुरी थी कि कितना ही सगों की तरह समझा जाए, मगर यह रास्ता सिर्फ़ कानून बनाने से नहीं रूक सकता था। इसलिए अल्लाह ने ऐसे हालात पैदा किए कि नबी (स.) को खुद इस रस्म को तोड़ना पड़ा। आपकी फूफी-ज़ाद बहन हज़रत ज़ैनब (रजि.) से उनके शौहर हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रजि.) नें तलाक़ दी जो हुजूर (स.) के मंह बाले बेटे थे, तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि आप हज़रत ज़ैनब (रजि.) से शादी कर लें। जब आप (स.) ने हज़रत ज़ैनब (रजि.) से उनका निकाह पढ़ाया था तो अरबों की यह रसम तोड़ी थी कि वह आज़ाद करदा गुलाम को अपने बराबर नही समझते थे बल्कि उससे गुलामों का सा सुलूक करते थे। आपने अपनी फूफी-ज़ाद आज़ाद औरत से उनकी शादी करके यह साबित किया कि इस्लाम में आज़ाद-करदा ग़ुलाम भी अशरफ़ का दर्जा रखता है। अब अल्लाह ने चाहा कि इस रस्म को भी तोड़े और मुह बोले बेटा न समझा जाए। इसी तरह पर्दे के अहकाम जारी हुए और क़रीबी रिश्तेदारों के अलावा ग़ैर मर्दो के साथ खला-मला हराम क़रार दिया गया। अगर उन्हे बात करनी हो या कुछ लेना-देना हो तो पर्दे के पीछे लें दें और औरतें ख्याल रखें कि आवाज़ में लोच न पैदा करें। कोई ऐसी हरकत न करें जिससे किसी मर्द को ग़लतफ़हमी हो। नबी (स.) की बीवियों को तमाम मुसलमानों की मां क़रार दिया गया और आप की वफ़ात के बाद उनसे निकाह हराम क़रार दिया गया। <u>आम मुसलमान औरतों को हुक्म दिया गया कि जब भी घरों से निकलें तो चादरों से अपने आप को ढांक कर निकलें और घूंघट निकाल लिया करें।</u>

<u>इसी मौके पर इस बात का ऐलान भी किया गया कि हुजूर (स.) आखिरी नबी हैं। और चूंकि</u> आपके <u>बाद कोई नबी आने वाला नहीं है</u> लिहाज़ा ज़मानए-जाहिलिसत में जो रसूम जड़ पकड़ चुकी हैं उनका ख़ात्मा रसूल (स0) के ज़रिये ज़रूरी है इसी वजह से अल्लाह तआला ने हज़रत जैद (रज़ी0) के तलाक़ देने के बाद हज़रत जैनब (रज़ी0) के तलाक़ देने कै बाद हज़रत जैनब (रज़ि0) ले पालक बेटे (मुंह बोले) थे और बेटे की बीवी (बहू) से निकाह हराम है। अल्लाह तआला ने तरदीद फ़रमादी कि हज़रत जैदे (रज़ि0) कब आप (स0) के बेटे थे वह तो सिरे से बेटे ही नहीं मर्दो में से मुहम्मद (स0) किसी के बाप नहीं फिर बहू का सवाल कहाँ पैदा होता है। दूसरी हैसियत आप (स0) की रसूल की थी और रसूल जिहालत की बातों को खत्म करने आते हैं तीसरी बात यह कि आप खतिमुन्नबीईन हैं आप (स0) के बाद कोई रसूल आने वाला नहीं लिहाज़ा ज़रूरी हैं कि इस क़बीह रस्म को आप (स0) खुद खत्म करके जायें।

चूंकि निकाह व तलाक़ का ज़िक्र है इसीलिये ज़मनन एक अहम मस्ले की वज़ाहत कर दी गयी। मुसलमान जब किसी औरत से निकाह करें और खिल्वत-सहीहा से पहले तलाक़ की नौबत आ जाये तो औरतों पर इद्दत नहीं मुराद यह है कि मर्द का हक़-रूजूअ साकित हो जाता है। इसी तरह हक़े-औलाद और इद्दत का ख़र्च भी साकित हो जाता है। अलबत्ता शौहर को चाहिये कि कुछ माल दे दिला कर औरत को रूख्सत करे गोया अगर निकाह के वक़्त महर मुक़र्रर किया गया है और खिलवत से पहले तलाक़ हो गयी तो निस्फ़ महर वाजिब है जैसा कि सूरह बक़रह आयत 237 में है इस वाजिब से ज़्यादह देना लाज़िम नहीं मुस्तहिब है। लेकिन अगर निकाह के वक़्त महर मुक़र्रर न किया गया हो तो इस सूरत में औरत को कुछ न कुछ उसकी हैसियत के मुताबिक़ देकर रूख्सत करना चाहिये। भले तरीक़े से रूख्सत करने का मतलब यह है कि उसे रूसवा या बदनाम न करें बल्कि शरीफ़ाना तरीक़े पर रूख्सत करे। इस ज़माने में लोग एक दूसरे के घरों में बेतकल्लुफ़ आया जाया करते थे लिहाज़ा यह हुक्म दिया गया कि नबी

(स0) के घर में बग़ैर इजाज़त के दाख़िल न होना चाहिये। बग़ैर खाने की दावत दिये खाने का इन्तिज़ार न करना चाहिये। फिर खाने के बाद दुनियां जहान की लायानी गुफ़्तुगू से परहेज़ करना चाहिये कि उससे नबी करीम (स0) को तकलीफ़ पहुंचती है। वह बसबब हया के तुम से कुछ नहीं कहते मगर अल्लाह तआला हक़ बात कहने से नहीं शरमाता। खाने के बाद बिला ज़रूरत बैठने की इजाज़त नहीं। नबी (स0) की बीवियों से कोई सामान मांगना हो या गुफ़्तुगू करना हो तो परदे के पीछे से मांगा करो इससे दोनों फ़रीक़ के दिलों की पाकीज़गी ज़्यादह मुनासिब तरीक़ह है। नबी (स0) को और अज़वाजे मुतहहरात रजि0 अन्हुम को तकलीफ़ देना जाइज़ नहीं। नीज़ नबी (स0) के विसाल के बाद उनकी अज़वाज से निकाह करना तमाम मुसलमानों के लिये हराम है। अलबत्ता घरों में आने के लिये करीबी रिश्तेदारों, घरेलू औरतों, नौकरों के लिये कोई मुज़ाइक़ह नहीं।

कुफ़्फ़ार व मुशरकीन और मुनाफ़िक़ीन नबी (स0) को बदनाम करने की कोशिश करते रहते थे मगर अल्लाह तआला ने वाज़ह फ़रमा दिया कि दुनिया कुछ भी कहे मगर नबी (स0) का मरतबह यह है कि ख़ुदा ख़ुदा अपनी तरफ़ से उन पर दुरूद भेजता है। फ़रिश्ते दिन रात आप के हक़ में दुआएं करते रहते हैं और अहले ईमान को भी चाहिये कि वह अपने नबी (स0) से गायत दरजह मोहब्बत रखें। उनके गिरवीदह हो जायें उनकी मदहो-सना करें। उनके हक़ में कामिल सलामती की दुआ करें दिलो जान से उनका साथ दें। जो लोग ख़ुदा और रसूल को अज़ीयत देते हैं उनपर दुनियां और आख़िरत में अल्लाह ने लानत फ़रमायी है। उनके लियें रूसवाकुन अज़ाब है।

ऐ नबी (स0) अपनी बीवियों और एहले ईमान की औरतों से कहदो कि अपने ऊपर अपनी चादरों के पल्लू लटका लिया करें। यह ज़्यादा मुनासिब तरीक़ा है कि वह पहचान ली जायें और उन्हें सताया न जाये गोया एक ख़ातून जब अपने आपको पर्दे में कर लेती है तो पूरे समाज में उसे इज़्ज़त की निगाह से देखा जाता है। सादह और हयादार लिबास में देखकर हर देखने वाला यह जान लेता है कि यह शरीफ़ और बाअसमत ख़्वातीन हैं आवारह और खिलाड़ी नहीं है कि कोई बदकिरदार इंसान उनसे अपने दिल में तमन्ना पूरी करने की उम्मीद कर सके उनको छोड़ने की जुर्अत कर सके।

सूरह फ़ातिर मक्के में नाज़िल हुई। फ़रमाया लोगो तुम पर जो अल्लाह के एहसानात है उन्हे याद रखो। क्या अल्लाह के सिवा कोई और भी ख़लिक़ है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता हो? उसके सिवा कोई मअबूद नहीं आख़िर तुम कहां से धोखा खा रहे हो कि ख़ुदा की दी हुई नेअमतों से फ़ायदा उठाओ और बन्दगी किसी और की बजा लाओ। यह खुली एहसान फ़रामोशी है और ए नबी (स0) अगर तुम्हें यह झुठलाते हैं तो (तसल्ली रखो) तुम से पहले बहुत से रसूल झुठलाये जा चुके हैं। सारे मुआमलात उसकी तरफ़ रूजू होने वाले हैं। लोगों अल्लाह का वादा आख़िरत बरहक़ है। दुनयावी ज़िन्दगी तुम्हें धोखे में न रक्खे कि बाद में कोई ज़िन्दगी कोई हिसाब किताब नहीं या ख़ुदा का वजूद नहीं वही व रिसालत की हक़ीक़त नहीं और सबसे बड़ा धोके बाज़ (शैतान) तुम्हें अल्लाह के बारे में धोके में न रखे शैतान जो तुम्हारा दुशमन है तुम भी उसे अपना दुशमन समझो। वह तो अपने पैरूओं की इस लियें बुला रहा है कि सब को जहन्नुमीं बना दे। ख़ुदा की क़ुदरत यह हैं कि उसनें दिन रात का सिलसिला जारी फ़रमाया चांद सूरज मुसख़्ख़र किये यह सब कुछ एक मुक़र्ररह वक़्त तक चलता रहेगा। ख़ुदा ही तुम्हारा हक़ीक़ी रब है। ख़ुदा के अलावा जिनको तुम पुकारते हो वह गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं उन्हें पुकारोगे तो वह तुम्हारी पुकार सुन नहीं सकते अगर सुन भी लें तो जवाब नहीं दे सकते। और क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क वह इन्कार नहीं करेगें। हक़ीक़त हाल की ऐसी ख़बर ख़ुदा के अलावा कोई नहीं दे सकता। तुम सबके सब अल्लाह के मोहताज हो। अल्लाह ग़नी है। ख़ुदा चाहे तो तुम्हारी जगह दूसरों को ले आये। यह अल्लाह के लियें कुछ भी मुश्किल नहीं। कोई किसी का बोझ नहीं उठायेगा अगर कोई बोझल हो और क़रीबी रिश्तेदार को बोझ उठाने के लियें पुकारेगा जब भी वह उसका

बोझ कुछ भी न उठा सकेगा। नबी तो उन्हीं को मुतनब्बेह करते है जो खुदा को देखे बग़ैर डरते हैं, नमाज़ पढ़ते है। जो पाकीज़गी इख़्तियार करता है वह अपनी भलाई के लियें करता है। सब को अल्लाह की तरफ़ जाना है अन्धे और आँख वाले बराबर नहीं हो सकते न कि अन्धेरा रोशनी यकसां है। ठंडक और धूप ज़िन्दा और मुर्दे बराबर नहीं। अल्लाह जिसे चाहतां है सुनवाता है और ऐ नबी (स0) आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़बरों में दफ़न हैं। आप तो सिर्फ़ ख़बरदार करने वाले हैं।

फ़रमाया कि जिन्होंने इन्कार किया उनके लियें जहन्नुम की आग है, न तो वह जहन्नुम में मरेंगे न अज़ाब कम होगा। हम हर इन्कार करने वाले को ऐसी ही सज़ा देते हैं वह वहां चीखेगे ऐ हमारे रब हमें यहां से निकाल अब हम पहले जैसे काम न करेंगे बल्कि अच्छा अमल करेंगे। उनसे कहा जायेगा क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी थी कि समझदार सबक़ लेलेता? और तुम्हारे पास जो डराने वाला भी आया था। अब मज़ा चखो। ज़ालिमों को कोई मददगार नहीं होता ज़मीनो आसमान के खुफ़िया राज़ अल्लाह ही जानता है। वह सीनों के राज़ तक जानता है उसने तुमको ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया है जो इन्कार करेगा। उसका वबाल उस पर है। काफ़िरों का कुफ़्र रब की नाराज़गी बढ़ातां है ख़सारे में इज़ाफ़ा करता है।

सूरह के आख़ीर में फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला लोगों की करतूतों पर पकड़ करने लगे तो ज़मीन पर कोई जानदार बाक़ी न बचे लेकिन वह अल्लाह का करम है कि वह लोगों को एक मुक़र्ररह वक़्त तक मोहलत देता है। जब उनका वक़्त पूरा होगा तो अल्लाह अपने बन्दों के देख लेगा कि उनके साथ क्या सलूक करना चाहिये।

❖ **आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।**

❖ **अल्लाह तआला हम सबको पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।**

❖ **अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।**

"आमीन"

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

उन्नीसवीं तरावीह

आज तेईसवें पारे ''वमा लिया'' की तिलावत की गई। सूरह यासीन क़ुरआन का दिल है यानी इसमें क़ुरआन की दावत को पुरज़ोर तरीक़े से पेश किया गया है। मरने वालों पर पढ़ने का हुक्म दिया गया है ताकि तमाम इस्लामी अक़ाएद ताज़ह हो जायें और आख़िरत की मंज़िल को मरने वाला अपनी आंखों से देख ले। फ़रमाया जब सूर फूंकी जायेगी तो लोग अपनी अपनी कब्रों से उठ खड़े होंगे, घबरा कर कहेंगे यह किस ने हमारी ख़्वाब गाह से हमें उठाया (उनसे कहा जायेगा) यह वही चीज़ है जिसका रहमान ने तुमसे वादह किया था और रसूलों की बात सच्ची थी। एक ज़ोर की आवाज़ होगी और सब के सब हमारे सामने हाज़िर कर दिये जायेंगे। आज किसी पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म न किया जायेगा जैसा तुम अमल करते थे वैसा ही बदलह दिया जायेगा। जन्नती लोग मज़े में होंगे। वह और उनकी बीवियां सायों में मसनदों पर तकिया लगाये होंगे। उनके लिये हर क़िस्म की लज़्ज़तें और जो कुछ वह मांगेगे रब्बे रहीम की तरफ़ से उनको सलाम किया जायेगा और मुजरिमों से कहा जायेगा तुम छट कर अलग हो जाओ। आदम के बेटों क्या मैंने तुमको हिदायत न की थी कि शैतान की बन्दगी न करो। वह तुम्हारा खुला दुश्मन है और मेरी बन्दगी करो यह सीधा रास्ता है मगर उसके बावजूद उसने तुम में से बहुत सों को गुमराह किया। क्या तुम अक़्ल नहीं रखते। यह वह जहन्नुम है जिससे तुमको डराया जाता था। अब इसमें चले जाओ कि तुम इनकार करते थे। आज हम इनके मुंह पर मुहर लगा देंगे। उनके हाथ बोलेंगे, पांव गवाही देंगे। यह दुनिया में जो कुछ करते थे।

अल्लाह के रसूल (स0) को अजीब अंदाज़ में तसल्ली दी गई कि लोग आप की मुख़ालिफ़त में जो कुछ कर रहे हैं उसका ग़म न कीजिए। जो लोग अल्लाह पर फ़ब्तियां कसने से बाज़ नहीं आते अगर वे आप (स0) का मज़ाक़ उड़ाएं तो यह कोई ताज्जुब की बात नहीं उनका मामला अल्लाह पर छोड़ दीजिए। फ़रमाया: क्या इंसान ने ग़ौर नहीं किया कि हमने उसको पानी की एक बूंद से पैदा किया तो वह एक खुला हुआ दुश्मन बन कर उठ खड़ा हुआ और उसने हम पर एक फब्ती चुस्त की और अपनी पैदाइश को भूल गया। कहता है कि भला हड्डियों को कौन ज़िंदा कर सकता है, जबकि वे बोसीदा हो जाएंगी।

कह दीजिए! उनको वही ज़िंदा करेगा जिसने उनको पहली मर्तबा पैदा किया था। वही है जिसने तुम्हारे लिए सरसब्ज़ दरख़्त से आग पैदा कर दी और तुम उससे आग जला लेते हो यानी तुम सरसब्ज़ दरख़्त से दो शाख़ें लेते हो और उनको आपस में रगड़कर आग जला लेते हो। तो ख़ुदा के लिए राख और मिट्टी के अंदर से ज़िंदगी नमूदार करते क्या देर लगती है। उसका मामला तो बस यूं है कि जब वह किसी बात का इरादा करता है तो कहता है कि ''हो जा'' और वह हो जाती है। **पस पाक है वह जात जिसके हाथ में हर चीज का इख्तियार है, और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।**

सूरह ''साफ़्फ़ात'' में कुफ़्फ़ारे-मक्का को बताया गया कि जिस नबी (स.) की तुम मुख़ालिफ़त कर रहे हो वह अनक़रीब तुम पर ग़ालिब आ जाएगा और तुम अल्लाह के लश्करों को खुद अपने सहन में उतरता हुआ देख लोगे। बस ऐ नबी (स.) ज़रा कुछ मुद्दत तक इन्हें इनके हाल पर छोड़ दीजिये और देखते रहिए। अनक़रीब ये भी ख़ूब देख लेंगे। हज़रत इस्माईल (अलै0) की बेमिसाल क़ुर्बानी का ज़िक्र है जब हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने दुआ की ऐ मेरे परवरदिगार मुझे एक नेक बेटा अता फ़रमा। फिर हमने एक साबिर बेटे की बिशारत दी वह लड़का बड़ा हुआ तो एक

रोज़ इब्राहीम (अलै0) ने कहा बेटा मैंने ख़्वाब देखा कि मैं तुम्हें ज़िबह कर रहा हूँ, बेटा तेरा क्या ख़्याल है उसने कहा, अब्बा जान जो कुछ आप को हुक्म दिया जा रहा है उसे कर डालिये। इन्शाअल्लाह आप मुझे साबिरों में से पायेंगे। आख़िर को जब इन दोनों ने सरे तस्लीम ख़म कर लिया और इब्राहीम (अ0) ने बेटे के माथे के बल गिरा दिया कि ज़िबह करें हमने उसे निदा दी कहा ऐ इब्राहीम तूने ख़्वाब सज्जा कर दिखवाया। हम नेकी करने वालों को ऐसी ही सज़ा देते हैं। यक़ीनन यह एक खुली आज़माइश थी और हमने एक बड़ी क़ुर्बानी फ़िदिये में देकर उस बच्चे को छुड़ा लिया और बाद के लोगों में उसे जारी कर दिया। सलामती हो इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। यकीनन वह हमारे मोमिन बन्दों में से था। इसी सूरह में अल्लाह तआला के हुक्म का इन्तिज़ार किये बग़ैर बस्ती छोड़कर चले गये तो अल्लाह तआला उनसे नाराज़ हुआ। रास्ते में वह कश्ती में सवार हुए और ज़्यादह अफ़राद की वजह से वह डगमगाने लगी। चुनांचि कुरा अन्दाज़ी की गयी कि किसे कश्ती से उतरना होगा। कुरा हज़रत यूनुस (अलै0) के नाम निकला और वह समन्दर में उतार दिये गये। फिर मछली ने उन्हें निगल लिया उन्हें अपने कुसूर का एहसास हुआ और अल्लाह तआला से उन्होंने तसबीह पढ़कर मआफ़ी मांगी। ला इलाह इल्ला अल्लाह अन्त सुबहानका इन्नी कुन्तु मिनज्ज़ालिमीन। अगर यूनुस (अलै0) मच्छली के पेट में इसतग़फ़ार न करते तो क़यामत तक मच्छली के पेट में पड़े रहते। आख़िर कार बड़ी सक़ीम हालत में मच्छली ने उन्हें एक चटयल ज़मीन पर फेंक दिया और वहीं कुदरती तौर पर अल्लाह ने एक बेलदार दरख़्त उगाया जिसका फल उन्होंने खाया। फिर वह अपनी क़ौम की तरफ़ आये उन्हें इस्लाम की दावत दी वह सब मुसलमान हुये एक अरसे तक रहे। पाक है आपका रब, इज्ज़त का मालिक, उन तमाम बातों से जो यह बता रहे हैं और सलाम हैं रसूलों पर और सारी तारीफ़ रब्बुल आलमीन के लिये है। पाक है **आपका रब, इज्जत का मालिक, उन तमाम बातों से जो यह बयान कर रहे हैं। और सलाम है रसूलों पर। और सारी तारीफ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है।**

सूरह ''सॉद'' की इब्तिदा इस तब्सिरे से होती है जो अल्लाह ने कुरैश-मक्का की उन बातों पर किया है जो वे आपकी रिसालत, तौहीद और दीन की दावत के जवाब में बतौरे-मुहिम आबादी में कहते फिरते थे।

फ़रमाया! उन्होंने ताज्जुब का इज़हार किया उन्हीं में से एक बशर कैसे डराने वाला बन गया। यह तो जादूगर है। (नऊज़ोबिल्लाह) इसने तो सारे खुदाओं को एक बना डाला। यह तो बड़ी अजीब बात है। यक़ीनन यह बात किसी और ग़र्ज़ से (यानी अपनी बादशाहत क़ायम करने के लिए) कही जा रही है और अगर खुदा को नबी भेजना ही था तो बड़े बड़े मालदार सरदारों में से किसी को भेजना था। अल्लाह ने जवाब दिया कि ये सारी बातें इस लिए कर रहे हैं कि इन्होंने अभी मेरे अज़ाब का मज़ा नहीं चखा। अगर ये इतने अहम हैं कि हम इनसे मश्विरा कर के नबी बनाते तो फिर अर्शे-इलाही पर चढ़कर फ़ैसला बदलवा लें। यह तो एक छोटा सा गिरोह है जो इसी शहर में शिकस्त खाने वाला है। इनसे पहले नूह (अ.) की क़ौम और ''ऐकह'' वाले भी रसूलों को झुठला चुके हैं। जत्थे और गिरोह तो वे थे। उनके सामने उनकी क्या हकीक़त है। मगर मेरी सज़ा का फ़ैसला उनपर चिपक कर रहा। ये लोग बस एक धमाके के मुन्तज़िर हैं, जिसके बाद दूसरा धमाका नहीं होगा। ये चाहते हैं कि यौमे-हिसाब से पहले ही इनका हिसाब चुका दिया जाए।

सूरह ''साद'' के बाद इस तरावीह में सूरह ''ज़ुमर'' के पांच रूकूअ शामिल हैं। यह सूरत मुसलमानों के मक्का से हब्शा हिजरत करने से पहले नाज़िल हुई है, क्योंकि इस सूरत में कहा गया है कि ''अर्ज़ुल्लाहि-वासिआ'' (अल्लाह की ज़मीन बहुत वसीअ है) अगर एक मुल्क या ज़मीन अल्लाह की बंदगी करने वालों पर तंग कर दी गई है तो दूसरी जगह चले जाओ। इसमें नबी (स.) की दावत का अस्ल मक़सद वाज़ेह किया गया है कि ......

"इंसान को चाहिए कि खालिस अल्लाह की बंदगी इख्तियार करे। और किसी दूसरे की इताअत और इबादत से अपनी खुदापरस्ति को आलूदा न करे और दीन खालिस यानी बे-मेल इताअत पर सिर्फ अल्लाह का हक है''। रहे वे लेग जिन्होंने उसके सिवा दूसरे सरपरस्त बना रखे हैं और कहते हैं कि हम इनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि वे अल्लाह तक हमें पहुंचाने का ज़रिया हैं। अल्लाह यक़ीनन इनके दरम्यान उन तमाम बातों का फ़ैसला कर देगा जिनमें वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं यानी खुदा तक पहुंचाने का ज़रिया बनने वालों के मुताल्लिक़ भी इनमें कोई इत्तिफ़ाक़ नहीं। सूरज, चांद और तारों को देवता और ज़रिया बनाए हुए हैं। कोई किसी और को। इसका सबब यह है कि इनमें से किसी के पास इल्म नहीं है कि जिसकी बिना पर उनके खुदा तक पहुंचाने का ज़रिया होने का यक़ीन हो सके। और न कभी अल्लाह के पास से कोई नामों की फ़ेहरिस्त आई है कि सब उनको इस हैसियत से मान लें। बस अंधी अक़ीदत में महज़ अपने क़्यास से अपने पिछलों की अंधी तक़्लीद करते चले आ रहे हैं। इसलिए इख़्तिलाफ़ होना ज़रूरी है। फिर अल्लाह ने उन्हें काज़िब कुफ़्फ़ार कहा है। और कहा है कि **अल्लाह किसी ऐसे शख्स को हिदायत नहीं देता जो झूठा और मुनकरे-हक हो यानी ऐसे लोग झूठा गढा हुआ अकीदा लोगों में फैलाते हैं।** फिर फ़रमाया कि अगर अल्लाह चाहता कि किसी को अपना बेटा बनाए तो अपनी मख़्लूक़ ही में से किसी को यह मुक़ाम देता। (मर ख़ालिक़ व मख़्लूक़ का यह रिश्ता नामुमकिन है) चुनांचे पाक है वह इससे कि किसी को बेटा बनाए। वह अल्लाह है अकेला ग़ालिब। यह मुक़ाम क़ुरआन के मुश्किल मुक़ामात में से है। इसका वाज़ेह मतलब यह है कि खुदा जिसको भी बेटा बनाता है वह बहर हाल मख़्लूक़ होता है और मख़्लूक़ खुदाई में शरीक नहीं हो सकती है। हां मख़्लूक़ सिर्फ़ बरगुज़ीदा बुज़ुर्ग हो सकती है। इसलिए अल्लाह ने किसी को बेटा नहीं बनाया। बनाता तो तुम्हें ज़रूर ख़बर करता। उसने अपने रसूलों को बरगुज़ीदा किया है मगर वह भी उसके बंदे और रसूल हैं। उलूहियत में शरीक नहीं हैं।

खुदा और कायनात के सही ताल्लुक़ के बारे में वज़ाहत की कि उसने आसमानों और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया है। वही दिन पर रात और रात पर दिन को लपेटता है। उसने सूरज और चांद को इस तरह मुसख़्खर कर रखा है कि हर-एक, एक मुक़र्ररा वक़्त तक चला जा रहा है। जान रखो वह ज़र्बदस्त है और दरगुज़र करने वाला है। उसने तुमको एक जान से पैदा किया है। वह वही है जिसने इस जान से इसका जोड़ा बनाया और उसने तुम्हारे लिए मवैशियों से आठ नर व मादा पैदा किये। वह तुम्हारी माओं के पेटों में तीन-तीन बारीक पर्दो के अन्दर तुम्हें एक के बाद एक शक्ल देता चला जाता है। यही अल्लाह तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है। कोई माबूद उसके सिवा नहीं। फिर तुम किधर फिराये जाते हो। अगर तुम कुफ़्र करो तो अल्लाह को तुम्हारी कोई परवाह नहीं। लेकिन वह अपने बंदो के लिए कुफ़्र को पसन्द नहीं करता और अगर तुम शुक्र करो तो वह इसे तुम्हारे लिए पसंद करता है। याद रखो कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। आख़िरकार तुम सब को अपने रब की तरफ़ पलटना है। फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे हो। वह तुम्हारे दिलों का हाल तक जानता है।

अब क्या वह शख़्स जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया है और वह अपने रब की तरफ़ से एक रविश पर चल रहा है उस शख़्स की तरह हो सकता है जिसने इन बातों से कोई सबक़ नहीं लिया। तबाही है उन लोगों के लिए जिनके दिल अल्लाह की नसीहत की तरफ़ से सख़्त हो गये हैं। वे खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

हमने इस क़ुरआन में लोगों को तरह-तरह की मिसालें दी हैं कि यह होश में आ जाएं। ऐसा क़ुरआन जो अरबी ज़बान में हैं, जिसमें कोई टेढ़ नहीं है। ताकि वे बुरे अंजाम से बचें। अल्लाह एक मिसाल देता है ..... एक शख़्स

तो वह जिसके मालिक बहुत से बदमिज़ाज़ आक़ा हों और हर एक उसको अपनी तरफ़ खींच रहा हो कि वह उसकी ख़िदमत करे। और सब एक दूसरे से ख़िलाफ़ हुक्म जारी करते हों। और जिसकी ख़िदमत् करने या हुक्म मानने में वह कोताही करे, वही उसे डांटने फटकारने लगे, और सज़ा देने पर तुल जाए। इसके बरख़िलाफ़ वह शख़्स है जिसका सिर्फ़ एक ही आक़ा हो और उसे बस एक की ख़िद्मत करनी और उसको राज़ी करना हो। क्या इन दोनों का हाल बराबर हो सकता है? सोचो, **कौन अम्न और चैन में रहेगा ..... एक का गुलाम या बहुत से आकाओं का गुलाम?**

ऐ नबी (स.)! आप को भी ख़ुदा के सामने जाना है और इन लोगों को भी वहीं पहुंचना है। आख़िरकार कयामत के दिन सब अपने रब के हुज़ूर अपना अपना मुकदमा पेश करेंगे।

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ अल्लाह तआला हम सबको कुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक अता फ़रमाये।

❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

"आमीन"

आज की तराहवी के चन्द अहम नुकात



बीसवीं तरावीह

आज चौबीसवें पारे ''फ़मन अज़लमु'' की तिलावत की गयी हैं। जिसमें सूरह अज़-ज़ुमुर के चौथे रूकूअ से बयान शुरू होता है। वह अल्लाह ही है जो मौत के वक़्त रूहें कब्ज़ करता है जो अभी नहीं मरा उसकी रूह नींद में क़ब्ज़ कर लेता है यानी शऊर, फ़हमो-इदराक, इख़्तियार व इरादह की कुव्वतों को मोअत्तल कर देता है। फिर जिस पर वह मौत का फैसला नाफ़िज़ करता है उसे रोक लेता है और जिसे ज़िन्दह रखना होता है उनकी रूहें एक मुक़र्रह वख़्त के लिये वापिस भेज देता है। यह कैफ़ियत इन्सान के साथ हर रोज़ होती है गोया वह रोज़ाना मरता और जीता है फिर सोने के बाद कोई इन्सान नहीं कह सकता कि वह कल वाक़िअतन ज़िन्दह ही उठेगा। वह मर भी सकता है। इस तरफ़ जो इन्सान खुदा के हाथ में इतना बेबस है वह कैसा सख़्त नांदा है कि अगर उसी खुदा से ग़ाफ़िल और मुनहरिफ़ हो।

इस में मुनकरीने-कुरआन की हालत बयान करते हुये इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह को छोड़कर दूसरे सिफ़ारिशी उन्होंने समझ रखे हैं कि उन्हें खुदा की पकड़ से बचा लेंगे। उनकी कोई कक़ीक़त नहीं, न वो किसी चीज़ पे इख़्तियार रखते हैं, न उन्हें कोई शऊर है। <u>सिफ़रिश का सारा इख़्तियार तो अल्लाह के हाथ में है कि उसकी इजाज़त बग़ैर कोई किसी के लिये सिफ़रिश न कर सकेगा और न कोई गलत बात किसी के हक में कह सकेगा।</u> दूसरी बात यह कि शफ़ाअत के बारे में ग़लत अक़ीदा क़ायम कर लेने की वजह से इनका एतिमाद अपने गढ़े हुए सिफ़ारिशियों पर क़ायम हो गया है। इसीलिए जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो आख़िरत पर हक़ीक़ी ईमान न रखने वालों के दिल धड़कने लगते हैं। क्योंकि इस तरह उसकी पकड़ का तसव्वुर सामने आ जाता है। मगर ज़ब अल्लाह को छोड़कर दूसरों का जिक्र किया जाता है तो यकायक खुशी से खिल उठते हैं। क्योंकि इस तरह आख़िरत से बेक़ैद ज़िंदगी बसर करने का लाइसेंस हाथ आ जाता है। यह बात सारी दुनिया के मुश्रिकों में यकसां है और बदक़िस्मती में अब मुसलमान भी इसका शिकार हो गये हैं। ज़बान से तो कहते हैं कि हम अल्लाह को मानते हैं। मगर हाल यह है कि जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उनके चेहरे बिगड़ने लगते है। कहते हैं ज़रूर यह शख़्स बुज़ुर्गो और औलिया को नहीं मानता। जभी तो बस अल्लाह ही अल्लाह की बातें किया जाता है। और अगर दूसरो का ज़िक्र किया जाए, उनकी करामतें और क़िस्से बयान किये जाएं, चाहे वह कितने ही मुबालिग़ा आमेज़ और बेसुबूत हों तो उनकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं होता। इस तरज़े-अमल से साफ़ ज़ाहिर होता है कि इनको अस्ल दिलचस्पी किस से है। चुनाँचे इस मसले में फ़ैसलाकुन अंदाज़ में फ़रमाया :-

<u>फ़रमा दीजिए ''ऐ खुदा! आसमानों और जमीन के पैदा करने वाले, हाज़िर व गायब के जानने वाले, तू ही अपने बंदों के दरम्यान उस चीज का फैसला करेगा जिसमें वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं।''</u>

छठे रूकूअ में फरमाया ऐ नबी कह दो कि ऐ मेरे बन्दों जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है अल्लाह की रहमत से मायूस न हो जाओ यक़ीनन अल्लाह सारे गुनाह माफ़ कर देता है वह माफ़ कर देने वाला रहम करने वाला है। पलट आओ अपने रब की तरफ़ और मुतीअ हो जाओ। क़ब्ल इसके कि तुम पर अज़ाब आ जाये और फिर तुम्हें कहीं से मदद न मिल सके। और पैरवी करो अपने रब की भेजी हुयी किताब की क़ब्ल इसके कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाये और तुमको ख़बर न हो कहीं ऐसा न हो कि बाद में कोई शख़्स कहे अफ़सोस मेरी उस कोताही पर जो मैंने अल्लाह की जनाब में किया है बल्कि मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों में से था या कहे काश अल्लाह ने मुझे हिदायत बख़्शी होती तो मैं भी परहेज़गार होता या अज़ाब देख कर कहें काश मुझे एक और मौका मिल जाता

जो मैं नेकोकार बन जाता उससे कहा जायेगा क्यों नहीं, मेरी आयात तेरे पास आ चुकी थीं फिर तूने उसे झुठलाया और तकब्बुर किया। तू तो इनकार करने वालों में से था जिन लोगों ने खुदा पर झूठ बांधा क़यामत के रोज़ उनके मुंह काले होंगे। क्या जहन्नुम में मुताकब्बिरों के लिये काफ़ी जगह नहीं हैं।

फ़रमाया इन मुनकरीने-हक़ ने अल्लाह की क़द्र ही न की जैसा कि उसकी क़द्र करने का हक़ है। उसकी क़ुदरते कामिला का तो हाल यह है कि क़यामत के रोज़ पूरी ज़मीन उसकी मुठ्ठी में होगी। और आसमान उसके दाहिने हाथ में लपटे हुए होंगे। पाक और बालातर है वह उस शिर्क से जो ये करते हैं। और उसी रोज़ सूर फूंका जाएगा। तो वे सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे। जो आसमानों और ज़मीन में है। सिवाए उनके जिन्हें अल्लाह ज़िंदा रखना चाहे। फिर एक दूसरा सूर फूंका जाएगा। और यकायक सब के सब उठ कर देखने लगेंगे। ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी। आमाल की किताब लाकर रख दी जाएगी। अंबिया और तमाम गवाह हाज़िर कर दिये जाएंगे। लोगों के दरम्याप ठीक ठीक हक़ के साथ फैंसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा। और हर मुतनफ़्फ़िस को जो कुछ भी उसने अमल किया था उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। लोग जो कुछ भी करते हैं, अल्लाह उसको खूब जानता है। इस फ़ैसले के बाद वे लोग जिन्होंने कुफ़ किया था, जहन्नुम की तरफ़ गिरोह-दर-गिरोह हांके जाएंगे, और उसके करिंदे कहेंगे। "क्या तुम्हारे पास तुम्हारें लोगों में से ऐसे रसूल नहीं आये थे जिन्होंने तुमको तुम्हारे रब की आयतें सुनाई हों, और तुम्हें इस बात से डराया हो कि एक वक़्त तुम्हें यह दिन भी देखना पड़ेगा। वे जवाब देंगे। हां आये थे। कहा जाएगा.................दाख़िल हो जाओ जहन्नुम के दरवाज़ों में। यहां अब तुम्हें हमेशा हमेशा रहना है। बड़ा ही बुरा ठिकाना है यह मुनकरों के लिए"!!

सूरह अल ज़ुमर के बाद सूरह अलमोमिन है और यह उतरी भी इसके बाद ही है। सूरह मोमिन में अल्लाह तआला ने मुसलमानों के एक बड़े एजाज़ का ज़िक्र फ़रमाया है वह यह है कि बन्दये-मोमिन दुनिया में जिस हाल में भी हो अल्लाह के नज़दीक इतना बरगुज़ीदह है कि अर्श के उठाने वाले फ़रिश्ते जो अर्श के इर्द-गिर्द रहते हैं और जो सब के सब अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते रहते हैं मुसलमानों के लिये इसतग़फ़ार करते रहते हैं कि ऐ अल्लाह तू इनकी मग़फ़िरत फ़रमा और इनको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले। ऐ हमारे रब तू इन्हें जन्नते-अदन में दाख़िल फ़रमा जिनका तूने इनसे वादह किया है। इनके वालदैन, बीवियां औलाद में से जो सालेह हो उन्हें भी दाख़िल फ़रमा तू क़ादिरे मुतलक़ और हकीम है तू इन्हें क़यामत के दिन की बुराइयों से बचा ले जिसको तूने उस दिन बचा लिया। उस पर तूने बड़ा रहम किया और यही बड़ी कामयाबी है। अल्लाह तआला ने मुसलमानों को यह खुशख़बरी सुनाई कि उनके लिये अर्श के फ़रिश्ते दुआएं करते हैं।

जो लोग अपने रब की नफ़रमानी से परहेज़ करते थे, उन्हें गिरोह-दर-गिरोह जन्नत की तरफ़ ले जाया जाएगा। यहां तक कि जब वह वहां पहुंचेंगे, और उसके दरवाज़े पहले ही खोले जा चुके होंगे। तो उसके मुन्त्ज़िमीन उनसे कहेंगे "सलाम हो तुम पर, बहुत अच्छे रहे। दाख़िल हो जाओ, इसमें हमेशा हमेशा के लिए।" और वे कहेंगे शुक्र है, उस ख़ुदा का जिसने हमारे साथ अपना वायदा सच कर दिखाया और हमें ज़मीन का वारिस बना दिया। अब हम जन्नत में जहां चाहें अपनी जगह बना सकते है। यह कितना अच्छा बदला है यह अमल करने वालों के लिए! और तुम देखोगे कि फ़रिश्ते अर्श के गिर्द घेरा डाले अपने रब की हम्द और तस्बीह कर रहे होंगे। और लोगों के दरम्यान ठीक ठीक हक़ के साथ फैसला चुका दिया जाएगा और <u>पुकारा जाएगा कि "हम्द है अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए!"</u> अल-ज़ुमर के बाद अल-मौमिन है और यह उतरी भी इसके बाद ही है। उस ज़माने में कुफ़्फ़ारे-मक्का हुज़ूर (स.) को क़त्ल करने की साज़िशें भी कर रहे थे। चुनाँचे जवाब में आले-फ़िरऔन के एक ऐसे शख़्स का क़िस्सा सुनाया गया जो हज़रत मूसा (अ.) पर ईमान ले आया था। इस क़िस्से से तीन गिरोहों को सबक़ दिया गया है।

(1) कुफ़्फ़ारे-मक्का को बताया गया कि जो कुछ मोहम्मद (स.) के साथ तुम करना चाहते हो, यही कुछ अपनी ताक़त के बलबूते पर फ़िरऔन हज़रत मूसा (अ.) के साथ करना चाहता था। अब क्या यह हरकतें कर के तुम भी वही अंजाम देखना चाहते हो जो फ़िरऔन ने देखा।

(2) मोहम्मद (स.) और आप पर ईमान लाने वालों को यह सबक़ दिया गया है कि ज़ालिम बज़ाहिर कितने

ही ज़बर्दस्त क्यों न हों और तुम मुक़ाब्ले में कितने ही कमज़ोर और बेबस क्यों न नज़र आते हो, मगर तुम्हें यक़ीन रखना चाहिए कि जिस ख़ुदा के दीन को सरबुलंद करने के लिए तुम काम कर रहे हो उसकी ताक़त हर दूसरी ताक़त पर भारी है लिहाज़ा जितनी बडी धमकी ये दे सकते हैं, उसके जवाब में बस ख़ुदा की पनाह मांग लो और इसके बाद बिल्कुल बेख़ौफ होकर अपने काम में लग जाओ। अल्लाह की मदद जरूर आएगी।

(3) इन दोनों के अलावा लोगों का एक तीसरा गिरोह भी मुआशरे में मौजूद था। वह उन लोगों का गिरोह था जो अपने दिलों में जान चुके थे कि हक़ नबी (स.) के साथ ही है, और कुफ़्फ़ार सरासर ज़्यादती कर रहे हैं। मगर यह जान लेने के बावजूद वह ख़ामोशी से या ग़ैर जानिबदार रहते हुए तमाशा देख रहे थे। अल्लाह ने इस मौक़े पर उनके ज़मीर को झिंझोडा है, और उन्हें बताया है कि जब हक के दुश्मन अलानिया तुम्हारी आँखो के सामने इतना बडा जालिमाना इकदाम करने पर तुल गये हैं। तो हैफ है तुम पर कि तुम अब भी घर बैठे तमाशा देख रहे हो। अगर तुम्हारा जमीर बिल्कुल मुर्दा नहीं हो गया है तो उठ कर तुम वही फर्ज अंजाम दो, जो फिरऔन के भरे दरबार में उसके अपने दरबारियों में से एक सच्चे आदमी ने अंजाम दिया था। जब फिरऔन ने हजरत मूसा (अ.) को कत्ल करना चाहा था। तो जो मस्लहतें तुम्हें जबान खोलने से रोक रही हैं, वही मस्लहतों उसका रास्ता भी रोक रहीं थीं। मगर उसने हिम्मत करके कहा, मैं तो अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूं, और सारी मस्लहतों को ठुकराकर हक की बात कह दी कि ''क्या तुम एक शख़्स को इस बिना पर कत्ल कर दोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है।'' और फिरऔन उसका कुछ न बिगाड सका।

सूरह ''हा-मीम-सजदा'' में फ़रमाया गया। ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम ने अहले अरब पर यह अज़ीम अहसान किया है कि क़ुरआन को अरबी ज़बान में उनके लिये नज़ीर व बशीर बना कर उतारा है। इस अहसान का हक़ यह था कि लोग उसकी क़द्र करते लेकिन ये तकब्बुर के साथ इस नेमत को ठुकरा रहे हैं। और ईमान लेने के बजाए उस अज़ाब का मुतालबा कर रहें है जिससे उनको डराया जा रहा है। जवाब में आप उनको बता दीजिए कि मुझे जिस तौहीद की ''वही'' हुई थी वह मैने तुमको पहुंचा दी है। रहा अज़ाब का मामला तो यह चीज़ मेरे इख़्तियार में नहीं है। मैं एक बशर हूँ, ख़ुदा नहीं हूँ।

इस कायनात में जो कुदरत व हिकमत, जो रहमत, रूबूबियत और जो नजम व एहतिमाम तुम्हें नजर आ रहें वे गवाह हैं कि यह सब कुछ किसी खिलंदडे का खेल नहीं है न यह मुखालिफ देवताओं के खेल या उनकी आपस की जंग का मैदान है। बल्कि यह एक जबर्रदस्त कुदरत और इल्म रखने वाले वाहिद ख़ुदा की मंसूबाबंदी से वजूदमें आया हुआ कारखाना हैं। इसलिए जो लोग अपने गढ़े हुए ख़ुदाओं और सिफ़ारिशियों के भरोसे पर ख़ुदा और आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं वे अपनी शामत के मुंतज़िर रहें। क़यामत के दिन हर एक के कान, आँख और हाथ पांव ख़ुद उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे। और उन्हें मालूम हा जाएगा कि उनकी गुमराही का एक सबब यह था कि वे समझते थे कि उनके बहुत से आमाल की ख़बर ख़ुदा को भी नहीं होती।

जो लोग तमाम मुखालिफतों और साजिशों के बरखिलाफ तौहीद पर जमे रहेंगे, कयामत के दिन उनके पास फरिश्ते अल्लाह तआला की अबदी रहमतों और नेमतों की खुशखबरी लेकर आएंगे और कहेगे कि बस अब न कोई अंदेशा है न गम। जन्नत में तुम्हारे लिये हर वह चीज मौजूद है, जिसको तुम्हारा दिल चाहे और जो तुम तलब करो।

मुसलमानों के सब्र व इस्तिक़लाल को ख़िराजे-तहसीन पेश किया कि जब हर तरफ़ से हिम्मत-शिकन हालात से साब्क़ा हो, उस वक़्त एक शख़्स डंके की चोट पर कहे कि मैं मुसलमानों में से हूं और दूसरों को भी वह अल्लाह की तरफ़ बुलाए; और नेक अमल करे, उससे बढ़कर और अच्छी बात किसकी हो सकती है?

नबी-ए-करीम (स.) के सामने उस वक़्त सब से सख़्त सवाल यह था कि जब इस दावत की राह में मुश्किलात की ऐसी सख़्त चट्टानें हाइल हैं तो रास्ता कैसे निकाला जाएगा। इस सवाल का हल यह बताया गया है कि ये नुमाइशी चट्टानें ख्वाह कितनी ही सख्त नजर आती हों, मगर अखलाके-हसना का हथियार वह हथियार है जो इन्हें तोडकर और पिघला कर रख देगा। सब्र के साथ काम लीजिए और जब कभी शैतान इश्तिआल दिलाए

तो इसमें न आईये बल्कि खुदा से पनाह मांगिए और सब्र और हिकमत से काम लीजिए।

हकीकत यह है कि कायनात की हर शै अल्लाह के आगे झुकी हुयी है अल्लाह की निशानियों में से है यह रात दिन और सूरज चांद। तुम सजदह न करो। सूरज और चांद को बल्कि उस ज़ात को सजदह करो जिसने तुम्हें बनाया। अगर तुम वाकई उसी की इबादत करने वाले हो अगर यह लोग तकब्बुर में अपनी बात पर अड़े रहे तो अल्लाह को इसकी परवाह नहीं। क्योकि मुकर्रिब फरिश्ते शबोरोज़ अल्लाह की तस्बीह बयान करते हैं और वह कभी नहीं थकते।

आखिर में अज़ाब के लिए शोर मचाने वालों के हाल पर इज़्हारे-अफ़सोस किया गया है कि उनकी बदबख़्ती का यह हाल है कि अल्लाह ने अपने फज्ल से उनको तौबा व इस्लाह की जो मौहलत दी है तो ये समझते हैं कि यह महज धमकी है। हालांकि अगर अभी जरा पकड में आ जाए तो उससे निजात के लिए लंबी-लंबी दुआएं मांगते नहीं थकेंगे।

- ❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।
- ❖ अल्लाह तआला हम सबको कुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक अता फ़रमाये।
- ❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

"आमीन"

'ख़ैरूकुम मन तअल्लमल कुरआन व अल्लमहू' (अल-हदीस)

तुम में से बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और सिखलाए (हदीस)

आज की तराहवी के चन्द अहम नुकात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इक्कीसवीं तरावीह

आज पच्चीसवें पारे "व इलेहि युरद्दु" की तिलावत की गई है।

सूरह "हा-मीम-सज्दा" का जो हिस्सा आज पढ़ा गया है उसके नुकात भी कल के खुलासे में पेश हो चुके हैं। आज सूरह "अश-शूरा" के नुकात पेश हैं। इस सूरत का नाम "अश-शूरा" होने का यह मतलब नहीं कि इसमें इस्लाम का शूराई निज़ाम बयान किया गया है बल्कि और सूरतों की तरह इसका मतलब सिर्फ़ यह है कि वह सूरह जिसमें लफ़्ज़ शूरा आया है। चुनाँचे इस सूरत में अहले-ईमान की यह सिफ़ात बयान की गई है कि **अमरहुम शूरा बैनहुम** यानी वे आपस में मश्विरे से काम करते हैं।

इब्तिदा इस तरह की गई है कि तुम लोग हमारे नबी की पेश की हुई बातों पर ताज्जुब का इज़्हार करते हो। यह कोई नई बात तो नहीं कि किसी आदमी पर अल्लाह की "वही" आए। ऐसी ही "वही" और ज़िदगी बसर करने की हिदायत इनसे पहले बहुत से अम्बिया को दी जा चुकी है। इस तरह यह भी ताज्जुब की बात नहीं कि आसमानों और ज़मीन के मालिक ही को माबूद माना जाए। बल्कि ताज्जुब की बात तो यह है उसके बंदे होकर उसकी खुदाई में रहते हुए लोग किसी दूसरे को खुदा और हाकिम तसलीम करें। तौहीद पर बिगड़ते हो। हालाँकि मालिके-कायनात और हकीकी राज़िक़ के साथ जो शिर्क तुम कर रहे हो यह इतना बड़ा जुर्म है कि आसमान इस पर फट पड़े तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। तुम्हारी इस दीदा-दिलेरी पर फ़रिश्ते भी हैरान हैं और हर वक़्त डर रहे हैं कि नामालूम कब तुम पर खुदा का अज़ाब टूट पड़े।

इसके बाद बताया कि नबी (स0) का काम सिर्फ गाफिल लोगों को खबरदार करना और भटके हुए लोगों को रास्ता दिखाना है। उसकी बात न मानने वालों का मुहासिबा करना और उन्हें अजाब देना या न देना यह काम अल्लाह का है। उसका काम इस तरह के दावे करना नहीं है, जिस तरह के दावे तुम्हारे बनावटी मजहबी पेशवा किया करते हैं कि जो उनकी बात न मानेगा, वे उसे भस्म कर देंगे। याद रखो नबी (स0) तुम्हारी खैर ख्वाही के लिए आये हैं और इस लिए तुम्हें बार-बार खबरदार कर रहे हैं, और तुम्हारी सारी बातों को बर्दाश्त कर रहे हैं।

फिर इस मसले की हकीकत समझाई कि अल्लाह ने सारे इंसानों को पैदाइशी तौर पर सीधी राह पर क्यों नहीं लगा दिया और उनमें यह इख़्तिलाफ़ क्यों गवारा कर रहा है। इसका सबब यह बताया गया कि इसी इख़्तिलाफ़ के सबब तो इस बात का इम्कान पैदा हुआ है कि इंसान अल्लाह की उस ख़ास रहमत को पा सके जो दूसरी मख़्लूक़ के हिस्से में नहीं आई। जो इंसान जानवरों की तरह जिबल्लत से मजबूर होकर नहीं बल्कि अपने शऊर और इख़्तयार से अल्लाह को अपना वली और कारसाज़ तस्लीम करे **अल्लाह उसे हुस्ने-अम्ल की तौफीक देकर रहमते-खास में दाखिल कर लेता है** और जो इंसान अपने इख़्तियार को ग़लत इस्तेमाल करके उनको वली और मददगार बनाता है, जो हकीकत में वली और मददगार नहीं हैं, और न हो सकते हैं, तो वह अल्लाह की रहमत से महरूम हो जाते हैं।

इसके बाद बताया गया है, जो दीन नबी (स0) पेश कर रहे हैं वह हकीकत में है क्या? यह वही दीन है जो पहले भी हज़रत नूह (अ0), इब्राहीम (अ0), मूसा (अ0), ईसा (अ0) लेकर आ चुके हैं। **गोया अम्बिया की पूरी तारीख में खुदा की तरफ से यही एक दीन आता रहा है और फरमाया कि उन सबको यही हुक्म दिया गया था कि "अल्लाह के दीन को कायम करना और कायम रखना और इस मामले में मुतफर्रिक न हो जाना"** अल्लाह का दीन कौन सा है? फ़रमाया! "अल्लाह के नज़दीक सच्चा दीन इस्लाम है" यानी हज़रत नूह (अ0) से लेकर हज़रत मोहम्मद (स0) तक एक ही दीन आया है। अगर फ़र्क़ है तो हालात और ज़मानों के लिहाज़ से बाज़

जुज़ियात में फ़र्क़ है। इसकी मिसाल ऐसी है जैसे बच्चे के बालिग़ होने तक क़द और जसामत में फ़र्क होता चला जाता है। इस फ़र्क़ के लिहाज़ से कपड़े छोटे-बड़े हो जाते हैं। मगर बुनियादी ढांचा एक ही होता है।

साथ ही बताया गया तुम लोगों को एहसास नहीं है कि अल्लाह के दीन को छोडकर गैर अल्लाह के बनाए हुए दीन और कानून को इख्तियार करना अल्लाह के मुकाबले में कितनी बडी ढिटाई है। तुम इसे मामूली बात समझते हो। मगर यह अल्लाह की गैरत को ललकारने वाली बात है। और इसकी सज़ा भी उनको भुगतनी पडेगी जो ऐसा करें।

रिज़्क़ और मआश के ताल्लुक़ से अल्लाह तआला ने बताया कि अल्लाह बन्दों पर हद दर्जे मेहरबान है जिसे जो कुछ चाहता है देता है। सब को यकसां सब चीज़े नहीं देता किसी को कोई चीज़ दी है तो किसी को कुछ और किसी को कम किसी को ज़्यादा अगर वह ज़मीन में रोज़ी फैला दे और सब बन्दों को खुला रिज़्क दे दें तो वह ज़मीन में सरकशी और तूफ़ान बरपा कर देगें। मगर वह एक हिसाब से जितना चाहता है नाज़िल करता है। यक़ीनन वह अपने बन्दों से बाख़बर है और सब कुछ देख रहा है। अलबत्ता जो सिर्फ़ दुनिया चाहता है अल्लाह उसे दुनिया दे देता है मगर आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं रहता और जो आख़िरत चाहता है अल्लाह उसे आख़िरत देता है और मज़ीद अपनी इनायत निछावर करता है अब बन्दे का काम है कि वह अपनी भलाई के लियें किस चीज़ का इन्तेख़ाब करता है।

तुम्हें जो मुसीबतें पंहुचती हैं तुम्हारे करतूतों की वजह से है। बहुत सारी कोताहियों को अल्लाह यूँ दरगुज़र फ़रमा देता है। तुम ज़मीन में ख़ुदा को आजिज़ नहीं कर सकते। अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारा कोई मददगार नहीं तुम इंसानों को जो कुछ दिया गया है वह ज़्यादा बेहतर और पायेदार है वह उन लोगों के लियें जो ख़ुदा को मानते हैं उस पर भरोसा करते हैं कबीरह गुनाहों से बचते हैं, बेहयाई के कामों से परहेज़ करते हैं, गुस्सा आजाये तो दरगुज़र करते हैं। अपने रब का हुक्म मानते हैं, नमाज़ पढ़ते है, अपने मआमलात आपस के मशवरे से चलाते हैं। हम ने जो दिया है उसमें से राहे ख़ुदा में ख़र्च करते हैं कोई ज़्यादती करे तो मुक़ाबला करते हैं। बुराई का बदला बस उतनी ही बुराई है (यह उसूली बात है मगर) जो दरगुज़र करदे और इस्लाह करे उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है (यह दूसरा ज़ाबतहऐ अख़लाक़ है) अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता जो लोग ज़ुल्म होने के बाद बदला लें उनको मलामत नहीं की जा सकती। मलामत के लायक़ वह है जो दूसरों पर ज़ुल्म करते हैं। ज़मीन में नाहक़ ज़्यादतियां करते हैं उनके लियें दर्दनाक अज़ाब हैं जो शख़्स सब्र से काम ले और दरगुज़र करे तो यह बड़ी हिम्मत का काम है।

जो कुछ आसमान और ज़मीनों में है सब ख़ुदा का है जिसे चाहता है लड़कियां देता है जिसे चाहता है लड़के देता है जिसे चाहता है लड़कियां लड़के दोनों देता है, जिसे चाहता है बांझ कर देता है। वह सब कुछ जानता है और हर चीज़ पर क़ादिर है।

सूरह अज़्ज़ुख़रूफ़ का मर्कज़ी मज़मून भी तौहीद और उसका हक़ होना है। क़यामत का ज़िक्र करते हुए मुश्रिकीन के इस अक़ीदे की भी तर्दीद की है कि वे मलाइका को उलूहियत में शरीक समझते हैं। ओर उनकी शफ़क़त का एतिमाद रखते हैं। काफ़िरों के कुफ़्र का अस्ल सबब यह क़रार दिया कि इनकी दुनियावी कामयाबियों ने उन्हें धोखे में मुब्तिला कर रखा है। और वे यह समझते हैं कि आख़िरत में भी वही कामियाब होंगे। यह शैतान का धोखा है। अस्ल कामियाबी आख़िरत की कामियाबी है और इसका मआयार दुनियां में माल व दौलत का मालिक होना या इक्तिदार व क़ुव्वत का मिल जाना नहीं है। बल्कि इसका मे यार अल्लाह के रसूल (स0) के बताए हुए रास्ते पर चलना है।

फिर नबी (स) को काफ़िरो की तरफ़ से क़त्ल करने की साज़िशों पर तम्बीह करते हुए फ़रमाया:- उन्होंने समझ रखा है कि हम उनकी राज़ की बातें ओर खुसुर-पुसुर सुनते नहीं हैं। हम सब कुछ सुन रहे हैं और हमारे फ़रिश्ते उनके पास बैठे लिख रहे हैं। उन्हें उनके हाल पर छोड़ दीजिए और कह दीजिए, सलाम है तुम्हें, अनक़रीब मालूम हो जाएगा कि अल्लाह क्या करने वाला है?

जो शख़्स ख़ुदा के पैग़ाम से ग़फ़लत बरत्ता है हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं। वह उसका साथी बन जाता है। यह शयातीन ऐसे लोगों को सीधी राह से भटकाते हैं और अपनी जगह यह समझते हैं कि हम सीधी राह जा रहे हैं। आख़िर कार जब यह शख़्स हमारे यहां पहुचेगा तो अपने शैतान से कहेगा काश मेरे तेरे दरमियान मशरिक़ व मग़रिब की दूरी होती। तू तो बदतरीन साथी निकला। उस वक़्त उनसे कहा जायेगा तुम्हारे पछताने से क्या फ़ायदा

दुनिया में तुमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया आज तुम और शयातीन अज़ाब साथ साथ भुगतोगे।

सूरह अद-दुख़ान का पस-मंज़र यह है कि जब काफ़िरों की मुख़ालिफ़त सख़्त होती चली गयी तो नबी (स0) ने दुआ की ख़ुदाया यूसुफ़ (अ0) के क़हत जैसे एक क़हत से मेरी मदद फ़रमा। हुज़ूर (स0) का ख़्याल था कि जब उन पर मुसीबत पड़ेगी तो उनके दिल नर्म हो जायेंगे और ये तौबा कर लेंगे। अल्लाह तआला ने आपकी दुआ क़ुबूल फ़रमायी और ऐसा क़हत पड़ा कि लोग बिलबिला उठे। बाज़ सरदाराने-क़ुरैश ख़ास तौर पर अबू सुफ़ियारन हुज़ूर (स0) के पास आए और दरख़्वास्त की कि अपनी क़ौम को इस बला से निजात दिलाने के लिए अल्लाह से दुआ करें। इस मौक़े पर अल्लाह ने यह सूरह नाज़िल फ़रमाई। इसमें जो अहम बातें फ़रमायी गयीं हैं, वह यह हैं:-

अव्वल यह कि तुम इस क़ुरआन को मोहम्मद (स0) की तस्नीफ़ समझते हो यह ख़ुद गवाही दे रही है कि यह किसी इंसान की नहीं बल्कि ख़ुदावंदे आलम की किताब है। **दूसरे यह कि तुम इस किताब को अपने लियें एक मुसीबत समझते हो कि इसमें तो बस यह हराम है, यह शिर्क है, यह बिदअत है, यही लिखा हुआ है। हालांकि वह घडी इन्तिहाई मुबारक घडी थी जब अल्लाह ने सरासर अपनी रहमत की बिना पर तुम्हारे यहां रसूल भेजने और उस पर अपनी किताब नाजिल करने का फैसला फरमाया।**

तीसरे यह कि तुम अपनी नादानी से यह समझते हो कि इस रसूल (स0) और इस किताब से लड़कर तुम जीत जाओगे हालांकि इस रसूल (स0) की बुअसत और इस किताब की आमद उस ख़ास घड़ी में हुई है जब अल्लाह तआला क़िस्मतों के फ़ैसले फ़रमाता है और अल्लाह के फ़ैसले कमज़ोर नहीं होते, कि जिसका जी चाहे उठकर बदल डाले। न वह किसी जिहालत और नादानी पर मुब्नी होते हैं, कि उनमें ग़ल्ती रह जाए। वे तो उस फ़रमां रवा-ए-कायनात की पुख़्ता और अटल फ़ैसले होतें हैं जो समीअ, अलीम और हकीम है।

चौथे यह कि अल्लाह की रूबूबियत और रहमत का सिर्फ यही तकाजा नहीं है कि वह तुम्हारा पेट भरा करे बल्कि यह भी है वह तुम्हारी रहनुमाई का इंतिजाम भी करे। चुनाँचे इसीलिए उसने अपने रसूल भेजे हैं और किताबें उतारी हैं।

आख़िर में अल्लाह की अदालत का ज़िक्र करते हुए बताया गया कि जो लोग वहां मुजरिम क़रार पाएंगे उनका अंजाम क्या होगा? और जो वहां कामियाब करार पाऐंगे उन्हें क्या इनाम मिलेगा? इसके बाद सूरह ''अलजासिया'' है। इसमें बताया गया है कि तास्सुब से पाक और ज़रा सी अक़्ल रखने वाला भी अपने चारों तरफ़ फैली हुई निशानियों को देख लेगा तो पुकार उठेगा कि **बग़ैर ख़ुदा के यह सारा अजीमुश्शन निज़ाम वजूद में नहीं आ सकता और ख़ुदा भी एक।** लेकिन जो हठ धर्म किसी गर्ज़ से क़सम खा कर बैठ गया हो वह मानकर नहीं देगा, तो उसे कोई निशानी और मोजिज़ा भी यक़ीन दिलाने के लिए काफ़ी नहीं हो सकता।

फिर फरमाया कि यह ख़ुदा से बेख़ौफ लोग आप के साथ जो बेहुदगियां कर रहे हैं, आप उन पर सब्र कीजिए और अपने काम में लगे रहिये। ख़ुदा उनसे ख़ुद निपट लेगा। और आपको अज्रे-अजीम अता फरमाएगा। आख़िरत के बारे में दलाइल देते हुए फ़रमाया :-

जिस तरह तुम आप से आप ज़िंदा नहीं हो गये बल्कि हमारे ज़िंदा करने से ज़िंदा हुए। इसी तरह तुम आप से आप नहीं मर जाते, बल्कि हमारे मौत देने से मरते हो। और एक वक़्त यक़ीनन ऐसा आना है जब तुम सब बयक-वक़्त जमा किये जाओगे। इस बात को तुम अपनी नादानी और जिहालत से आज नहीं मानते तो न मानो, जब वह वक़्त आ जाएगा, तुम ख़ुद अपनी आंखों से देख लोगे कि तुम अपने ख़ुदा के हुज़ूर पेश हो और तुम्हारा पूरा आमालनामा बग़ैर किसी कमी-बेशी के तैयार है और तुम्हारे एक-एक करतूत की गवाही दे रहा है। **उस वक्त तुमको मालूम हो जाएगा कि अकीदा-ए-आख़िरत का यह इंकार और इसका यह मजाक जो आज तुम उडा रहे हो, तुम्हें किस कदर महंगा पडेगा।**

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ **अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।**

❖ **अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।**

''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



बाईसवीं तरावीह

आज छब्बीसवें पारे ''हा-मीम'' की तिलावत की गई। सबसे पहले सूरह ''अहक़ाफ़'' है जो हिजरत से तीन साल पहले उस वक़्त नाज़िल की गई जब कि हुज़ूर (स.) ताइफ़ से वापस तशरीफ़ ला रहे थे। यह नबुव्वत का दसवां या ग्यारहवां साल था इसे आम्मुल-हुज़्न यानी रंज-ओ-ग़म का साल कहते हैं क्योंकि इसी एक साल में हुज़ूर (स.) के चचा हज़रत अबू तालिब और हज़रत ख़दीजतुल-कुबरा (रजि0) दोनों का इंतक़ाल हो गया। जिसके बाद कुफ़्फ़ारे-कुरैश बहुत दिलैर हो गये और आपको तंग करने लगे। यहां तक कि घर से निकलना दूभर कर दिया। आख़िरकार, आप (स.) मक्का से ताइफ़ तशरीफ़ ले गये कि शायद वहाँ के तीन बड़े सरदारों में से कोई ईमान ले आए। मगर उन्होंने भी आपकी कोई बात नहीं मानी बल्कि आपके पीछे गुण्डे लगा दिये और वे रास्ते के दोनों तरफ़ दूर तक आप (स0) पर आवाज़े कसते, गालियां देते और पत्थर मारते चले गये। यहां तक कि आप ज़ख़्मों से चूर हो गये और आपकी जूतियां ख़ून से भर गयीं। इस हालत में आप ताइफ़ के बाहर एक बाग़ की दीवार से टेक लगा कर बैठ गये और अपने रब से फ़रियाद करने लगे:-

'' ऐ अरहम-उर-राहिमीन! तू सारे ही कमजोरों का रब है और मेरा भी, तू मुझे किसके हवाले कर रहा है? इसके जवाब में हजरत जिबरील (अलै0) पहाडों के फरिश्ते को लेकर आए। उसने अर्ज किया ''आप हुक्म दें, दोनों तरफ के पहाड़ उन पर उलट दूं'' आप (स0) ने फरमाया ''नहीं! बल्कि मैं उम्मीद रखता हूं कि इनकी नस्ल से आने वाले, अल्लाह-वहदहू-लाशरीक की बंदगी कुबूल कर लेंगे।'' इसके बाद आप चंद रोज़ तक नहला के मुक़ाम पर ठहरे रहे। आप परेशान थे कि मक्का कैसे वापस जाएं? यह ख़बर सुनकर तो वहां के लोग और शेर हो जाऐंगे। इन्हीं दिनों में एक रात आप नमाज़ में क़ुरआन-ए-मजीद की तिलावत कर रहे थे कि जिनों का एक गिरोह उधर से गुज़र रहा था। उन्होंने क़ुरआन सुना, ईमान लाए और वापस जाकर अपनी कौम में इस्लाम की तब्लीग़ शुरू कर दी। अल्लाह तआला ने नबी (स.) को इस सूरत के ज़रिये यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि इंसान चाहे आपकी दावत से भाग रहे हों, मगर बहुत से जिन इसके गरवीदा हो गये हैं और वे उसे अपनी जिन्स में फैला रहे हैं। साथ ही कुफ़्फ़ार को उनकी गुमराहियों के नतीजे से आगाह किया और फ़रमाया कभी सोचा कि अगर क़ुरआन अल्लाह ही का कलाम है तो इसके इंकार पर तुम्हारा क्या अंजाम होगा? फिर यह वाज़ेह किया कि मां-बाप के हुकूक की अदायगी का शऊर इंसान को खुदा के हुकूक के शऊर की तरफ और मादर-पिदर आजादी गुमराही की तरफ ले जाते हैं। चुनांचे फरमाया ...... हमने इंसान को हिदायत की कि वह अपने वालिदैन के साथ नेक सुलूक करे। उसकी मां ने मशक़्क़त उठा कर उसे पेट में रखा और मशक़्क़त उठाकर उसको जना और हम्ल और दूध छुड़ाने में तीस महीने लग गये, यहां तक वह जवानी तक पहुंच गया। और अब अगर वह उन नेमतों का शुक्रिया अदा करता है जो अल्लाह ने उसको और उसके वालदैन को अता कीं और ऐसे नेक अमल करता है जिससे खुदा राज़ी हो, तो इस तरह के लोगों से हम उनके बहतरीन आमाल को कुबूल करते हैं और उनकी लग़ज़िशों से दरगुज़र कर जाते हैं। ये जन्नती लोगों में शामिल होंगे और जो नाफ़रमान बन कर अपने वालिदैन से झगड़ा करते हैं खुसूसन ''इस बात पर कि वे उन्हें खुदा की इताअत पर आमादा करें, वे लोग हैं जिस पर अज़ाब का फ़ैसला चस्पां हो चुका है। और फिर जब ये नाफ़रमान आग के सामने खड़े किए जाएंगे, तो उनसे कहा जाएगा

''तुम अपने हिस्से की नेमतें अपनी दुनियाई ज़िंदगी में ख़त्म कर चुके और तुमने उनके मज़े उड़ा लिये। अब जो तकब्बुर तुम ज़मीन पर बग़ैर किसी हक़ के करते रहे, जो नाफ़रमानियां तुमने की, उनके बदले में आज तुमको ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा''।

पस ऐ नबी (स0)! सब्र कीजिए जिस तरह उलुल-अज़्म रसूलों ने सब्र किया है। और इनके मामले में जल्दी न कीजिए। जिस रोज़ ये लोग उस चीज़ को देखेंगे, जिसका इन्हें ख़ौफ़ दिलाया जा हा है, तो इन्हें यूं मालूम होगा कि जैसे दुनिया में वे एक घड़ी भर से ज़्यादा नहीं रहे थे। बात पहुंचा दी गयी। अब क्या नाफ़रान लोगों के सिवा ओर कोई हलाक होगा?

सूरह मोहम्मद में अल्लाह ने बग़ैर किसी तम्हीद के ऐलान कर दिया कि जिन लोगों ने कुफ़्र का रवैया इख़्तियार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, अल्लाह ने उनके तमाम आमाल जाया कर दिये और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किये, उसने उनसे बुराईयां दूर कर दीं और उनका हाल संवार दिया फिर फरमाया जब इन काफिरों से तुम्हारे मुकाबले की नौबत आए तो इनकी गर्दनें उडा दो यहां तक कि जब उनको अच्छी तरह चूर-चूर कर दो तो उनको मजबूती से बांध लो। फिर या तो उनको अहसान करके छोडना है या फिदिया लेकर। यहां तक कि जंग बिल्कुल खत्म हो जाये। अल्लाह चाहता तो खुद इन्तिकाम ले लेता लेकिन वह चाहता है कि एक को दूसरे से आजमाए। ऐ ईमान वालों! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे यानी उसके दीन की, तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे कदम अच्छी तरह जमा देगा। सूरह खत्म करते हुए हिदायत दी कि अल्लाह और रसूल (स.) के हर हुक्म की इताअत करो। अगर इसमें कमजोरी दिखाई तो तुम्हारे आमाल जाया हो जाएंगे। अज़्म व हौसले के साथ आगे बढो, तो बाजी तुम्हारी है। अल्लाह तुम्हारे साथ है इसलिए दुनिया की मोहब्बत में फंस कर अल्लाह के रास्ते में खर्च करने से जी न चुराओ। याद रखो जो अल्लाह से कंजूसी करता है वह खुद अपनी जान से कंजूसी करता है। खुदा किसी के माल का मोहताज नहीं है। वह बिल्कुल बेन्याज है, तुम अल्लाह के मोहताज हो। यह तुम्हारा इम्तिहान हो रहा है। अगर तुम इस इम्तिहान में फेल हो गए तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरों को ले आएगा जो तुम्हारी तरह निकम्मे नहीं होंगे।

सूरह फ़तह भी मदनी है। पिछली सूरत में अज़्म व हौसले से काम लेने पर सरबुलन्दी और दुश्मनों की ज़िल्लत का वायदा किया था। इस सूरत में उस वायदे को पूरा करने की वाक़्याती शहादत पेश की गयी है। सूरत के शुरू में सुलह हुदैबिया का ज़िक्र किया गया है। जो बज़ाहिर तो दबकर की गयी थी मगर हक़ीक़त में फ़तह मक्का की तम्हीद थी। इस सूरत में फ़तह और ग़ल्बे की उन पेशगोइयों और बशारतों का भी हवाला दिया गया है जो इस उम्मत के लिए अल्लाह ने तौरात और इंजील में बयान की हैं ताकि अहले-ईमान और अहले-कुफ़्र दोनों पर अच्छी तरह वाज़ेह हो जाए कि जो कुछ हुआ, जो कुछ हो रहा है, व जो कुछ होने वाला है, सब कुछ अल्लाह तआला की स्कीम में पहले से शामिल है और यह स्कीम पूरी होकर रहेगी। किसी की ताक़त नहीं है कि इसे रोक सके। आयत 18 में है कि अल्लाह उन मोमिनीन (सहाबह) से खुश हो गया जिन्होंने दरख़्त के नीचे आंहुज़ूर (स0) से बैत की थी। उनके दिलों का हाल अल्लाह को मालूम था। इसलिये अल्लाह ने उन पर सकीनत नाज़िल फ़रमायी और इनआम में उनको क़रीबी फ़तेह बख़्शी और बहुत माल-ग़नीमत उन्हें अता कर दिया। जिसे वह अनक़रीब हासिल कर लेंगे। अल्लाह ज़बरदस्त और हकीम है। बैत-रिज़वान में शरीक होने वाले जॉनिसार सहाबह क़ी पज़ीराई अल्लाह तआला ने रहती दुनियां तक तमाम मुसलमानों को बताई नीज़ इशारह यह है कि जो लोग अल्लाह की राह में जान का नज़रानह पेश करते हैं वह दुनिया व आख़िरत की कामयाबी से हमकिनार होते हैं।

चुनांचे सूरत के आख़िरी हिस्से में ऐलान किया जाता है कि वही है **जिसने भेजा अपने रसूल (स0) को और जो उनके साथ हैं वे कुफ्फार पर सख़्त और आपस में रहमदिल हैं। उसके फज़्ल और ख़ुशनूदी की तलब में रूकूअ और सजदे में सरगर्म।** इनकी यह मिसाल तौरात में है और इंजील में इनकी मिसाल यूं है कि जैसे खेती हो, जिसने अपनी सूई निकाली, फिर उसको सहारा दिया, फिर वह सख़्त हो गई और फिर वह तने पर खड़ी हो गयी। अल्लाह ने इस मिसाल से वाज़ेह कर दिया कि **गल्बा तो जरूर होगा मगर आहिस्ता आहिस्ता जाहिर होगा। साथ ही तम्बीह की कि यह वादा इनमें से उन लोगों के साथ है जो ईमान और अमल दोनों में सच्चे और पक्के होंगे।**

सूरह ''अल-हुजरात'' दरअस्ल मुसलमानों की बयानकरदा सिफ़त ''आपस में रहमदिल हैं'' की तफ़सीर है। इसमें बताया गया है कि **मोहम्मद (स.) के किसी हुक्म पर कोई मुसलमान अपनी राय को मुकद्दम करने की कोशिश न करे। मुसलमानों का मामला आपस में उख़ुवत यानी भाईचारे पर होना चाहिए न कि पार्टी और गिरोहबंदी की बुनियाद पर। किसी को अपने से कमतर समझना, बुरे नाम से पुकारना, और गीबत करना, दिलों में नफरत पैदा करने का सबब हैं। इनसे बचो। किसी के ऐबों की टोह में न लगो। अल्लाह के यहां इज्जत और एहतिराम का मअयार सिर्फ तकवा है। इस्लाम कुबूल करके अल्लाह पर अहसान न जताओ। यह तो अल्लाह का अहसान है कि उसने तुम्हें इस्लाम और नेकी की तौफीक बख़्शी। अगर उसका हक अदा करोगे तो भरपूर सिला पाओगे।**

इस सूरत में बहुत से मआशरती एहकामात दिये हैं (1) ऐ ईमान वालों अल्लाह व रसूल के आगे पेशक़दमी न करो और अल्लाह से डरो। अल्लाह सुनने और जानने वाला है। (2) मोमिनों नबी स0 की आवाज़ पर अपनी आवाज़ बुलन्द न करो जैसा कि तुम आपस में बातें करते हो। (3) नबी (स0) की शान में गुस्ताख़ी सारे आमाल के अकारत होने का सबब है। (4) जो लोग नबी (स0) के सामने अपनी आवाज़ पस्त रखते हैं वह परहेज़गार हैं और उनके लिये मग़फ़िरत और अजरे अज़ीम है। (5) जो लोग नबी (स0) को हुजरों (कमरों) के पीछे से पुकारते हैं उनमें अकसर नादान हैं। किसी को भी कमरे के पीछे से पुकारते हैं उनमें अकसर नादान हैं। किसी को भी कमरे के पीछे से नहीं बल्कि दाख़िली दरवाज़े से पुकारना चाहिये। (6) पुकारने के बाद आने तक थोड़ा इन्तिज़ार करना चाहिये। (7) मोमिनों जब कोई फ़ासिक़ कोई ख़बर ले आये तो तहक़ीक़ कर लिया करो कहीं ऐसा न हो तुम किसी गिरोह को नादानिस्तह नुक़सान पहुंचा बैठो फिर अपने किये पर परेशान हो। यह आयत वलीद बिन उक़बह के बारे में नाज़िल हुयी जिन्हें आहुज़ूर (स0) ने बनू मुस्तलिक़ से ज़कात वसूल करने के लिये भेजा था। किसी वजह से वह डर कर वापिस आ गये और यह ख़बर दी कि उन्होंने ज़कात देने से इन्कार कर दिया। मेरे क़त्ल के दरपे रहे। आप (स0) यह ख़बर सुनकर नाराज़ हुए और उन पर चढ़ाई की तैयारी की। इतने में क़बीले के सरदार हारिस बिन ज़रार आये और बताया कि हमारे पास ज़कात लेने कोई आया ही नहीं। इस नाज़ुक मौके पर ज़रा सी उजलत अज़ीम ग़लती का सबब बन जाती है। (7) मुसलमानों के दर्मियान रसूल (स0) की ज़ात मौजूद है। हर मामले में अपनी बात नबी से नहीं मनवानी चाहिये न ही किसी बात पर इसरार करना चाहिये। (8) मोमिनों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़े तो बकीया मुसलमानों को तमाशा नही देखना चाहिये। उनके दर्मियान सुलह व सफ़ाई में अदल से काम लेना चाहिये कि अल्लाह अद्ल को पसन्द करता है। जानिबदारी को नहीं। (9) मुसलमान एक दूसरे का मज़ाक न उड़ायें हो सकता है वह उनसे बेहतर हों। (10) औरतें भी औरतों का मज़ाक़ न उड़ायें हो सकता है वह उनसे बेहतर हों। (11) किसी मुसलमान भाई को ताना न दिया जाये। अपने भाई को तअनह देना अपने आप को ताना देना है। (12) किसी को बुरे लक़ब से न पुकारा जाये। मुसलमान होने के बाद बुरे अलकाब व नाम रखना बहुत बुरी बात है। (13) बहुत ज़्यादा गुमान करने से परहेज़ करना चाहिये

कि बाज़ गुमान गुनाह होते हैं। (14) एक दूसरे की टोह नहीं रहना चाहिये कि इससे आपस का एतमाद मतस्सिर होता है। (15) पीठ पीछे किसी मुसलमान की बुराई न करना चाहिये। ऐसा करना मरे हुए भाई का गोश्त खाने के बराबर है। (14) तमाम मुसलमानों की असल एक मां बाप हैं। ज़ात बिरादरियों की तक़सीम सिर्फ़ पहचान के लिये है। अल्लाह के नज़दीक सबसे मुकर्रम वह है जो अल्लाह से डरता हो। (17) ईमान लाने के बाद ईमान का एहसान जताना सही नही। जो ईमान लायेगा उसका फ़ायदह उसी को होगा जो अमल करेगा। अल्लाह उसको पूरा पूरा अज्र देगा। अल्लाह ज़मीनों असामान की हर पोशीदह चीज़ का इल्म रखता है जो कुछ तुम करते हो वह सब उसकी निगाह में है।

सूरह ''क़ाफ़'' और उसके बाद ''ज़ारियात'' के दो रूकूअ पढ़े गये। जिनमें सूरह ''क़ाफ़'' ही की बात को आगे बढ़ाया गया है। उनमें क़यामत और हश्र-नश्र को बयान किया गया है क़ुरआन ने जब लोगों को आगाह किया कि मरने के बाद तुम्हें अज़-सरे-नौ जिंदा किया जाएगा और तुम्हें अपने रब के आगे अपने आमाल और अक़वाल का जवाब देना होगा तो क़ुरैश के लीडरों को यह बात बड़ी नागवार गुज़री। और आज भी लोगों को नागवार गुज़रती है। ख़ासतौर पर मुसलमान हुक्मरानों को। फ़ौरन ''कहते हैं इन्हें आसमानों की पड़ी है। ज़मीन पर क्या हो रहा है इसकी ख़बर नहीं कभी कहते हैं ...... इन्हें मरने के बाद की पड़ी है। ज़िंदगी में क्या हो रहा है इससे कोई बहस नहीं। कहा गया इन्हें मालूम होना चाहिए कि जिसे दूर समझ रहे हैं वह बहुत क़रीब है। मौत आते ही पता चल जाएगा। यह हैं वह चीज़ जिससे तू भागता था। उसी तरह कहा ..... जिसे तुम इसलिए नामुमकिन समझ रहे हो कि मरने के बाद सब मिट्टी में गल सड़ जाते हैं, तो मरने के बद ज़मीन इनके आजज़ा को हज़्म कर लेती है। अल्लाह को इन सब अजज़ा का पता है। और लोगों के अक़वाल व आमाल का रिकार्ड महफ़ूज़ रखने के लिए उसके पास एक रजिस्टर भी है। <u>क्या ये नहीं देखते कि जिस कौम पर भी हलाकत आती है उसके लीडर तबाह और अवाम तितर-बितर कर दिये जाते हैं।</u> (और अब तो यह रोज़ हर जगह हो रहा है) याद रखो.... लोगों के नज़दीक हिसाब-किताब के दिन का आना कितना ही दुश्वार हो, मगर ख़ुदा के लिए उतना ही आसान है जितना तुम्हारे लिये कोई लफ़्ज़ मुंह से निकाल देना।

- आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।
- अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।
- अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



तेईसवीं तरावीह

आज की तरावीह में सत्ताईसवें पारे ''काल' फ़मा खुत्बुकुम'' की तिलावत की गयी है।

सूरह ''ज़ारियात'' की बकिया आयात में अपनी शान और शौकत पर मग़रूर पिछली क़ौमों की हलाकत के वाक्यात बयान करने के बाद क़ुरआन का अस्ल पैग़ाम दोहराया गया है। और लोगों को तवज्जह दिलायी है कि उनकी ज़िंदगी का मक़्सद क्या है? खुदा ने उन्हें क्यों पैदा किया है, जबकि बाज़ फ़ल्सफ़ी कहते हैं कि खुदा अपनी क़ुव्वतों का ज़हूर चाहता था कि लोग उसकी तरह-तरह की मख़्लूक़ात देखकर उसकी तारीफ़ करें और वह खुश हो जैसा कि ओछा इंसान चाहा करता है या वह तमाशा देखना चाहता है .... नहीं .... फ़रमाया.: **मैंने जिनों और इंसानों को सिर्फ इसलिए पैदा किया है कि वे सिर्फ मेरी बंदगी करें, इबादत करें। न मैं उनसे यह चाहता हूं कि वे रिज़्क का सामान करें और न यह चाहता हूं कि वे मुझे खिलाएं-पिलाएं। गिला शुबह अल्लाह ही रोजी देने वाला है और कुव्वत सारी की सारी उसके पास है।**

क्या नक्शा खींचा है? यहां बड़े-बड़े शोब्दा-बाज़ व हुनरमंद अपनी कारीगरी इसलिए दिखवाते हैं कि बाद में देखने वालों और तमाशबीनों से पैसे वसूल करें, जिनसे अपनी ज़िंदगी की ज़रूरियात पूरी कर सकें। कमबख्तों ने अल्लाह को भी ऐसा ही समझ रखा है कि हमसे नऊज़ोबिल्लाह इबादत का मुतालबा अपनी ज़रूरत के लिए कर रहा है। नहीं-नहीं वह तो बेन्याज़ है। **वह तो इबादत का मुतालबा खुद तुम्हारी भलाई, तुम्हारी निजात और अपने यहां तुम्हारे दरजात को बुलंद करने के लिए कर रहा है। उसे इन चीजों की क्या हाजत?**

सूरह ''तूर'' में अज़ाब के पहलू को ज़्यादा नुमायां किया गया और वाज़ेह तौर पर धमकी दी गयी है कि बेशक तेरे रब का अज़ाब होकर रहेगा और कोई भी इसको दफ़ा नहीं कर सकेगा। फ़रमाया! कि रात, ज़मीन, आसमान और समुंदर सब बार-बार गवाही दे चुके हैं कि जब अज़ाब आता है तो कोई टालने वाला नहीं होता। इसके बाद मोहम्मद (स0) और अहले-ईमान की हिम्मत-अफ़ज़ाई करते हुए कहा .... बस तुम याद दिहानी करते रहो। अपने रब के फ़ज़्ल से न तुम कोई काहिन हो और न कोई दीवाने। क्या ये कहते हैं कि यह तो बस एक शायर है जिसके लिए हम किसी गर्दिश का इन्तिज़ार कर रहे हैं। जो इससे हमारा पीछा छुड़ा दे। उनसे कह दो तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।

अब इन्हें समझाने का कोई फ़ायदा नहीं। अगर ये अज़ाब को आसमान से उतरता देख लेंगे तब भी यही कहेंगे ''ये तो बादल हैं जो अब्रे-करम बनकर हमारे खेतों पर बरसने वाले हैं। हालाकि वे उन्हें तहस-नहस करने वाले होंगे। जैसा कि ''समूद'' के साथ हुआ। अब इन्हें इनके हाल पर छोड़ दो, यहां तक कि ये अपने उस दिन को पहुंच जाए, जब मार गिराए जाएंगे।

ऐ नबी (स.)! अपने रब का फैसला आने तक सब्र करो। तुम हमारी निगाह में हो। तुम जब उठो तो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करो। और रात में भी सूरज के जवाल और गुरूब के वक्त भी।

सूरह ''नज्म'' में शफ़ाअत के मुताल्लिक़ काफ़िरों के ग़लत तसव्वुर की तरदीद की गयी है। अगर शफ़ाअत का यह तसव्वुर लिया जाए कि जिन हस्तियों से हमारा ताल्लुक़ हो गया है, अब हम चाहे कुछ भी करें, वे खुदा की

पकड़ और अज़ाब से हमें ज़रूर छुड़ा लेंगे। तो ये सारा निज़ाम, किताबें उतारने का, रसूलों के भेजने का और अज़ाब से डरावे देने का, सब बेकार हो जाता है। जब इन माबूदों की ख़ुशामद और ताल्लुक़ से बड़े-बड़े मुजरिम और गुनाहगार बख़्श दिये जाएंगे और उन्हें कोई ख़ौफ़ नहीं होगा। तो फिर यह तक़वा और नेकी के चक्कर में पड़ने वाले किधर से अक़्लमंद ठहरते हैं, कि दुनिया के मज़े और अय्याशियों से महरूम रहें। मुसीबतें और मशक़्क़तें बर्दाश्त करें और फिर भी इन ही के बराबर हो जाऐं, जिन्होंने इस दुनिया में मज़े उड़ाने में कोई कसर नहीं उठा रखी।

आसमानों में बेशुमार फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह की बड़ी मुतबर्रक मख़्लूक़ हैं कि पल भर के लिए उसकी तस्बीह से ग़ाफ़िल नहीं होते। उसकी नाफ़रमानी का शाइबा भी इनमें नहीं है। मगर इनकी सिफ़ारिश भी किसी को ख़ुदा की पकड़ से नहीं बचा सकेगी। **हां अल्लाह जिसको चाहेगा और जिसके लिए चाहेगा उसको सिफ़ारिश की इजाजत देगा। पस शफ़ाअत का सिरा अल्लाह ही के हाथ में हुआ, तुम्हारी मर्ज़ी में नहीं।**

जो लोग आमतौर पर अपनी ख़ैरात और बाज़ नेकियों पर गुरूर करके अपने को बड़ा मुत्तक़ी और पाकीज़ा समझते हैं और इसकी बिना पर हक़ की दावत देने वालों को कुछ ख़ातिर में नहीं लाते। इन्हें मुतनब्बह किया। वह तुमको ख़ूब जानता है जबकि उसने तुमको ज़मीन से पैदा किया, और जबकि तुम अपनी माओं के पेटों में ख़ून की शक्ल में रहे। तो अपने को पाकीज़ा मत ठहराओ वह उन लोगों को भी ख़ूब जानता है जिन्होंने वाक़ई तक़वा इख़्तियार कर रखा है।

जो लोग हज़रत मूसा (अ.), ईसा (अ.) और इब्राहीम (अ.) से नस्ल या नाम के ताल्लुक़ की बिना पर ग़लतफ़हमी में मुब्तिला हैं, उन्हें मुतनब्बह किया कि **उनसे यह ज़ुबानी-कलामी ताल्लुक़ तुम्हारा बोझ हल्का नहीं कर सकता।** इन पैग़म्बरों के ज़रिये भेजे जाने वाले सहीफ़ों में पहले ही लिख दिया गया है कि कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठा सकेगा और इंसान के लिए वही कुछ है जो उसने कमाई की होगी। और यह कि उसकी कमाई अनक़रीब मुलाहिज़ा की जायेगी। फिर उसको पूरा-पूरा बदला दे दिया जायेगा।

सूरह ''अल-क़मर'' में आगाह किया कि आज़ाब की घड़ी सर पर आ गयी है और चांद दो टुकड़े हो गया है। मगर यह फिर भी नहीं मानते। यह कोई सी भी निशानी देखें यही कहेंगे कि यह तो जादू है। हक़ीक़त में यह किसी दलील और सुबूत के पैरो नहीं बल्कि अपनी ख़्वाहिशों के गुलाम हैं। अब यह तुम्हारी पुकार सुनने वाले नहीं। उनका मामला पुकारने वाले पर छोड़ दो, जो उन को जहन्नुम के लिये पुकारेगा और फिर यह अपनी क़ब्रों से इस तरह निकलेंगे, जैसे परागन्दा टिड्डियां बरआमद होती हैं। इस सूरह में बार बार इस बात को दोहराया गया है कि हमने **क़ुरआन को आसान बना दिया है, तो है कोई उससे नसीहत हासिल करने वाला। (बदकिस्मती से हमारे यहां यह बात फैलाई गयी है कि इस पर तो सत्तर पर्दे पड़े हुए हैं, यह हर एक की समझ में कहां से आ सकता है।)**

सूरह के आख़ीर में फ़रमाया हम ने हर चीज़ एक तक़दीर (मिक़दार) के साथ पैदा की है। अलल-टप नहीं। हर चीज़ की एक तक़दीर है। मुक़र्रह वक़्त पर बनती है और ख़त्म होती है। दुनिया का भी यही मआमलह है। एक वक़्त ऐसा आयेगा जब उसे ख़त्म होना है। किसी काम के लिये हमें कोई परेशानी नहीं। हमारा हुक्म बस एक ही हुक्म होता है और पलक झपकाते वह पूरा हो जाता है। तुम जैसे बहुतसों को हम हलाक कर चुके हैं फिर है कोई नसीहत क़ुबूल करने वाला। जो कुछ उन्होंने किया वह सब रिकार्ड में महफ़ूज़ है। हर छोटी बड़ी बात लिखी है। लोग इस ग़लतफ़हमी में न रहें कि उनका किया धरा कहीं ग़ायब हो गया है। नहीं हर शख़्स हर गिरोह और हर क़ौम का पूरा पूरा रिकार्ड महफ़ूज़ है और वक़्त आने पर वह सामने आयेगा।

सूरह ''रहमान'' में इस बात को बारबार दोहराया गया है कि अपने रब के किस किस करिश्में को झुटलाओगे।

और बताया गया है कि अल्लाह तआला कि रहमानियत है **कि उसने तुम्हारी तालीम के लिये क़ुरआन उतारा।** जब अल्लाह ने तुमको बोलने की सलाहियत दी है तो तुम बात समझ भी सकते हो। इस लिये इस आला सलाहियत का हक़ यह है कि इसी सलाहियत को तुम्हारी तालीम का ज़रिया बना दिया जाए, न कि अज़ाब के डंडे को। लेकिन तुम्हारी बदबख़्ती यह है कि तुम इस नेमत से फ़ायदा उठाने के बजाये तबाही की निशानी मांग रहे हो।

सूरह ''वाक़्या'' में बताया कि तुम्हें लाज़िमन ऐसे जहां से साब्क़ा पेश आना है जिसमें इज़्ज़त व ज़िल्लत के पैमाने और मअयार उन पैमानों और मअयारों से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ होंगे जो इस जहां में आम तौर से इस्तेमाल होते हैं। **वहां इज्जत व सरफराज़ी ईमान और अमल-ए-सालेह की कमाई की होगी। ऐसे लोग मुकर्रेबीन और असहाबुल-मैमना (दाएं हाथ वालों) का दर्जा पाएंगे। जन्नत की तमाम कामयाबियां और ऐश व आराम उन्हीं के हिस्से में आयेंगे। रहे वे जो इस दुनिया के ऐश और मजों में मग्न हैं वे असहाबुश-शिमाल होंगे। उनको दोजख़ में अबदी अज़ाब से साब्क़ा पेश आएगा।**

अल्लाह ने कई सवालात करके ग़ौर करने की दावत दी है। कभी तुमने ग़ौर किया है कि यह नुतफ़ह जो तुम डालते हो इस तख़लीक़ (बच्चा) को तुम बनाते हो या हम बनाने वाले हैं। हम ने तुम्हारे दर्मियान मौज रखा है और हम इस बात से कमज़ोर नहीं हैं कि तुम्हारी शक्लें बदल दें और किसी और शक्ल में पैदा कर दें। जिसको तुम नहीं जानते। अपनी पहली पैदाइश को तो तुम जानते ही हो फिर क्यों सबक़ नही लेते कभी तुमने सोचा यह बीज जो तुम बोते हो उससे खेतियां तुम उगाते हो या हम उगाते हैं हम चाहें तो इन खेतियों को भूसा बना कर रख दें। और तुम बातें बनाते रह जाओ कि हमे नुक़सान हो गया। हमारे नसीब फूटे हैं कभी तुमने सोचा जो पानी तुम पीते हो उसे तुमने बादल से बरसाया है या उसके बरसाने वाले हम हैं। हम चाहें तो उसे खारा पानी बना दें फिर क्यों तुम शुक्रगुज़ारी नहीं करते। कभी तुमने ख़्याल किया जो आग तुम जलाते हो उसका दरख़्त (या ईंधन) तुमने पैदा किया या उसके पैदा करने वाले हम हैं। हमने इसको क़ाबिले इबरत् बनाया। हाजतमन्दों की ज़रूरत का सामान बनाया। पस ऐ नबी (स0) रब अज़ीम की तस्बीह करते रहिये।

ख़ात्मे पर कुरैश को मुतनब्बह किया कि कुरआन अल्लाह का बाइज़्ज़त कलाम है जो शयातीन की मुदाख़िलत से बिल्कुल महफ़ूज़ है। इसको सिर्फ़ पाकीज़ा ही हाथ लगाते है। तो क्या तुम लोग इस कलाम से मुंह फेर रहे हो जो हक़ीक़ी हिदायत है।

यह रब्बुल आलमीन का नाज़िल करदह है फिर क्या इस कलाम के साथ तुम बे तवज्जिही करते हो। तुमने सबको झुठलाने का मशग़लह अपना रखा है अगर तुम किसी के महकूम नहीं हो और अपने ख़्याल में सच्चे हो तो बताओ जब मरने वाले की जान हलक़ में अटकी है और तुम टकटकी बांधे देखते रहते हो उस वक़्त तुम्हारी निस्बत हम उससे ज्यादा क़रीब होते हैं। मगर तुमको नज़र नहीं आते तो उस वक़्त उसकी निकलती हुई जान को वापिस क्यों नहीं ले आते। मरने वाला अगर नेक है तो वह राहत उम्दह रिज़्क़ और नेअमत भरी जन्नत में होगा। अगर झुठलाने वाला गुमराह है तो उसके लिये खौलता पानी है उसे जहन्नुम में डाल दिया जायेगा। यह बात होकर रहेगी। पस ऐ नबी (स0)! अपने रब की तस्बीह कीजिये।

सूरह ''अलहदीद'' में मुसलमानों को ख़िताब करके उन को साबिक़ूनल अव्वलून की सफ में अपनी जगह बनाने पर उभारा है। यानी वह जो हक पहुंचते ही सबसे आगे बढ़कर उसे क़ुबूल करते हैं। और उस का तरीका यह बताया है कि जिस जमाने में हक मगलूब है और उसके गालिब आने का दूर-दूर पता नहीं, उसी जमाने में अपनी जान और माल इसके लिये खपा दो। ऐसे लोगों का मर्तबना उनसे कहीं ऊंचा होगा जो हक को गालिब आता देखकर उसके लिए खर्च करेंगे यां जाने सुपुर्द करेंगे। अगरचे अल्लाह का वायदा दोनों

से अच्छा है, मगर अल्लाह का कुर्ब हासिल करने के लिये दोनों में बड़ा फर्क है।

तमाम मुसलमानों को ख़िताब करके कहा ...... अगर दुनिया की मुहब्बत में फंस कर तुमने आख़िरत की अबदी बादशाही हासिल करने का हौसला खो दिया तो यहूद की तरह तुम्हारे दिल भी सख़्त हो जाऐंगे। और तुम्हारा अंजाम भी वही होगा जो उनका हुआ। कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ हसनह दे ओर अल्लाह उसको कई गुना करके उसे लोटा दे। कयामत के दिन मोमिनीन के आगे पीछे नूर दौड़ रहा होगा। उन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दी जायेगी। यह बड़ी कामयाबी है। मुनाफ़िक़ीन अंधेरे में कहेंगे कि हमे भी थोड़ी सी रौशनी दे दो। जवाब मिलेगा पीछे हट जाओ। उनके दरमियान दीवार हाएल होगी। एक तरफ़ रहमत दूसरी तरफ़ अज़ाब होगा। वह मोमिनों को पुकार कर कहेंगे हम तो दुनिया में तुम्हारे साथ थे वह कहेंगे मगर तुम्हें शक था। झूठी तवक़्क़ोआत में पड़े रहे। धोखे बाज़ ने तुम्हे धोके में रखा। आज तुम से और काफ़िरों से कोई फ़िदया न लिया जायेगा। तुम्हारा ठिकाना जहन्नुम है। क्या ईमान लाने वालों के लिये अभी वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से पिघल जायें। और हक़ के आगे झुक जायें। मुसलमानों को उनकी तरफ़ नहीं होना चाहिये जिन्हें किताब दी गयी फिर एक लम्बी मुद्दत उन पर गुज़र गयी तो उनके दिल सख़्त हो गये। और आज उनमें अकसर फ़ासिक़ हो गये। अफ़सोस कि मुसलमान आज उन्हीं के नक़्शे क़दम पर चल रहे है। उन लोगों के ख़्याल की तरदीद की जो मज़हब के रहबानी तसव्वुर के तहत जिहाद और उसके लिये ख़र्च करने को दुनियादारी समझते थे और मुसलमानों को जिहाद के शौक़ पर लानतान करते थे। फ़रमाया ..... बेशक हमने अपने रसूलों को वाज़ेह दलाइल व हिदायात के साथ भेजा। उन के साथ किताब और शरीअत उतारी ताकि लोग इन्साफ पर काइम हो सकें। और लोहा भी उतारा जिसमें बड़ी कुव्वत भी है और लोगों के लिये दूसरे बहुत से फ़ायदे भी हैं और उससे अल्लाह ने यह भी चाहा है कि वह उन लोगों को नुमायां कर दे जो अल्लाह और उसके रसूलों की मदद करते हैं यानी लोहे की ताक़त से उनके दीन को क़ाइम करते हैं हालाकि अल्लाह और रसूल ग़ैब में हैं। बेशक अल्लाह बड़ा ही जोर-आवर और गालिब है।

हज़रत ईसा (अ.) और उनकी उम्मत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया ईसा बिन मरियम (अ.) और उन लोगों के दिलों में, जिन्होंने अल्लाह की पैरवी की, राफ़्त और रहमत रख़ी और रहबानियत उन्होंने ख़ुद ईजाद कर ली। हमने तो उन पर सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशनूदी की तलब फर्ज की थी। तो उन्होंने उसके हुदूद, जैसा कि मल्हूज़ रखने चाहिये थे, नहीं रखे।

- ❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।
- ❖ अल्लाह तआला हम सबको कुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।
- ❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



चौबीसवीं तरावीह

सूरह ''मुजादिला'' में एक खानदान को पेश आने वाली मुश्किल का हल बताते हुए सबक़ दिया गया कि अगर किसी को इस्लाम के किसी हुक्म के सबब जिंदगी में कोई मुश्किल पेश आये तो इसको निहायत खुसूस के साथ अल्लाह और उसके रसूल (स0) के सामने अर्ज करें, उम्मीद है कि उसकी मुश्किल हल होने की राह निकल आएगी। नबी (स0) के बाद यही काम उन खुदातरस उलेमा व फुक़हा के ज़रिये पूरा हो सकता हैं जो अवाम की मुश्किलात को समझने और हल करने की सलाहियत भी रखते हों। वह अमली मिसाल यह है कि एक ख़ातून के शौहर ने एक दफ़ा गुस्से में यह कह दिया कि अगर मैं तुम्हें हाथ लगाऊं तो ऐसा है जैसे मैंने अपनी मां को हाथ लगाया। अरबों में इन अल्फ़ाज़ से तलाक़ हो जाती थी और मियां बीवी में लाज़िमन जुदाई हो जाती थी। चुनांचे ख़ातून बहुत परेशान हुई कि अधेड़ उम्र में शौहर और बच्चों से जुदा होकर कहां जाएंगी। उन्होंने सारा मामला हुज़ूर (स.) से आकर बयान कर दिया और बड़ी आजिज़ी से दरख्वास्त की कि इसका कोई हल निकालें। मगर इस वक़्त तक ''वही'' से ऐसी बात के बारे में कोई फ़ैसला नहीं आया था। इसलिये आप (स.) ख़ामोश रहे। ख़ातून बार बार तवज्जह दिलाती रहीं। आख़िर में वही नाज़िल हुई कि अल्लाह ने उस औरत की बात सुन ली जो तुमसे झगड़ती थी। तुम में जो लोग अपनी बीवीयों को मां कह बैठें तो इस कहने से वे मायें नही बन जातीं। अलबत्ता इस तरह के लोग एक नागवार और झूठी बात कहते हैं। अब अगर वे पलटना चाहें तो उन्हें हाथ लगने से पहले कफ़्फ़ारे के तौर पर एक गुलाम आज़ाद करना होगा। अगर गुलाम मयस्सर न हो तो लगातार दो माह के रोज़े रखें। और इसकी ताक़त न रखते हों तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाएं। इसके बाद चन्द ज़रूरी मजलिसी आदाब की तल्क़ीन की गई है। फ़रमाया आप को ख़बर नहीं है कि ज़मीन आसमान की हर चीज़ का अल्लाह को इल्म है। जहां तीन आदमी गुफ़्तगू करते हैं चौथी ज़ात अल्लाह की होती है। जब पांच होते हैं छठी अल्लाह की ज़ात होती है। खुफ़्या बात करने वाले इससे कम हो या ज़्यादा वह जहां होते हैं अल्लाह उनके साथ होता है। फ़िर क़यामत के रोज़ अल्लाह उनको बता देगा कि उन्होंने क्या कुछ किया। अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है जैसा कि रसूल और उस ख़ातून के दरमियान गुफ़्तगू हुई अल्लाह ने सुन लिया और उसके मुताबिक़ एहकामात नाज़िल फ़रमायें। अलबत्ता सरगोशी से मना किया गया।

ख़ास तौर पर यह कि गुनाह, ज़ुल्म व ज़्यादती और रसूल (स.) की नाफ़रमानी के लिए सरगोशियां अल्लाह के नज़दीक कुफ्र की बात है। ऐसी बातें या हरकतें भी नहीं करना चाहिए जिनसे लोगों के लिये तंगदिली का इज़्हार हो या तकलीफ़ पहुंचे।

सूरह हश्र में मुनाफ़िक़ीन से ख़िताब है। उन्हें आगाह किया गया कि वे उन वाक़यात से सबक़ लें। जिन दुश्मनों को वो नाक़ाबिले-तस्वीर समझते हैं यानी मदीने के यहूद। अल्लाह ने किस तरह वे हालात पैदा कर दिये कि वे खुद ही अपने घर उजाड़ कर मदीना छोड़ने पर मजबूर हो गये, और कोई भी उनके काम न आ सका। मुसलमानों से कहा गया ऐ ईमान वालों अल्लाह से डरो और हर शख्स को फ़िकरमंद रहना चाहिये कि उसने कल के लियें क्या सामान तैयार किया है तुम हर हाल में उससे डरते रहो। अल्लाह तआला तुम्हारे सारे आमाल से बाख़बर है। इन लोगों की तरह न हो जाओ जो अल्लाह को भूल गये जो अल्लाह ने उन्हें खुद अपना नफ़्स भुला दिया। यही लोग नाफ़रमान हैं। जन्नती और दोज़खी बराबर नहीं हो सकते। जन्नत में जाने वाले ही अस्ल में कामियाब हैं।

साथ ही उनके दिलों में नर्मी पैदा करने के लिए बताया कि यह कुरआन वह चीज है कि अगर पहाड पर नाजिल किया जाता तो वह भी अल्लाह की ख़शीयत से टुकडे-टुकडे हो जाता। अगर यह भी तुम्हारे दिलों पर असर नहीं कर रहा तो गोया तुम्हारे दिल पत्थर से भी ज्यादा सख़्त हो चुके हैं। और तुम ख़ुद को संगदिली की सजा के मुस्तहक बना रहे हो। सूरह ''मुमतहिना'' में उन मुसलमानों से ख़िताब है जिन्होंने हिजरत के तक़ाज़ों को अच्छी तरह नहीं समझा। उन्हें बताया कि हिजरत इस तरह होती है जिस तरह हज़रत इब्राहीम (अ.) ने हिजरत की थी कि पिछले माहौल से बिल्कुल ताल्लुकात तोड कर सिर्फ अल्लाह और उसके रसूल से वाबस्ता हो जाओ। फरमाया मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ। तुम उनसे मुहब्बत की पेंगे बढाते हो जो चाहते हैं कि तुम उल्टे काफिर हो जाओ। तुम्हारे रिश्तेनाते और आल-औलाद कयामत के दिन कुछ भी तुम्हारे काम नहीं आएंगे। फिर यह वजाहत की कि काफिरों से दिली दोस्ती रखने को मना किया जा रहा है। ख़ुसूसन उनसे, जिन्होंने तुमसे दीन के मामले में जंग भी की हो। अल्लाह तुम्हें उन लोगों के साथ हुस्ने-सुलूक और इंसाफ करने से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में जंग भी की हो। अल्लाह तुम्हें उन लोगों के साथ हुस्ने-सुलूक और इंसाफ करने से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में न तुमसे जंग की है और न तुम को घरों से निकाला है। इसी तरह यह भी ऐलान किया गया कि मुसलमान औरत का काफ़िर शौहर से और मुसलमान मर्द का मुशरिक औरत से निकाह हलाल नहीं। फिर हिदायत की, जो औरतें इस्लाम कुबूल करें उनसे आप (स.) बड़ी-बड़ी बुराईयों से बचने का अहद लें, जो उस वक़्त अरब मुआशरे में फैली हुई थी।

सूरह ''सफ़'' में उन मुसलमानों से ख़िताब है जो पैग़म्बर (स0) से इताअत-गुज़ारी का अहद कर चुकने के बाद अल्लाह की राह में जिहाद से जी चुरा रहे थे। उनको मुतनब्बह किया गया कि अगर इताअत का अहद यानी कलमा पढ़ने के बाद भी तुम्हारी यही रविश रही तो तुम्हारा भी वही हाल होगा जो यहूदियों का हुआ कि अल्लाह ने उनके दिल ढेढ़े कर दिये और वे हमेशा के लिये हिदायत से महरूम कर दिये गये। जब हज़रत ईसा (अ.) उन के पास आए तो मौजिज़ात के बावजूद उनका इंकार कर दिया और अब इस्लाम की मुख़ालिफत कर रहे हैं हालांकि इस्लाम उनकी और मुशरिकीन की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इस सरज़मीन में सारे दीनों पर ग़ालिब आकर रहेगा। कमज़ोर मुसलमानों को सही राह इख़्तियार करने की तल्क़ीन की कि दीन की राह में जान व माल से जिहाद करो। काम्याबी की यही राह है। आखिरत में भी, और दुनिया में भी, अल्लाह की मदद और उसकी फतह से हमकिनार होगे जो अब आने ही वाली है और जो तुम्हारी तमन्ना भी है। जिस तरह हज़रत ईसा (अ.) के हवारियों के साथ हुआ था कि उन्हें अल्लाह के रास्ते में पुकारा गया तो उन्होंने लब्बैक कहा।

सूरह ''जुम्आ'' में हज़रत इब्राहीम की दुआ की तरफ़ इशारा करके मुशरिकीने-मक्का पर वाज़ेह किया कि नबी (स.) की बोअसत की शक्ल में अल्लाह ने जिस अज़ीम नेमत से उनको नवाज़ा है, उसकी क़द्र करें और यहूदियों की साज़िशों का शिकार हो कर अपने को फ़ज़्ले अज़ीम से महरूम न करें।

जिन यहूदियों को तौरेत दी गयी मगर उन्होने उसका बार न उठाया उनकी मिसाल उस गधे की सी है जिस पर किताबें लदी हुई हों। इस से भी ज़्यादा बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयात को भुलादिया। अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता। इस आयत में बहुत बड़ी बात कही गयी कि अगर तौरेत दी गयी और वह उस पर अम्ल न कर सके या पढ़ना नहीं चाहते उनकी मिसाल गधे पर लदी किताबें जैसी है कि गधा नावाकिफ़ होता है कि उसकी पीठ पर क्या लादा हुआ है। अगर यह मिसाल यहूदियों पर सादिक़ आती है तो क्या उन मुसलमानों पर सादिक़ नहीं आती जो कुर्आन नहीं पढ़ते न उस पर अमल करते हैं। आख़िर उन पर भी जो यह किताब उतारी गयी और वह गधे की तरह उसे उठाये हुए हैं मगर उन्हें नहीं मालूम कि इस किताब के अन्दर क्या है। जुमअ की अज़ान होते ही नमाज़ की तरफ़ दौड़ने का हुक्म दिया गया है और ख़रीद फ़रोख़्त ममनूअ क़रार दी गयी और इस अम्ल को तिजारत

से बेहतर क़रार दिया गया अलबत्ता नमाज़ के बाद फिर कारोबार करने की इजाज़त है। अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करने का हुक्म है साथ ही कसरत के साथ ख़ुदा की याद भी होनी चाहिये। फिर मुसलमानों के एक गिरोह को मलामत की कि उस ने दुनियावी कारोबार की लालच में जुमा और रसूल (स.) का एहतराम मलहूज़ नहीं रखा। इसका मतलब है कि उन्होंने इस सौदे की हक़ीक़त को नहीं समझा जो उन्होंने कलमा पढ़ कर अपने रब से किया है।

सूरह मुनाफ़िक़ून के पहले रूकूअ में मुनाफ़िक़ीन का किरदार बताया है कि क़समें खा खा कर अपना ईमान जताते हैं **हालांकि ईमान कसमें खाकर जताने की नहीं बल्क अमल कर के दिखाने की चीज है। मगर उनका यह हाल है। वह दुनिया की मुहब्बत में गिरफ्तार हैं। दूसरे रूकूअ में मुसलमानों को मुतनब्बह फ़रमाया गया है कि वो माल व औलाद की मुहब्बत में फंस कर अल्लाह की याद से गाफिल न हों। अगर आज उन्होंने अलाह की राह में माल खर्च न किये तो मरते वक्त पछताने के सिवा कुछ हाथ न आएगा। गोया मुनाफिकत का जो असल सबब है बचने की ताकीद की है।**

सूरह तग़ाबुन में बताया गया है कि **इस दुनिया की जिंदगी नहीं बल्कि असल जिंदगी तो आखिरत की जिंदगी है।** जो लाज़िमन आकर रहेगी। और यह फ़ैसला वहीं होना है कि इस दुनिया में आकर कौन हारा और कौन जीता। पस **जो आखिरत में काम्याबी हासिल करने का हौसला रखता हो उस पर वाजिब है कि वह अल्लाह और उसके रसूल (स.) की खुशनूदी हासिल करने की राह में हर कुर्बानी के लिए तैयार रहे और किसी की मलामत व नसीहत की परवाह न करे।**

आज की तरावीह में आख़िरी सूरते तलाक़ और तहरीम हैं। दोनों में बताया गया है कि नफ़रत और मुहब्बत दोनों तरह के हालात में सही रवैया क्या है। चुनांचे सूरह तलाक़ में बताया है कि अगर बीवी से किसी वजह से इख़्तिलाफ़ और नफ़रत पैदा हो जाए तो उसके मामले में किस तरह अल्लाह की हुदूद की पाबंदी करनी चाहिए और सूरह तहरीम में यह वाज़ेह किया कि **मुहब्बत में किस तरह अपने आप को और बीवीयों को हुदूदे-इलाही का पाबंद रखने की कोशिश करनी चाहिए। मियां बीवी के रिश्ते पर ही तमाम मुआशरे की बुनियाद है।** और हर शख़्स को इससे साब्क़ा पेश आता है। लेकिन इस रिश्ते की नाज़ुक हदों का अव्वल तो सबको अहसास नहीं होता, और जिनको होता भी है वो भी नफ़रत या मुहब्बत की हलचल में उनको ठीक ठीक मलहूज़ नहीं रखते। **जुदाई में शरीअत के तमाम अहकाम पसे पुश्त डाल दिये जाते हैं। इसी तरह मुहब्बत की शिद्दत में खुदा के अहकाम को उस मुहब्बत पर कुर्बान कर दिया जाता है। यह दोनों बातें शरीअत से इनहिराफ की हैं, जिनका नतीजा आखिरत की तबाही है।**

चुनांचे सूरह तलाक़ में इस बात की वज़ाहत की गई कि अगर किसी को तलाक़ देने की नौबत आ जाए तो यह जायज़ नहीं है कि वह बीवी को तलाक़ के दो कलमें कहकर फ़ौरन घर से बाहर निकाल दे, बल्कि उसको अल्लाह के मुक़र्रर किये गये क़ायदों और ज़ाब्तों की पाबंदी करनी चाहिए। और यह पाबंदी हर ग़रीब और अमीर के लिए लाज़मी है। जो लोग ग़रीब होने के बावजूद इन अहकाम की पाबंदी करेंगे यानी इद्दत के ज़माने में उनका ख़र्चा उठाना, उसी मकान में रहने देना वग़ैरह, अल्लाह उनकी मुश्किल आसान कर देगा। और **जो माल की मोहब्बत में हुदूद को तोड़ेंगे वे अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेंगे बल्कि खुद ही गुनाहगार होंगे।**

फ़रमाया ऐ नबी (स0) जब आप या आपकी उम्मत औरतों को तलाक़ दे तो इद्दत शुरू करने के लियें सही वक़्त में तलाक़ दे और इददत शुमार करता रहे। इनको घरों से न निकाले। वह ख़ुद भी न निकले इल्ला यह कि वह किसी सरीह बुराई में मुबतिला हो। यह अल्लाह की हुदूद है जो इनको तोड़ेगा, वह ज़ालिम होगा। इद्दत पूरी हो जाये तो या तो उन्हें भले तरीके से अपने निकाह में रखे या भले तरीक़े से उनसे जुदा हो जाओ जो अल्लाह से डरेगा अल्लाह

उसके लियें कोई न कोई रास्ता निकालेगा उसे ऐसी जगह से रोज़ी देगा जहां से वह सोच भी नहीं सकता। जो अल्लाह पर भरोसा करे अल्लाह उसके लियें काफ़ी है। अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है। उसने हर चीज़ की एक तक़दीर मुक़र्रर कर रखी है। जिन औरतों का हैज़ आना बन्द हो जाए या उन्हें अभी हैज़ आया ही नहीं उनकी इददत तीन माह है और हामिला की इददत बच्चे की पैदाइश तक है जो अल्लाह से डरता है। अल्लाह उसके मामले को आसान फ़रमाता है। तुम जहां रहते हो औरतों को वहीं रखों उन्हें तंग करते हुए न सताओ। अगर हामिला हो तो पैदाइश तक उनपर ख़ुशी ख़ुशी ख़र्च करो। दूध पिलायें जो उन्हें उनका मआविज़ा दो। भले तरीक़े से सब तय करलो। ख़ुशहाल आदमी अपनी ख़ुशहाली के मुताबिक़ और ग़रीब से जो कुछ हो सके ख़र्च करे। अल्लाह उतनी ही तकलीफ़ देता है जितनी बन्दे की उसअत है। बईद नहीं कि तंगी के बाद फ़रागी अता फ़रमाये।

सूरह तरहीम में यह बताया है कि मुहब्बत के ग़लबे के बावजूद किस तरह अल्लाह के हुदूद की हिफ़ाज़त करनी चाहिए। चुनांचे नबी (स.) का एहतिसाब अल्लाह तआला ने ऐसे फ़ेल पर लिया जो अगरचे इसलिए ज़ाहिर हुआ था कि कमज़ोरों पर नर्मी और बीवियों से दिलदारी की जाये। लेकिन अल्लाह ने इस पर भी गिरफ़्त कर ली क्योंकि अल्लाह का रसूल तमाम उम्मत के लिए नमूना होता है। फ़रमाया ऐ नबी (स)! तुम अपनी बीवियों की दिलदारी में वह चीज़ क्यों अपने ऊपर हराम कर बैठे हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये जायज़ की है। इसी तरह जब नबी (स.) ने अपनी एक बीवी से एक राज़ की बात की और उन्होंने इसकी ख़बर दूसरी बीवी को कर दी तो अल्लाह ने उनकी इस हरकत से पैग़मबर (स.) को आगाह कर दिया और बीवियों को ख़िताब करके कहा कि अगर तुम दोनों अल्लाह से तौबा करो तो यही बात तुम्हारे शायाने शान है।

यहां गिरफ़्त इस बात पर की गई है कि **मुहब्बत के अंदर भी अल्लाह और रसूल (स.) की बताई हुई हुदूद का ख्याल रखना चाहिए। फिर आम मुसलमानों को खबरदार किया है कि तुम भी अपने आपको, अपने बाल बच्चों को दोजख की आग से बचाने की फिक्र करो।**

फिर अल्लाह ने तीन औरतों की मिसाल देकर समझाया है कि बुरे से बुरे माहौल में भी आदमी पर अपने ईमान की हिफ़ाज़त वाजिब है। इसके लिए अल्लाह ने फ़िरऔन की बीवी हज़रत आसिया (अ.), हज़रत मरियम (अ.) और हज़रत लूत (अ.) की बीवी की मिसालें दी हैं कि पहली दो औरतों ने अपने ईमान की हिफ़ाज़त की और अल्लाह के यहां बड़ा दर्जा पाया, तीसरी औरत ने ईमान के तक़ाज़े पूरे नहीं किये तो ख़ुदा के अज़ाब का निशाना बनी। हालांकि नबी की बीवी थी। साथ ही यह बात भी वाज़ेह कर दी कि **औरत भी अपनी पैदाइश के लिहाज से नेकी और बदी के जजबात और मौलानात रखती है। यह सही नहीं है कि बदी का सरचश्मा औरत को ही करार दिया जाए।**

- **आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।**
- **अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।**
- **अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।**

''आमीन''

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



पच्चीसवीं तरावीह

आज की तरावीह में उन्नीसवाँ पारा तबाराकल्लज़ी की तिलावत की गई। सबसे पहले सूरह "अलमुल्क" की इब्तिदा ही अल्लाह की अ़ज़मत के इज़्हार से की गयी है। बड़ी ही अज़ीम और बरकत वाली है वह जात जिसके क़ब्ज़े कु़दरत में इस कायनात की बादशाही है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। जिसने पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को ताके इम्तिहान ले कि तुममें से कौन सबसे अच्छा आमाल वाला बनता है। काफ़िरों पर अज़ाब की कैफ़ियत बयान करते हुए फ़रमाया जिन्होंने अपने रब का इन्कार किया उनके लियें जहन्नुम का अज़ाब है जो बुरा ठिकाना है। जब उसमें फेकें जायेंगे। दहाड़ने की आवाज़ सुनेंगे वह जोश खा रही होगी, शिददत ग़ज़ब से फटी जाती होगी हर बार जब कोई गरोह डाला जायेगा उससे दारोग़ा पूछेगा क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? वह कहेंगे आया था मगर हमने उसे झुठला दिया और कह दिया कि ख़ुदा नें कुछ नहीं अतारा तुम ही लोग भटके हुए हो, यह भी कहेंगे कि काश अगर हम सुनते समझते तो इस तरह जहन्नुमी न होते इस तरह वह अपने कु़सूर का एतराफ़ कर लेंगे। लानत है उनके लियें मग़फ़िरत और बड़ा अर्ज है। तुम चुपके से बात करो या बुलन्द आवाज़ से अल्लाह के लियें बराबर है वह तो दिलों के भेद तक जानता है क्या वही न जानेगा जिसने पैदा किया वह तो बहुत ही बारीक बीन और बाख़बर है। नाफ़रमानों को ललकारा है। क्या तुम बेख़ौफ़ हो गए हो कि अब तुम्हे ज़मीन में धंसाने और आसमान से पथराव करने वाला अज़ाब नहीं आ सकता? बताओ तुम्हारे पास वह कौन सा लशकर है, जो ख़ुदा-ए-रहमान के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद कर सके? बताओ वह कौन है जो तुम्हे रोज़ी दे सके अगर वो अपनी रोज़ी रोक ले? उनसे पूछो, अगर तुम्हारा यह पानी नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए साफ़ व शफ़फ़ाफ़ पानी निकाल कर लाए। कह दो **कि वह रहमान है, हम उस पर ईमान लाए हैं, और उसी पर हमने भरोसा किया है। तुम अनकरीब जान लोगे कि खुली हुई गुमराही में कौन है?**

सूर अल-कलम में नबी (स.) की दावत आप (स.) की लाई हुई किताब और आप (स.) के आला किरदार का मवाज़ना कुरैश के फ़ासिक़ लीडरों के किरदार से करके यह दिखाया है कि वह **वक्त दूर नहीं जब मुआफिक व मुखालिक दोनो पर वाजेह हो जाएगा कि किनकी बागडौर फितने में पडे हुए लीडरो के हाथ में है, जो उनको तबाही के रास्ते पर लिए जा रहे हैं और कौन लोग है जो हिदायत के रास्ते पर हैं, और वही फलाह पाने वाले बनेंगे।** नबी (स.) के मुताल्लिक़ गवाही दी कि आप (स.) एक आला किरदार पर हैं और कु़रैश का किरदार बताया कि झूठी क़समें खाने वाले, इशारेबाज़, नेकियों से रोकने वाले, हद से तजावुज़ करने वाले, लोगों का हक मारने वाले, संगदिल और शेखीबाज़। और यह सब इसलिए कि अल्लाह ने उन्हे माल और दौलत अता कर दी है। इस मौके पर एक बाग़वाले की मिसाल देकर समझाया है कि इस धोके मे न रहो कि अब तुम्हारे ऐष में कोई ख़लल डालने वाला नहीं। जिस खुदा ने तुम्हे यह सब कुछ बख़्शा है उसके इख़्तियार में है कि वह उसको छीन भी ले। आख़िरत में अंजाम की तरफ़ तवज्जेह दिलाते हुए सवाल किया गया कि **आखिर उन्होने खुदा को इतना बेइंसाफ कैसे समझ रखा है कि वो नेकों और बदों में कोई फर्क नहीं करेगा।** साथ ही हज़ूर (स.) को तसल्ली दी गई कि **आज जो बातें ये लोग बना रहे हैं उनका गम न कीजिए। सब्र के साथ अपने रब का इंतिज़ार कीजिए।** और इस तरह की जल्दी दिखाने से बचिए जिससे हज़रत यूनुस मुब्तिला हो गए थे, और उन्हें आज़माइश से गुज़रना पड़ा था।

सूरह "अलहाक्क़ा" में रसूलों की दावत को झुठलाने वालों का अंजाम बतलाते हुए क़यामत की होलनकी

की तस्वीर खींचीं गई है। फ़रमाया याद रखो जब सूर में एक ही फूंक मारी जायेगी और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में पाश-पाश कर दिया जाएगा तो उस दिन तुम्हारी पेशी होगी। और तुम्कारी कोई बात भी ढँकी छुपी नही रहेगी। पस पेशी के दिन जिसे दाऐं हाथ में आमलनामा मिलेगा उसकी खुशी का कोई ठिकाना न होगा और जिसे बायें हाथ में आमालनामा दिया जायेगा वह हसरत से मौत मांग रहा होगा। आवाज़ आएगी, इसको पकडो, इसको गर्दन में तोक डालों, इसको जहन्नुम में झोंक दो और एक जंजीरमें जिसकी लम्बाई 60 हाथ है जकड़ दो। यह है वह जो खुदाए अजीम पर ईमान नही रखता था और न मिस्कीनों को खाना खिलाने पर उभारता था।

सूरह "अल-मआरिज" में नबी (स.) को सब्र की तलक़ीन की गई है कि ये बहुत ही तंग नज़र वाले लोग है। इस वक्त खुदा ने इनको जो ढील दी है तो इनके पांव ज़मीन पर नहीं पड़ रहे हैं। जरा पकड में आ जाऐं तो सारी शेखी भूल जाऐंगे और तमन्ना करेंगे कि काश उस दिन के आज़ाब से छूटने के लिए अपने बेटों, बीवी, अपने भाई और अपने कुनबे को जो इसका पुश्तेबान रहा है और तमाम अहले ज़मीन को बदले में देकर अपनी जान छुडा लें।

हरगिज़ नहीं वह तो भड़कती हुई आग होगी जो गोश्त पोश्त जला कर रख देगी जिसने हक़ से मुह मोड़ा और पीठ फेरी उसे अपनी तरफ़ बुलायेगी इंसान फ़ितरतन जल्द बाज़ है जब उस पर मुसीबतें आती हैं तो घबरा जाता है और जब उसे खुशहाली नसीब होती है तो बुख्ल करने लगता है। मगर इस बुराई से वह लोग बचें रहते हैं जो नमाज़ की पाबन्दी करते हैं जिनको मालों में मुस्तहकीन का मुकर्ररह हक़ है। क़यामत को बरहक़ मानते हैं। रब के अज़ाब से थर्राते हैं क्योंकि खुदा का अज़ाब बेखौफ़ी की चीज़ नहीं वह अपनी शर्मगाहो की हिफ़ाज़त करते हैं सिवाय अपनी बीवियों और बांदियों कि कि उनपर कोई मलामल नहीं जो बीवियों और बांदियों से तजाउज़ करे वह जालिम है। नेक लोग अपनी अमानतों और वादों का लिहाज़ रखते हैं अपनी गवाहियों में सच्चाई पर क़ायम रहते हैं। अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं। ऐसे ही लोग इज़्ज़त के साथ जन्नत के बाग़ो में रहेंगे।

सूरह नूह में नबी (स.) को पिछली सूरह में तलक़ीन किए हुए सब्र के लिए नमूने के तौर पर हज़रत नूह (अ.) का क़िस्सा बयान किया है कि उन्होने कितने तवील तरीन अर्से तक यानी 950 बरस सब्र के साथ अपनी क़ौम को दावत दी और इतने तवील सब्र और इन्तिज़ार के बाद उनकी क़ौम को आज़ाब में मुब्तिला किया गया। इस तरह दाइयान-ए-हक़ को बताया गया कि अपनी आखिरी मंजिल के लिए सब्र और इन्तिज़ार के कितने मरहलों से गुजरना पडता है। साथ ही यह बात भी कि अल्लाह तआला जल्दबाज़ो की जल्दबाज़ी और तान व तश्नीअ के बावजूद उनको अगरचे एक तवील मुद्दत तक ढील भी देता है, मगर बिल आख़िर एक रोज़ पकड़ लेता है और जब वह पकडता है तो कोई उनको छुडानें वाला नहीं होता है।

एक अहम बात हज़रत नूह (अ.) की दावत में यह भी बयान हुई कि हकीकी मअनों में खुदा की हिदायत की पाबंदी दुनिया में भी खुशहाली और बरकतों का जरिया है लेकिन उनकी कौम की बहुत बड़ी तादाद ने उनकी नाफ़रमानी की, मज़ाक़ उड़ाया और उन लोगों की पेरवीं की जिनके माल और औलाद ने इनकी गुमराही में इज़ाफ़ा किया। इस एक दिन वो अने गुनाहों की सज़ा में पानी के तूफ़ान में ग़र्क़ कर दिये गये और उसी रास्ते से आग में दाख़िल कर दिये गये। उस वक़्त कोई काम न आया, जिन्हे वो खुदा के सिवा पुकारते थे।

सूरह जिन में कुरैश को ग़ैरत दिलाई गई कि जिन्नात जो कुरान के बराहेरास्त मुख़ातिब नहीं है, वो जब रास्ता चलते इसको सुन लेते है तो तड़प उठते हैं, और अपनी क़ौम के अन्दर उसे फ़ैलाने के लिए खड़े होते हैं और एक तुम हो कि ख़ास तुम्हारे लिए उसे उतारा जा रहा है और उसकी बरकतों से नवाज़ने के लिए खुदा के रसूल (स.) दिन रात एक किये दे रहे हैं, मगर तुम्हारी बदबख़्ती कि उसकी तरफ़ ध्यान देना तो दरकिनार, तुम उल्टे उसके दुश्मन बन गए हो।

सूरह "अलमुज़म्मिल" और "अलमुदस्सिर" दोनो सूरतो की इब्तिदा "ऐ चादर में लिपटने वाले" और चादर लपेटे रखने वाले" से की गई है इससे यह ज़ाहिर करना मक़सूद है कि अंबियाएकिराम अलेहिमुस्सलाम मख्लूके खुदा के लिए बेइंतहा रहीम व शफीक और अपने रब की डाली हुई जिम्मेदारियों के मामले में बहुत हस्सास वाके

होते हैं और अपनी जान तोड कोशिशों के बावजूद जब देखते है कि लोगों की दुश्मनी उनसे बढती जारही है तो उन्हे यह ख्याल होता है कि कहीं उन्ही के काम में तो कोई कोताही नहीं। और यह फिक्र उनको गमजदा कर देती है और वह चादर में सिमट कर अपने माहौल से किनारा कशी इख्तियार करते हुऐ अंदर ही अंदर कोताहियों की तलाश शुरू कर देते हैं। मुजिम्मल में चादर ओढने वाले के प्यारे लफ्ज से नबी (स.) को खिताब करते हुए इस हालत से निकलने का रास्ता बताया गया है कि रात के वक्त उसके हुजूर कयाम का ऐहतिमाम करो। उसमें ठहर-ठहर कर कुरान पढो। इससे दिल को ठहराव मिलेगा और दिमाग को बसीरत हासिल होगी और आगे की जिम्मेदारियों का बोझ उठाने की अहलियत पैदा होगी।

सूरह अलमुदस्सिर में भी लक़ब से पुकार कर हिदायत की कि इस चादर उतार फेकों और लोगों को डराने और खबरदार करने के लिए कमरबस्ता हो जाओ। उठ खडे हो, अपने रब की बडाई बयान करो। अनपे दामन को हर किस्म के गुबार से पाक रखो और अपनी जद्दोजहद जारी रखो। मुखालिफतों के बावजूद हक पर डटे रहो। अल्लाह तआला आपकी कोशिशों का नतीजा जरूर जाहिर फरमायेगा।

सूरह अल क़ियामत में अल्लाह तआला ने क़यामत के सबूत में इंसानी ज़मीर ''नफ़से लव्वमा'' को पेश किया है और वाज़ेह किया है कि इंसान खुद एक छोटे पैमाने पर कायनात ही हैसियत रखता है। इस छोटी सी दुनिया में अपने किये पर मलामत करने वाली हिस का होना इंस बात की दलील है कि कायनात में भी ''नफसे लव्वामा'' है और वही कयामत है, जो तमाम लोगों की पूरी जिन्दगी के आमाल का मुहासबा करेगी।

सूरह अद्दहर में क़ायनात की यह दलील दी गयी है कि अल्लाह तआला ने इंसान के अंदर सुनने और देखने और उनके ज़रिये नेक व बद में तमीज करमे की जो सलाहियत रखी है। उसका तकाजा है कि ऐसा दिन आऐ जिसमें लोगों को उनके किये का बदला मिल सके, वरना फिर नेकी बदी का खडाग खडा करने की क्या जरूरत थी?

फ़रमाया क़सम है क़यामत की, क़सम है मलामत करने वाले ज़मीर की क्या इन्सान समझता है कि हम उसकी हड्डियों को जमा न कर सकेंगे क्यों नहीं हम तो उसकी उंगिलियों की पोर पोर तक ठीक बना देने पर क़ादिर है। असलमें में इन्सान चाहता है कि वह बदआमालियां करता रहे, पूछता है क़यामत कब आयेगी। जब आखें पथरा जायेंगी, चांद बेनूर हो जायेगा, सूरज चांद मिलाकर एक कर दिये जायेंगे, उस वक़्त इन्सान ही कहेगा कि कहीं भाग कर चला जाये। हरगिज़ नहीं वहां कोई जायेपनाह न होगी। उस दिन बस तेरे रब के सामने ही ठहरना होगा। इन्सान को उसका सब अगला पिछला किया कराया बता दिया जायेगा बल्कि इन्सान अपने आप को ख़ूब जानता है चाहे वह कितने ही बहाने कर ले। ऐ नबी (स0) क़ुर्आन पढ़ने में जल्दी न करो उसको याद करा देना और पढ़वाना हमारी ज़िम्मेदारी है हमारे फ़रिश्ते जब पढ़े तब पीछे आप पढ़े फिर उसे समझा देना भी हमारी ज़िम्मेदारी है। तुम लोग दुनिया को पसन्द करते हो आख़िरत को भूले बैठे हो उस रोज़ कुछ चेहरे तरो ताज़ा होंगे। अपने रब को देख रहे होंगे। कुछ चहरे उदास होंगे। समझ रहे होंगे कि उनके साथ बुरा बर्ताव किया जायेगा। हरगिज़ नहीं जब जान हलक़ में अटक जाये और कहा जाये कोई है इलाज करने वाला और समझ में आ जाये कि अब दुनिया से रूख़्सत होना है। पिंडली खींच जाये वह दिन होगा तेरे रब की तरफ़ रवानगी का। मगर उस ने उन बातों को न सच माना न नमाज़ पढ़ी बल्कि झुठलाया और चला गया फिर अकड़ता हुआ घर वालों की तरफ़ चल दिया। यही रवैया तेरे लायक़ है। हाँ यही रविश तुझे ज़ेब देती है। क्या इन्सान समझता है कि वह यूं ही छोड़ दिया जायेगा। क्या वह मनी का नुतफ़ह न था। फिर लोथड़ा बना। अल्लाह ने उसका जिस्म बनाया। आज़ा दुरूस्त किये फिर उससे नर व मादह दो किस्में बनाई। क्या वह ज़ात इस बात पर क़ादिर नहीं है कि मरने वालों को फिर से ज़िन्दह कर दे।

सूरह अलमुरसलात में तेज़ व तुंद चलने वाली हवाओ की गवाही पेश की है कि यह हर वक़्त क़यामत आने की याददहानी कराती रहती हैं। जब अल्लाह उनकी लगाम छोड़ देता है तो यह अंधाधुंध गुबार उड़ाती, बादलों को फै़ला देती हैं। कहीं पानी बरसा कर तबाही बरपा कर देती है और कहीं उन्हे उड़ा लेजाकर लागों को तबाही से बचा लेती

हैं। इस तरह कही नाफ़रमानी के आज़ाब में मुब्तिला किए जाने की याददहानी कराती हैं और कहीं अल्लाह की शुक्रगुज़ारी, उसकी रूबुबियत और आदमी की जवाबदेही की ज़िम्मेदारी को याद दिलाती है। बस इसी तरह एक दिन आसमान फट पड़ेगा, पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जायेगें, वही फैसले का दिन होगा। झुठलाने वालों को कहा जाएगा- चलो इस धुऐं की तरफ़ जो तीन तरफ़ों मे छुपा हुआ है और बस वही तरफ़ बची हुई होगी जिस तरफ़ मुजरिमों को रगेद कर लाया जा रहा होगा। यह है फैसले का दिन। हमने तुमको भी और तुमसे पहलों को भी आज जमा कर लिया है। तो है आज तुम्हारे पास बचाव के लिए कोई दांव? यहां जब उनसे कहा जाता है कि अपने रब के आगे झुको, तो नहीं झुकते। अब इसके बाद यह किस चीज़ पर ईमान लाऐंगे?

- ❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।
- ❖ **अल्लाह तआला हम सबको कुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।**
- ❖ **अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।**

"आमीन"

आज की तरावीह के चन्द अहम नुकात



छब्बीसवीं तरावीह

आज तीसवें पारे अम्मा यतसाअलून के बीस रूकूअ की तिलावत की गई। सूरह नबा में ज़मीन और उस पर पहाड़, खुद इंसानों में औरत और मर्द के जोड़े, मेहनत मशक्क़त की थकान दूर करने के लिए नींद, आराम के लिए रात और कमाने के लिए दिन, पर सात मोहकम आसमान और उसमें ऐक रौशन चिराग़, पानी से भरे बादल और उनके ज़रिये ग़ल्ला, नबातात और घने बाग़ की पैदाइश, क्या सब चीज़े गवाही नहीं दे रहीं हैं कि इस मजमूआ, दुनिया का भी एक जोड़ा होना चाहिए? यानी आख़िरत और वही है फ़ैसले का दिन। उस दिन सब कुछ उथल पुथल हो जाऐगा और जहन्नुम अचानक सरकशों का ठिकाना बनकर सामने आ जाएगी और जिन्होंने रोजे जजा से डरते हुए जिंदगी गुजारी होगी वो बेअंदाजा ऐश में होंगे। और अपनी नेकियों का पूरा-पूरा बदला पाऐंगे। उस रोज़ अल्लाह के यहां कोई उसकी इजाज़त के बगैर किसी के लिए सिफ़ारिश की हिम्मत नहीं करेगा और जो इजाज़त के बाद बोलेगा तो बिलकुल सच-सच बोलेगा। सरकश उस रोज बदबख्ती से सर पीट लेंगे। काश हम मिट्टी ही में रहे होते। हमारा वजूद ही नहीं होता। हम तुम्हें उस अज़ाब से डराते हैं जो क़रीब आ लगा है जिस रोज़ आदमी वह सब कुछ देख लेगा जो उसने दुनिया में किया है और इन्कार करने वाला (काफ़िर) कहेगा कि काश मैं मरकर मिट्टी में मिला रहता और कभी न उठाया जाता। ''सूरह नाज़िआत'' सरकश सिर्फ़ उस वक़्त तक खुदा के अज़ाब से महफ़ूज़ हैं जब कि उसने मोहलत दे रखी है। वह जब हुक्म देगा, यही हवाएं और बादल जो ज़िंदगी का लाज़मा हैं क़हरे इलाही बन जाऐंगी। जब वह हंगामा अज़ीम होगा इन्सान अपने करतूतों को याद करेगा। जहन्नुम खोल कर रख दी जायेगी जिसने खुदा के मुकाबले सरकशी की दुनियावी ज़िन्दगी को तरजीह दी दोज़ख ही उसका ठिकाना होगी। जिसको डर है कि खुदा के सामने खड़े होना है, नफ़्स को बुराइयों से रोके रखा, जन्नत उसका ठिकाना होगी। सूरह अबस जो चाहते हैं कि जब वो मिलने आऐं तो आप ग़रीबों को अपने पास से हटा दिया करें तो आप उनकी नाज़रबरदारी में ऐसा न करें। शौक से आने वालों की तरबियत आपका फर्ज है। यह तो एक नसीहत है जिसका जो जी चाहे कुबूल कर ले इन्सान कायनात पर गौर करे अपनी पैदाइश को सोचे, अपनी खूराब पर ग़ौर करे जब कयामत आयेगी आदमी अपने भाई, मां-बाप, बीवी, बेटियों और बेटों से भागेगा। हर आदमी अपने में मस्त रहेगा। कुछ चहरे चमक रहे होंगे। हश्शाश बश्शाश खुश व खुर्रम होंगे। कुछ चेहरों पर ख़ाक उड़ रही होगी, कलौनस छाई हुई होगी। यही काफ़िर व फ़ाजिर लोग होंगे।

''सूरह तकबीर'' जब सूरज लपेट दिया जायेगा, जब तारे झड़ जायेंगे, जब पहाड़ हिलने लगेंगे जब गाभिन ऊँटनी से लोग ग़ाफ़िल हो जायेंगे, जब वहशी जानवर जमा किये जायेंगे, जब समन्दर में आग लगा दी जायेगी, जब रूह जिसमों से जोड़ी जायेंगी, जब ज़िन्दह दरगोर बच्ची से पूछा जायेगा, तुझे किस जुर्म में ज़िन्दह दफ़न किया गया। जब आमाल नामें खोले जायेंगे, जब आसमान से पर्दा हटा दिया जायेगा, जब जहन्नुम दहकाई जायेगी, जब जन्नत क़रीब लाई जायेगी, सूरह तकवीर हर तरफ़ नफ़सा-नफ़सी होगी, किसी को किसी की ख़बर नहीं होगी। इंसान और वहशी, दोस्त और दुश्मन, होल के मारे इकट्ठे हो जाऐंगे और जब जहन्नुम दहकाई जाएगी। और जन्नत क़रीब ले आई जाएगी उस वक़्त हर शख़्स जान ज़ाऐगा कि वह क्या लेकर आया है।

सूरह ''इनफ़ितार''- ऐसा दिन आना लाज़िमी है जब ये सारा निज़ाम होलनाकी के साथ खत्म हो जाएगा। यहां मुजरिमों को मोहलत से धोखा नहीं खाना चाहिए। यह तो परवरदिगार की करीमी के सबब है ताकि वह अपनी

इसलाह कर लें। खुदा ने तुम पर मुअज्जम लिखने वाले निगरां मुकर्रर कर रखे हैं, जो तुम्हारे हर फेल को जानते हैं। बेशक नेकोकार ऐश में होंगे और नाबकार दोज़ख में। उस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के लिए कुछ न कर सकेगी। यह फैसला उस दिन बिल्कुल अल्लाह के इख्तियार में होगा।

सूरह ''मुतफ़्फ़िफ़ीन'' - इसमें उस आम बेईमानी पर गिरफ़्त की गयी है जो दूसरों से लेना हो तो पूरा-पूरा नापतौल कर लें और देना हो तो डंडी मार दें। यह बद्दयानती आख़िरत के मुहासबे से ग़फ़लत का नतीजा है। डंडीमारों के आमाल पहले ही मुजरिमों के रजिस्टर में दर्ज हो रहे हैं। और उन्हें सख़्त अज़ाब का सामना करना होगा। और नेक लोगों के आमाल बुलंद पाया लोगों के रजिस्टर में दर्ज हो रहे हैं। आज कुफ़्फ़ार अपने हाल मे मग्न हैं और अहले-ईमान का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। उस दिन अहले-ईमान अपनी काम्याबी और ऐश पर खुश होंगे और कुफ्फार का मजाक उडाऐंगे।

सूरह ''इनशिक़ाक़'' - ज़मीन व आसमान एक दिन पाश-पाश हो जाऐंगे, इसलिए कि अल्लाह उन्हें ऐसा हुक्म देगा। वह बे चूं-व-चरा उसकी तामील करेंगे। उस रोज़ जो कुछ ज़मीन के पेट में है, यानी मुर्दा इंसानों के अजज़ाये-बद और उनके आमाल की शहादतें, सबको निकाल कर वह बाहर फेंक देगी। और उस रोज़ जज़ा व सज़ा का होना इतना ही यक़ीनी है जितना दिन के बाद रात का आना। सूरह अलबुरूज - काफ़िर अहले-ईमान पर जो जुल्म व सितम तोड़ रहे थे उस पर उन्हें तसल्ली देते हुए असहाबुल-उखदूद का किस्सा सुनाया। जिन्होंने ईमान लाने वालों को आग से भरे हुए गढों में फेंक-फेंक कर जला दिया था। मगर ईमान लाने वालों ने आग में जलना गवारा किया मगर ईमान से फिरना गवारा न किया। इस तरह अब अहले-ईमान को चाहिए कि वे भी सख्तियों को गवारा कर लें। मगर ईमान की राह न छोडें। अल्लाह देख रहा है, वह जालिमों को सजा देकर रहेगा। जालिमों से कहा- वो अपनी ताकत के घमंड में न रहें, फिरऔन और समूद जैसे ताकत वालों के अंजाम से सबक लें।

सूरह ''अत्तारिक'' - कायनात के सय्यारों का निज़ाम गवाह है कि यहां कोई चीज़ ऐसी नहीं जो एक हस्ती की निगहबानी के बग़ैर अपनी जगह क़ायम रह सके। खुद इंसान पानी की एक बूंद से पैदा किया गया। पस जो खुदा उसे वजूद में लाया, वह यक़ीनन उसे दुबारा भी पैदा कर सकता है ताकि उसके उन तमाम राज़ों की जांच पड़ताल की जाए, उन पर दुनिया में परदा पड़ा रह गया था। उस वक़्त अपने आमाल की सज़ा भुगतने से कोई उसे न बचा सकेगा।

ख़ात्मे पर बताया कि कुफ्फार समझ रहे हैं कि अपनी चालों से कुरआन वालों को जिक दे देंगे मगर उन्हें खबर नहीं है कि अल्लाह भी तदबीर में लगा हुआ है और उसकी तदबीर के आगे कुफ्फार की चालें धारी की धरी रह जाऐंगी। सूरह अल-आला-अल्लाह के हर काम में एक तरतीब और तदरीज है, जो तमामतर उसकी हिकमत पर मबनी है। जिस तरह ज़मीन की नबातात आहिस्ता-आहिस्ता गुन्जान व सरसब्ज़ होती है उसी तरह अल्लाह की यह नेमत कुरआन भी आप (स.) पर दर्जा-ब-दर्जा नाज़िल होंगी, याद कराई जाएगी और आप उसके एक-एक हर्फ़ को भी नहीं भूलेंगे। इसी तरह पेश आने वाली मुश्किलात के अंदर से भी वही आहिस्ता-आहिस्ता रास्ता निकलेगा। बताया कि तबलीग़ का तरीक़ा यह है कि जो नसीहत सुनने और कुबूल करने को तैयार हो उसे नसीहत की जाए और जो इसके लिए तैयार न हो उसके पीछे न पड़ा जाए। लोगों को सारी फिक्र बस इसी दुनिया के आराम की है। हालांकि अस्ल फिक्र आखिरत के अंजाम की होनी चाहिए क्योंकि दुनिया तो फानी है और आखिरत बाकी है, जिसकी नेमतें दुनियां से कहीं ज्यादा बेहतर और बढकर हैं।

सूरह ''ग़ाशिया'' - तुम्हें उस वक़्त भी कुछ ख़बर है जब सारे आलम पर छा जाने वाली एक आफ़त नाज़िल

होगी? उस वक़्त इंसानों का एक गिरोह जहन्नुम में जाएगा और दूसरा बुलंद जन्नतों में। यह मुनकरीन अपनी आंखों के सामने की चीज़ों पर भी ग़ौर नहीं करते। ये ऊंट जिनके बग़ैर सहरा में उनकी जिंदगी मुमकिन नहीं, ये आसमान, पहाड़ और ज़मीन क्या किसी बनाने वाले के बग़ैर बन गए? और जो ख़ुदा उन्हें बनाने पर क़ादिर है वह क़यामत लाने, इंसानों को दोबारा पैदा करने और जज़ा व सज़ा देने पर क्यों क़ादिर नहीं? ऐ नबी! (स.) ये लोग नहीं मानते तो न मानें। आप उन पर दारोगा बनाकर नहीं भेजे गये कि जबरदस्ती मनवाकर छोडें। आपका काम तो नसीहत करना है सो आप नसीहत किए जाइये। आख़िरकार उन्हें आना तो हमारे ही पास है। उस वक़्त हम उनसे पूरा-पूरा हिसाब ले लेंगे।

सूरह ''अलफ़ज्र''- सुबह से रात तक सारा निज़ाम गवाह है कि ख़ुदा का कोई काम बेमक़सद और मसलिहत से ख़ाली नहीं तो फिर इंसान की पैदाइश बेमक़सद कैसे? इंसानी तारीख़ में आद, समूद और फ़िरऔन जो इंजीनियरिंग के कमालात और फ़ौज के मालिक थे, जब उन्होने सरकशी की और हद से ज़्यादा फ़साद फैलाया तो अल्लाह ने अज़ाब का कौड़ा उनपर बरसा दिया। हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा रब सरकशों की घात लगाये हुए है। यहां हर एक का इम्तिहान हो रहा है। जो न ख़ुद यतीमों और बेकसों का ख़्याल करता है और न दूसरों को उनकी ज़रूरतें पूरी करने की (फ़लाही निज़ाम को क़ायम करने) पर उकसाता है वह एक दिन अज़ाब का शिकार होगा इन्सान का हाल यह है कि जब उसका ख़ुदा उसे आज़माता है उसे इज्ज़त व न्यामत देता है तो कहता है मेरे रब ने मुझे इज्ज़तदार बनाया है और जब वह उसको आज़माइश में डालता है और उसकी रोज़ी तंग कर देता है तो वह कहता है मेरे रब ने मुझे जलील किया हरगिज़ नहीं। वाकिया यह है कि तुम यतीम की इज्ज़त नहीं करते, मिस्कीन को ख़ाना खिलाने पर उकसाते नहीं, विरासत का माल अकेले खा जाते हो, पैसे की मोहब्बत में गिरफ़्तार हो। जब ज़मीन कूट कूट कर रेज़ह रेज़ह कर दी जायेगी तुम्हारा रब जलवा फ़रमा होगा, फ़रिश्ते सफ़ बांधे खड़े होंगे। जहन्नुम सामने लाई जायेगी उस दिन इन्सान को समझ आयेगी मगर अब समझना किस काम का? कहेगा काश मैंने अपनी ज़िंदगी में कुछ नेक काम कर लिया होता फिर उस दिन अल्लाह जो अज़ाब देगा वैसा अज़ाब देने वाला कोई नहीं और अल्लाह जैसा बांधेगा वैसा बांधने वाला कोई नहीं।

और जो फरमाबरदारों में शामिल रहा, उसे कहा जाऐगा- चल अपने रब की तरफ़ ''अब तू उससे राज़ी और वह तुझसे राज़ी'' शामिल हो जा मेरे ख़ास बंदो में और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में!

सूरह ''अलबलद-अल्लाह'' ने मक्का की ज़मीन को ख़ुशहाली और अम्न का गहवारा हज़रत इब्राहीम (अ) की दुआ और बेतुल्लाह की बरकत की वजह से बनाया उसी ने आंख, जबान और होंठ दिये। भलाई-बुराई की तमीज़ दी। अल्लाह के अहसान का तक़ाज़ा था कि उसके शुक्रगुज़ार और उसके बंदो के हमदर्द और मददगार बनते। मगर ये नाशुक्रे और माल व नफ़्स के पुजारी बनकर दोज़ख़ के मुस्तहक़ बन रहे हैं और जो ईमान लाने वाले एक दूसरे को सब्र और हमदर्दी की नसीहत करने की सआदत पा रहें हैं, वही बरकत और ख़ुशकिस्मती के मुस्तहक़ हैं।

सूरह ''अश्शम्स''- जिस तरह सूरज और चांद दिन और रात एक दूसरे के पलट हैं इसी तरह नेकी और बदी के नताइज भी मुख़्तलिफ़ हैं और अल्लाह ने इंसान को दोनों में तमीज़ की समझ दी है। अब अगर वह अपने नफ्स को बुरे रूजहानात से पाक करेगा तो कामयाब होगा। और अगर अच्छाई के जज्बे को दबाकर बुराई को उभरने देगा, तो नामुराद होगा, जैसे कौमे-समूद हुई।

सूरह ''अल्लैल''- जो आदमी अल्लाह के रास्ते में माल ख़र्च करे, ख़ुदा तरसी इख़्तियार करे और भलाई को भलाई माने, उसके लिए नेकी करना आसान। और जो तग़ाफ़ुल करे, ख़ुदा की रज़ा और नाराज़ी की फ़िक्र से बेपरवाह

हो जाऐ और भली बात को झुठलाए, उसके लिए बुरी राह आसान कर दी जाती है। आख़िरत में ऐसे शख़्स के लिए भड़कती हुई आग तैयार है और ख़ुदा की रज़ा के लिए काम करने वाले से वह राज़ी होगा।

सूरह ''अज़्ज़ुहा और अलम नशरह'' यह दोनों सूरतें मक्के के इब्तिदाई दौर में नाज़िल हुई। रवायात में है कि कुछ मुद्दत तक वही सिलसिला बन्द रहा जिससे आंहुज़ूर (स0) को यह अन्देशह लाहक़ हुआ कि कहीं मेरा रब मुझसे नाराज़ तो नहीं हुआ। इस पर आपको तसल्ली दी गयी कि वही का सिलसिला किसी नाराज़गी की बिना पर बन्द नहीं हुआ बल्कि यह वक़्फ़ा मज़ीद वही के बरदाश्त करने के लिये दिया गया जैसे दिन के बाद रात का सिलसिला ताज़ह दम होने के लिये दिया जाता है। अभी आप (स0) वही के नुज़ूल की शिद्दत के आदी न हुए थे, फ़रमाया क़सम है रोज़े रौशन की और रात् की जब कि वह सुकून के साथ तारी हो जाये। ऐ नबी (स0) अल्लाह नें आपको न छोड़ा न नाराज़ हुआ। आपकी ज़िन्दगी का बाद का दौर पहले दौर से बेहतर होगा और अनक़रीब आपका रब आपको इतना कुछ देगा कि आप खुश हो जायेंगे। क्या आप यतीम न थे। अल्लाह ने बन्दोबस्त किया आप को नावाक़िफ़ राह पाया तो हिदायत बख़्शी। आपको नादार पाया तो मालदार कर दिया। लिहाज़ा इस नेअमत का हक़ यह है कि यतीम के साथ सख़्ती न कीजिये। साएल को न झिड़किये अपने रब की नेअमतों का इज़हार कीजिये।

सूरह अद्दुहा और अलम नशरह- नबी (स.) को तसल्ली दी गयी कि अल्लाह आपको ज़रूर काम्याब करेगा और राह में जो रूकावटें इस वक्त नजर आ रही हैं वो सब दूर हो जाऐंगी। आने वाला दौर इससे बेहतर होगा और अल्लाह ऐसी कामयाबियां अता फ़रमाएगा कि आपका दिल ख़ुश हो जाऐगा और आपका नाम क़यामत तक पूरी दुनिया में गूंजता रहेगा। बस तरीका यही है कि दावत की मशक्कत के साथ अपने रब से लौ लगाऐं।

सूरह ''अत्तीन'' - पिछले बड़े रसूलों की दावत के मराकिज़ अंजीर का पहाड़ यानी जूदी जहां से नूह (अ) की दावत फैली, जैतून का पहाड़ यानी ईसा (अ0) की दावत का मरकज़ बैतुल मुकद्दस, कोहे तूर मूसा (अ.) पर वही का मुकाम और अम्नवाला शहर मक्का इब्राहीम (अ0) और मोहम्मद (स0) दोनों पर वही के मुकाम की क़सम खाकर कहा - हमने इंसान को बेहतरीन साख़्त पर पैदा किया है। मगर जो इसकी क़द्र नहीं करता वह लानत के गढ़े में फैंक दिया जाता है। इन दीनी मरकज़ों की तीरीख़ के साबित क़ौमों के अंजाम और नेकोकारों की इज्ज़त अफ़ज़ाई के वाक्यात के बाद भी अब क्या दलील है तुम्हारे पास जज़ा व सज़ा को झुठलाने की? क्या अल्लाह सब हाकिमों से बढ़कर हाकिम नहीं?

❖ आज की तरावीह का बयान ख़त्म हुआ।

❖ अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन पढ़ने, उसको समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

❖ अल्लाह इसकी बरकतों से हमारे मुल्क और शहर के हालात तब्दील फ़रमाये।

''आमीन''

खुलासा दुआये ख़त्मे कुरआन

खुदा का लाख लाख शुक्र और अहसान है कि उस ने बख़ैर व ख़ूबी ख़त्मे कुरआन की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

ऐ अल्लाह! हमें कुरआन फ़हमी नसीब फ़रमा। उसके अहकामात पर अमल करने और ममनूआत से बचने की तौफ़ीक़ बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। इसे क़ब्र में वहशत दूर करने का ज़रिया बना। कुरआन के सदक़े हम पर रहम फ़रमा। इसे हमारी ज़िन्दगी के लिये मिशअले राह बना। हमें कुरआन की हिदायत से सरफ़राज़ फ़रमा। कुरआन से जो भूल गये हों, उसे याद दिला दे। जिन उलूम से नावाक़िफ़ हों उन से वाक़िफ़ कर दे। शब व रोज़ इसकी तिलावत की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। कुरआन को हमारे लिये आख़िरत में हुज्जत बना। ऐ अल्लाह! तेरे कलाम का एक एक हर्फ़ सच्चा है और नबी सल्ल0 ने सच्चाई के साथ इसे हम तक पहुंचाया है। ऐ अल्लाह कुरआन के हर हर्फ़ में हमें हलावत नसीब फ़रमा और हर चीज़ के बदले जज़ा अता फ़रमा। हमें उल्फ़त व बरकत से नवाज़। तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। सवाब से हमारा दामन भर दे। जमाल व हिकमत, ज़कावत व रहमत, सफ़ाई व सआदत नसीब फ़रमा। हम में जो बीमार हों, उन्हें शिफ़ाए कामिला नसीब फ़रमा। सच्चाई की राह पर चलने वाला बना। दुनिया व आख़िरत की कामियाबी अता फ़रमा। अपने सिवा किसी का मोहताज़ न बना। नूरे हिदायत से सरफ़राज़ फ़रमा। हिदायत व यक़ीन से नवाज़ दे। कुरआन को हमारे लिये नफ़ा बख़्श बना। उसकी आयात व ज़िक्र से हमारे दर्जात बुलन्द फ़रमा। हमारी तिलावत को कुबूल फ़रमा। उसमें जो ग़लतियां हुई हों उसको माफ़ फ़रमा। सही कुरआन पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। इसे समझने वाला और इस पर अमल करने वाला बना। हमारी नस्लों को भी कुरआन समझने वाला, उस पर अमल करने वाला और कुरआन का अलमबरदार बना। कुरआन के नूर से हमारे कुलूब रौशन फ़रमा। हमारे अख़्लाक़ को कुरआन से मुज़य्यन फ़रमा। कुरआन के ज़रिये हमें जहन्नम से निजात दे, जन्नत में दाख़िल फ़रमा। कुरआन को दुनिया में साथी, क़ब्र में मूनिस व ग़मख़्वार, पुलसरात पर नूर, जन्नत में रफ़ीक़, दोज़ख़ से आड़ बना। ऐ अल्लाह! हम में जो क़र्ज़दार हों उन्हें क़र्ज़ से निजात दे। ऐ अल्लाह हमारी मईशत दुरूस्त फ़रमा। हर तरह की भलाई से नवाज़ दे। हर तरह की बुराइयों से महफ़ूज़ फ़रमा। हमें इस्लाम पर साबित क़दम रख। जो गुज़र चुके हैं उनकी मग़फ़िरत फ़रमा। उन्हें करवट करवट जन्नत नसीब फ़रमा। उनके दर्जात बलन्द फ़रमा। जिन लोगों ने दुआ की दरख़्वास्त की हो उनके नेक मक़ासिद को पूरा फ़रमा। उनकी परेशानियों को दूर फ़रमा। उनके मसाइल हल फ़रमा। हमें दुनिया व आख़िरत की भलाई नसीब फ़रमा। हमारी तरफ़ से लाखों करोड़ों दुरूदो सलाम भेज अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 पर और आप की पाक आल व औलाद पर।

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नका अन्तस्समीउल अलीम व तुब अलैना इन्नका अन्तत तव्वाबुर रहीम व सल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरे ख़ल्क़िही मुहम्मदिवं व आलिही व अस्हाबिही अजमईन। आमीन! बिरहमतिका या अरहमर्रराहिमीन।